जन जन की बात जन जन तक

साप्ताहिक

जन जन विचार

ৰাইজৰ কথা ৰাইজৰ মাজলৈ

সাপ্তাহিক

জন জন বিচাৰ

WEEKLY TRILINGUAL NEWSPAPER

Language : Hindi, Assamese & English

WEBSITE : www.janjanvichar.in

VOICE OF ALL, FOR ALL

WEEKLY

JAN JAN VICHAR

RNI Regd No. ASMUL/25/A2367::Guwahati, Friday, 4 September 2026 :: Year-1 Vol-34 Issue-13 ::शुक्रवार । 4 सितंबर 2026 । शक संवत 1948 । भाद्रपद । कृष्ण । अष्टमी । :: पृष्ठ-20 । मूल्य - 15 रुपए

जन चिंतन

धनेश्वर चौधरी

सनातन पर ही सवाल क्यों ?

भारत में असहमति का अधिकार लोकतंत्र की खूबसूरती है, लेकिन सवाल यह है कि जब भी सामाजिक सुधार, महिला अधिकार या आधुनिकता की चर्चा होती है, तो निशाना बार-बार सनातन परंपरा और उसके प्रतीकों पर ही क्यों साधा जाता है?

हाल में राहुल गांधी ने पुणे में महिलाओं की स्वतंत्रता और पितृसत्ता पर बोलते हुए मनुस्मृति को कठघरे में खड़ा किया। उनके बयान के बाद राजनीतिक और धार्मिक बहस तेज हो गई। इसके कुछ ही दिनों बाद स्वरा भास्कर के जौहर संबंधी पुराने विचार फिर चर्चा में आ गए। उन्होंने 'पद्मावत' में जौहर के चित्रण को महिलाओं के सम्मान और जीवन के प्रश्न से जोड़कर आलोचना **शेष पृष्ठ 2 पर**

'धरतीपकड़' का निधन

भागलपुर। हर चुनाव लड़ने वाले 'धरतीपकड़' के नाम से मशहूर नागरमल बाजोरिया अब इस दुनिया में नहीं रहे। गुरुवार को पटना में उनका निधन हो गया। वर्षों तक लोकतंत्र के हर चुनाव में अपनी मौजूदगी दर्ज कराने वाले बाजोरिया ने जीवन के अंतिम दौर में खुद को पूरी तरह समाज सेवा के लिए समर्पित कर दिया था।

भागलपुर के नागरमल बाजोरिया उर्फ 'धरती पकड़' की सबसे अनोखी पहचान उनका गधा चुनाव चिन्ह था। वह जब भी चुनाव लड़ते, प्रचार **शेष पृष्ठ 6 पर**

जनगणना में मातृभाषा असमिया लिखवाने की मुख्यमंत्री की अपील

ऊहापोह में असम के हिंदीभाषी

जन जन विचार

...✍ गुवाहाटी

असम में जनगणना के दौरान गैर-असमिया मूल के लोगों से 'असमिया' को मातृभाषा के रूप में दर्ज करने की मुख्यमंत्री डॉ. हिमंत विश्व शर्मा की अपील ने राज्य की पुरानी भाषाई बहस को एक बार फिर सामने ला दिया है। मुख्यमंत्री की चिंता का आधार भी आंकड़ों में दिखाई देता है-1971 में असम की 59.53 प्रतिशत आबादी ने असमिया को अपनी मातृभाषा बताया था, जबकि 2011 में यह आंकड़ा घटकर 48.38 प्रतिशत रह गया।

लेकिन इस बहस का दूसरा पहलू भी उतना ही महत्वपूर्ण है।

क्या असमिया भाषा की सुरक्षा के लिए हिंदीभाषियों को अपनी मातृभाषा की पहचान बदलनी चाहिए?

यहीं से असमिया और हिंदीभाषी समाज के बीच बहस शुरू होती है।

असमिया समाज की चिंता को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता

असमिया समाज के लिए यह केवल भाषा का सवाल नहीं है। यह राज्य की सांस्कृतिक पहचान, सामाजिक प्रभाव और आने वाली पीढ़ियों के भविष्य से जुड़ा प्रश्न है।

1971 से 2011 के बीच असमिया को मातृभाषा बताने वालों का अनुपात लगभग 11 प्रतिशत अंक घटा। इसी अवधि में हिंदीभाषियों का हिस्सा 5.89 प्रतिशत से बढ़कर 6.73 प्रतिशत और बंगालीभाषियों का हिस्सा 27.53 प्रतिशत से 28.91 प्रतिशत हुआ।

इसलिए असमिया समाज का यह डर समझा जा सकता है कि यदि जनसंख्या में असमिया मातृभाषियों का अनुपात लगातार घटता गया तो भविष्य में असमिया भाषा की सामाजिक और राजनीतिक स्थिति पर असर पड़ सकता है।

लेकिन हिंदीभाषी समाज का सवाल भी सीधा है

असम में दशकों से रह रहा कोई परिवार यदि अपने घर में हिंदी बोलता है, अपनी अगली पीढ़ी को हिंदी सिखाता है और हिंदी को अपनी मातृभाषा मानता है, तो क्या केवल असम में स्थायी रूप से बस जाने के कारण उसकी मातृभाषा बदल जाती है?

घर की भाषा और अपनाई गई संपर्क भाषा में अंतर है

किसी हिंदीभाषी का असमिया सीखना असम के प्रति सम्मान हो सकता है। असमिया बोलना सामाजिक जुड़ाव हो सकता है। लेकिन मातृभाषा की पहचान व्यक्तिगत और पारिवारिक वास्तविकता से भी जुड़ी होती है।

यही वह बिंदु है जहां बहस को भावनाओं से निकालकर तथ्यों और अधिकारों की जमीन पर लाने की जरूरत है।

मुख्यमंत्री की अपील में एक महत्वपूर्ण संतुलन भी है

मुख्यमंत्री ने बराक घाटी के बंगालीभाषी लोगों तथा बोडो, राभा, तिवा, मिसिंग आदि जनजातीय समुदायों को अपनी मातृभाषा दर्ज करने के लिए स्वतंत्रता की बात कही है और कहा है कि सभी स्थानीय भाषाओं का संरक्षण जरूरी है।

तो फिर स्वाभाविक सवाल है-

क्या यही सिद्धांत हिंदीभाषी समाज पर भी समान रूप से लागू नहीं होना चाहिए?

यदि असम की भाषाई विविधता को बचाना है तो हिंदीभाषी, बांग्लाभाषी, बोडो, मिसिंग, राभा और अन्य भाषाई समुदायों की पहचान को सम्मान देना भी उसी नीति का हिस्सा होना चाहिए।

असमिया सीखिए लेकिन हिंदी मत छोड़िए

हिंदीभाषी समाज को भी इस बहस से भागना नहीं चाहिए। असम में रहना केवल आर्थिक संबंध नहीं है। यहां की भाषा, संस्कृति और समाज को समझना और सम्मान देना जरूरी है। इसलिए हिंदीभाषियों को असमिया सीखने और उसे अपनाने में संकोच नहीं होना चाहिए। लेकिन इसका अर्थ यह भी नहीं कि असमिया सीखने के लिए हिंदी छोड़नी पड़े।

एक व्यक्ति की दो, तीन या चार भाषाएं हो सकती हैं। वह असमिया में पड़ोसी से बात कर सकता है, हिंदी में घर चला सकता है और अंग्रेजी में अपना काम कर सकता है। बहुभाषी होना कमजोरी नहीं, **शेष पृष्ठ 3 पर**

हिंदीभाषी संगठन खामोश

असम में जनगणना के दौरान हिंदीभाषी लोगों से अपनी मातृभाषा के रूप में 'असमिया' दर्ज करने की मुख्यमंत्री डॉ. हिमंत विश्व शर्मा की अपील ने भाषा और पहचान को लेकर बहस छेड़ दी है। लेकिन इस पूरे मामले का सबसे चौंकाने वाला पहलू मुख्यमंत्री की अपील से ज्यादा हिंदीभाषी संगठनों की खामोशी है।

असम में हिंदीभाषी समाज की संख्या कम नहीं है। व्यापार, परिवहन, उद्योग, श्रम, शिक्षा और सेवा क्षेत्र में इसकी महत्वपूर्ण भूमिका रही है। दशकों से असम को अपना घर मानकर रहने वाले इस समाज के बीच कई सामाजिक और सांस्कृतिक संगठन भी सक्रिय हैं। लेकिन जब जनगणना में मातृभाषा की पहचान का सवाल सामने आया, तो इनमें से अधिकांश संगठनों की आवाज अचानक गायब दिखाई दे रही है।

जब पहचान का सवाल हो, तब चुप्पी क्यों?

मुख्यमंत्री की अपील पर राजनीतिक और सामाजिक बहस स्वाभाविक है। कोई इसे असमिया भाषा को मजबूत करने की पहल मान सकता है, तो कोई अपनी मातृभाषा दर्ज करने के अधिकार के संदर्भ में सवाल उठा सकता है। **शेष पृष्ठ 3 पर**

शिलांग में हिंदी कार्यशाला आयोजित, हिंदी के प्रयोग पर बल

जन जन विचार
...✍ शिलांग

राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार तथा कार्यालयीन कामकाज में हिंदी के अधिकाधिक प्रयोग को बढ़ावा देने के उद्देश्य से कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा), मेघालय, शिलांग में 24 अगस्त को हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला कार्यालय के द्वितीय तल स्थित बैठक कक्ष में आयोजित हुई, जिसमें 14 अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने भाग लिया।

कार्यशाला के उद्घाटन अवसर पर उप महालेखाकार (एएमजी-III) बिनोद भुजेल ने प्रतिभागियों का स्वागत किया। उन्होंने कहा कि राजभाषा हिंदी केवल एक भाषा नहीं, बल्कि प्रशासनिक कार्यों को सरल, प्रभावी और जनसुलभ बनाने का महत्वपूर्ण माध्यम है। उन्होंने अधिकारियों एवं कर्मचारियों से कार्यालयीन पत्राचार, टिप्पण, प्रारूपण सहित दैनिक कार्यों में सरल एवं स्पष्ट हिंदी के प्रयोग का आह्वान किया।

कार्यशाला में स्रोत वक्ता एवं विशेषज्ञ श्रीमती असितकमल, वरिष्ठ हिंदी अधिकारी एवं सदस्य सचिव, नराकास-1, असम राइफल्स महानिदेशालय, लाइटकोर, शिलांग ने दो सत्रों में प्रशिक्षण दिया। प्रथम सत्र में 'कार्यालयीन पत्राचार' तथा द्वितीय सत्र में 'टिप्पण एवं प्रारूपण' विषय पर व्याख्यान दिया गया। प्रतिभागियों से संबंधित विषयों का व्यावहारिक अभ्यास भी कराया गया।

समापन अवसर पर सहायक निदेशक (राजभाषा) मुहम्मद जियाऊल हक ने कहा कि राजभाषा विभाग के निर्देशानुसार कार्यालय में प्रत्येक तिमाही हिंदी कार्यशाला आयोजित की जाती है। इसका उद्देश्य कार्यालयीन कार्यों में हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देने के साथ-साथ हिंदी में काम करने की झिझक को दूर करना है। उन्होंने कहा कि ऐसी कार्यशालाओं के माध्यम से मसौदा लेखन, पत्र-लेखन और टिप्पण लेखन सहित कार्यालयीन कार्यों में व्यवहारिक हिंदी के प्रयोग को प्रभावी बनाया जा सकता है।

धन दिशा

80 सी : जब बटाना हो टैक्स

हर साल मार्च आते-आते एक भागदौड़ शुरू होती है, 'जल्दी से कोई निवेश करो, टैक्स बचाना है।' आनन-फानन में कोई पॉलिसी ले ली, कोई एफडी करा ली। यह आदत न सिर्फ गलत निर्णय करवाती है, बल्कि अच्छे विकल्पों से भी दूर रखती है।

आयकर की धारा 80सी के तहत आप हर साल 1.5 लाख रुपए तक के निवेश पर टैक्स छूट ले सकते हैं। लेकिन इस छूट का फायदा सही जगह निवेश करने पर ही मिलता है।

80सी के बेहतरीन विकल्प कौन से हैं? **पीपीएफ (पब्लिक प्रोविडेंट फंड) :** 15 साल की अवधि, 7.1 प्रतिशत ब्याज, पूरी तरह टैक्स-फ्री।

ईएलएसएस म्यूचुअल फंड : सिर्फ 3 साल का लॉक-इन, बाजार से जुड़ा होने के कारण अच्छा रिटर्न मिल सकता है।

सुकन्या समृद्धि योजना : बेटी है तो यह सबसे बेहतर, 8.2 प्रतिशत ब्याज।

ईपीएफ : नौकरीपेशा लोगों का पैसा अपने आप इसमें जाता है।

क्या न करें? सिर्फ टैक्स बचाने के लिए ऐसी बीमा पॉलिसी न लें जो 'इंश्योरेंस + इन्वेस्टमेंट' का दावा करती हैं। ये न सही बीमा देती हैं, न अच्छा रिटर्न। हमने पिछले हफ्तों में यह बात विस्तार से की है।

मार्च में नहीं, अप्रैल में शुरू करें: नए वित्तीय वर्ष की शुरुआत में यानी अप्रैल में ही अपने 80सी के निवेश की योजना बना लें। एसआईपी के जरिए हर महीने थोड़ा-थोड़ा निवेश करें। इससे मार्च में भागदौड़ नहीं होगी और पैसा भी पूरे साल काम करेगा।

टैक्स बचाना जरूरी है, लेकिन यह एक अच्छे निवेश का साइड इफेक्ट होना चाहिए, मुख्य मकसद नहीं। जब निवेश सही हो, टैक्स की बचत अपने आप होती है।

अगले हफ्ते : साइबर फ्रॉड से पैसों की सुरक्षा - डिजिटल जमाने में सबसे ज़रूरी सावधानी।

इस कॉलम के लिए आपका कोई सवाल है? हमें भेजिए

-कोमल जैन

पर्सनल फाइनेंस एक्सपर्ट, संस्थापक, वेल्थप्लायर्स- मो. 9004510577

राशिफल

4 से 10 सितंबर, 2026।। विक्रम संवत 2083-**मास :** भाद्रपद, **पक्ष :** कृष्ण, **तिथि :**अष्टमी

मेष : यह सप्ताह आत्मविश्वास और नई ऊर्जा लेकर आएगा। कार्यक्षेत्र में आपकी मेहनत का अच्छा परिणाम मिल सकता है। रुके हुए काम आगे बढ़ेंगे। आर्थिक स्थिति बेहतर रहेगी, लेकिन अनावश्यक खर्च से बचें। प्रेम संबंधों में मधुरता बनी रहेगी। स्वास्थ्य सामान्य रहेगा।

वृषभ : धैर्य और समझदारी से काम लेने का सप्ताह है। नौकरी में नई जिम्मेदारी मिल सकती है। व्यापार में लाभ के अवसर बनेंगे। किसी पुराने निवेश से फायदा मिलने की संभावना है। परिवार के साथ समय बिताने से मन प्रसन्न रहेगा। प्रेम संबंधों में विश्वास बढ़ेगा। यात्रा का योग बन सकता है।

मिथुन : इस सप्ताह आपकी रचनात्मकता और संवाद-कौशल आपको आगे ले जाएगा। कार्यस्थल पर वरिष्ठ अधिकारियों का सहयोग मिलेगा। विद्यार्थियों के लिए समय अनुकूल है। आर्थिक मामलों में जल्दबाजी न करें। किसी मित्र से महत्वपूर्ण सहायता मिल सकती है।

कर्क : सप्ताह की शुरुआत थोड़ी व्यस्त रहेगी, लेकिन बाद में परिस्थितियां आपके पक्ष में आती जाएंगी। नौकरी में प्रगति के अवसर मिल सकते हैं। व्यापारियों को नए संपर्कों से लाभ होगा। पारिवारिक जीवन सुखद रहेगा। भावनाओं में बहकर कोई बड़ा निर्णय लेने से बचें।

सिंह : आपके लिए यह सप्ताह उपलब्धियों से भरा रह सकता है। नेतृत्व क्षमता के कारण कार्यक्षेत्र में आपकी प्रतिष्ठा बढ़ेगी। आर्थिक लाभ के नए रास्ते खुल सकते हैं। सामाजिक क्षेत्र में सम्मान मिलेगा। किसी महत्वपूर्ण व्यक्ति से मुलाकात भविष्य में लाभदायक साबित हो सकती है।

कन्या : कामकाज में व्यस्तता बढ़ेगी, लेकिन मेहनत का उचित फल मिलेगा। नौकरी बदलने की सोच रहे लोगों को अच्छे अवसर मिल सकते हैं। आर्थिक स्थिति मजबूत होगी, फिर भी खर्चों पर नियंत्रण रखें। परिवार में किसी बुजुर्ग की सलाह उपयोगी साबित होगी।

तुला : सप्ताह आपके लिए संतुलन और नई संभावनाएं लेकर आएगा। व्यापार में विस्तार की योजना बन सकती है। नौकरीपेशा लोगों को नई जिम्मेदारी मिल सकती है। धन संबंधी मामलों में सावधानी बरतें। दांपत्य जीवन में मधुरता रहेगी।

वृश्चिक : इस सप्ताह आत्मविश्वास मजबूत रहेगा। कार्यक्षेत्र में आपकी रणनीति सफल हो सकती है। अचानक आर्थिक लाभ के संकेत हैं। किसी महत्वपूर्ण काम में परिवार का सहयोग मिलेगा। प्रेम संबंधों में चल रही नाराजगी दूर हो सकती है। वाहन चलाते समय सावधानी बरतें।

धनु : नई योजनाओं को शुरू करने के लिए सप्ताह अनुकूल है। करियर में आगे बढ़ने के अवसर मिलेंगे। उच्च शिक्षा या प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी कर रहे विद्यार्थियों के लिए समय अच्छा है। आर्थिक स्थिति मजबूत होगी। धार्मिक या आध्यात्मिक गतिविधियों में रुचि बढ़ सकती है।

मकर : मेहनत और अनुशासन से बड़ी सफलता मिल सकती है। कार्यक्षेत्र में आपकी जिम्मेदारियां बढ़ेंगी। रुका हुआ धन मिलने की संभावना है। व्यापार में सोच-समझकर निर्णय लें। परिवार में किसी सदस्य की उपलब्धि से खुशी मिलेगी। प्रेम संबंधों में ईमानदारी बनाए रखें।

कुंभ : यह सप्ताह नए विचारों और नए संपर्कों का है। नौकरी में बदलाव या नई परियोजना का अवसर मिल सकता है। व्यापारियों को लाभ के अच्छे अवसर मिलेंगे। आर्थिक मामलों में स्थिति मजबूत होगी। मित्रों के साथ अच्छा समय बीतेगा।

मीन : सप्ताह की शुरुआत में कुछ मानसिक उलझन रह सकती है, लेकिन धीरे-धीरे परिस्थितियां अनुकूल होंगी। कार्यक्षेत्र में आपकी प्रतिभा की सराहना होगी। धन निवेश में सावधानी रखें। परिवार में सुख-शांति रहेगी। प्रेम जीवन में भावनात्मक निकटता बढ़ेगी।

सप्ताह के पर्व/त्योहार

4 सितंबर (शुक्रवार) : श्री कृष्णजन्माष्टमी व्रत, कृष्ण अवतार
7 सितंबर (सोमवार) : जया एकादशी व्रत
8 सितंबर (मंगलवार) : भौम प्रदोष व्रत
9 सितंबर (गुरुवार) : श्राद्ध अमावस्या, कुशोत्पाटनी अमावस्या

●ज्योतिर्विद् आचार्य अखिलेश्वर शुक्ल
भाग्योदय : पहला तल्ला, सेंट्रल प्लाजा, एमएस रोड फैंसी बाजार, गुवाहाटी-781001 मो.-94350 40387

पृष्ठ 1 का शेषांश...

सनातन पर ही सवाल क्यों?

की, हालांकि बाद में उन्होंने स्पष्ट किया कि उन्होंने रानी पद्मावती या जौहर करने वाली महिलाओं को कायर नहीं कहा था।

यहां मूल प्रश्न किसी व्यक्ति को कटघरे में खड़ा करना नहीं, बल्कि चयनात्मक विमर्श का है। यदि किसी प्राचीन ग्रंथ में आपत्तिजनक या आज के संविधान-विरोधी विचार मिलते हैं, तो उन पर तार्किक बहस होनी चाहिए-लेकिन उसी कसौटी से हर परंपरा, हर विचारधारा और हर धार्मिक-सामाजिक व्यवस्था को परखा जाना चाहिए। सनातन कोई एक पुस्तक, एक व्यक्ति या एक राजनीतिक दल नहीं है। यह हजारों वर्षों की बहस, दर्शन, आध्यात्मिकता और आत्मसुधार की परंपरा है। इसकी कुरीतियों की आलोचना होनी चाहिए, लेकिन आलोचना और अपमान में अंतर भी समझना होगा। प्रश्न यही है-सुधार चाहिए या सनातन को बार-बार राजनीतिक निशाना बनाना?

महंगे माल पर नजर, भरोसे पर वार!

जन जन विचार
...गुवाहाटी

असम के ट्रांसपोर्ट कारोबार में महंगे माल की ढुलाई को लेकर एक गंभीर चेतावनी सामने आई है। आरोप और आशंकाएं ऐसी हैं, जो बुकिंग पार्टियों, ब्रोकरों और व्यापारियों की चिंता बढ़ाने वाली हैं। सवाल उठाया गया है कि क्या ट्रांसपोर्ट बाजार में कुछ ऐसे कथित वाहन मालिक सक्रिय हैं, जिनकी नजर सामान्य माल पर नहीं बल्कि महंगे और बाजार में आसानी से बिकने वाले सामान पर रहती है?

असम ब्रह्मपुत्र ट्रांसपोर्ट समूह (एबीटीएस) से जुड़े बबन ठाकुर ने ट्रांसपोर्ट जगत के नाम जारी एक अपील में बुकिंग पार्टियों और ब्रोकरों को साफ शब्दों में चेताया है-गाड़ी लगाने से पहले सिर्फ वाहन की उपलब्धता मत देखिए, उसके मालिक का पूरा बैकग्राउंड खंगालिए।

चेतावनी में खासतौर पर बिहारबाड़ी से लेकर असम कांटा क्षेत्र तक सक्रिय वाहन मालिकों और गाड़ियों के संबंध में उचित जानकारी एवं सत्यापन की अपील की गई है।

माल मिल जाए, फिर भी इंतजार आखिर किसका?

जारी चेतावनी में एक बेहद गंभीर सवाल उठाया गया है। दावा किया गया है कि कुछ कथित वाहन मालिकों को उसी तारीख में माल मिलने के बावजूद वे उसे लोड नहीं करते और कई दिनों तक गाड़ी खड़ी रखते हैं।

आरोप है कि ऐसे लोग कथित तौर पर इंतजार करते हैं कि उनकी गाड़ी में सरिया, चीनी, दाल, चायपत्ती, टीन अथवा अन्य महंगा और आसानी से बिकने वाला सामान लोड हो। यहीं से संदेह गहराता है।

आखिर सामान्य माल छोड़कर महंगे माल का इंतजार क्यों? क्या केवल ज्यादा भाड़ा इसका कारण है या इसके पीछे कोई और खेल भी छिपा है?

महंगा माल लोड होते ही शुरू होता है 'असली खेल'

चेतावनी में आशंका जताई गई है कि कुछ मामलों में महंगा माल गाड़ी में लोड होने के बाद कथित तौर पर उसे रास्ते में या किसी अन्य स्थान पर ठिकाने लगाने अथवा बेच देने की कोशिश की जा सकती है।

यदि ये आरोप और आशंकाएं सही साबित होती हैं तो यह केवल माल चोरी या धोखाधड़ी का मामला नहीं, बल्कि ट्रांसपोर्ट कारोबार में भरोसे पर सीधा हमला है।

एक तरफ व्यापारी और बुकिंग पार्टी करोड़ों रुपए का माल भरोसे के साथ ट्रक में लोड कराते हैं, वहीं दूसरी तरफ यदि वाहन, मालिक और चालक की पहचान एवं रिकॉर्ड की समुचित जांच नहीं हो रही है तो यह भरोसा कभी भी भारी नुकसान में बदल सकता है।

कुछ लोगों की करतूत, बदनाम पूरा ट्रांसपोर्ट जगत

सबसे बड़ी चिंता यह है कि कथित तौर पर गलत काम करने वाले कुछ लोगों का असर पूरे ट्रांसपोर्ट व्यवसाय की साख पर पड़ रहा है।

ईमानदार और वर्षों से भरोसेमंद तरीके से काम कर रहे वाहन मालिकों को भी संदेह की नजर से देखा जाने लगा है। बुकिंग पार्टियों का विश्वास कमजोर हो रहा है और इसका सीधा नुकसान उन लोगों को भी उठाना पड़ रहा है, जिनका किसी गलत गतिविधि से कोई लेना-देना नहीं है।

सवाल है, क्या कुछ कथित संदिग्ध लोगों की वजह से पूरी ट्रांसपोर्ट बिरादरी कटघरे में खड़ी हो जाएगी?

बुकिंग पार्टियों के लिए अलर्ट पहले जांच, फिर माल

बबन ठाकुर की अपील में बुकिंग पार्टियों और ब्रोकरों को स्पष्ट संदेश दिया गया है कि केवल गाड़ी उपलब्ध होने के आधार पर महंगा माल लोड कराना खतरनाक साबित हो सकता है। वाहन लगाने से पहले जरूरी है कि गाड़ी मालिक की पहचान और प्रतिष्ठा की जांच हो। वाहन का पिछला रिकॉर्ड देखा जाए। चालक की पहचान और विश्वसनीयता की पुष्टि की जाए। आवश्यक दस्तावेजों का सत्यापन किया जाए। संभव हो तो पूर्व बुकिंग और माल ढुलाई का रिकॉर्ड भी खंगाला जाए।

प्रमाण मिलेगा तो साझा की जाएगी जानकारी

जारी संदेश में कहा गया है कि यदि किसी वाहन मालिक के संबंध में विश्वसनीय जानकारी, प्रमाण अथवा पूर्व में हुई किसी गंभीर घटना का रिकॉर्ड सामने आता है तो भविष्य में नुकसान से बचाने के उद्देश्य से संबंधित बुकिंग पार्टियों को उचित माध्यम से जानकारी साझा की जा सकती है।

साथ ही यह भी स्पष्ट किया गया है कि बिना प्रमाण किसी व्यक्ति को बदनाम करना उद्देश्य नहीं है।

सवाल सिर्फ चोरी का नहीं सिस्टम का भी है

यह पूरा मामला ट्रांसपोर्ट कारोबार के उस कमजोर पक्ष की ओर इशारा करता है, जहां आज भी करोड़ों रुपए का माल कई बार केवल परिचय, फोन कॉल, ब्रोकर की सिफारिश या वाहन की तत्काल उपलब्धता के आधार पर भेज दिया जाता है। लेकिन अब सवाल उठ रहा है कि क्या इतना बड़ा कारोबार केवल भरोसे के सहारे चल सकता है? क्या हर वाहन मालिक और चालक का सत्यापित डेटाबेस होना चाहिए? क्या महंगे माल के लिए विशेष सत्यापन, जीपीएस निगरानी और डिजिटल ट्रैकिंग अनिवार्य की जानी चाहिए? क्या बुकिंग पार्टी, ब्रोकर और ट्रांसपोर्टर मिलकर संदिग्ध गतिविधियों के खिलाफ साझा व्यवस्था तैयार करेंगे?

साफ संदेश : सावधान नहीं हुए तो नुकसान आपका

ट्रांसपोर्ट जगत में जारी इस चेतावनी का सार बेहद सीधा और कड़ा है-

गाड़ी देखकर भरोसा मत कीजिए। माल लोड करने से पहले मालिक का इतिहास जानिए। महंगा माल है तो जिम्मेदारी भी दोगुनी रखिए। पहले सत्यापन, फिर बुकिंग। क्योंकि ट्रांसपोर्ट के इस कारोबार में एक गलत गाड़ी, एक गलत मालिक या एक गलत फैसला लाखों-करोड़ों रुपए के माल को खतरे में डाल सकता है। अब जरूरत केवल चेतावनी देने की नहीं, बल्कि ऐसे कथित तत्वों की पहचान कर ट्रांसपोर्ट कारोबार से उन्हें बाहर करने की है, ताकि ईमानदार ट्रांसपोर्टरों की साख बची रहे और व्यापारी अपना माल बिना डर के एक जगह से दूसरी जगह भेज सकें।

सवाल है कि क्या ट्रांसपोर्ट जगत समय रहते जागेगा, या किसी बड़े नुकसान के बाद फिर जांच और कार्रवाई की बातें होंगी?

पृष्ठ 1 का शेषांश...

ऊहापोह में असम के...

भारत की ताकत है।

खतरा भाषा नहीं भाषा की राजनीति

असमिया समाज यदि अपनी भाषा को बचाना चाहता है तो उसे मजबूत शिक्षा, साहित्य, रोजगार, प्रशासन और डिजिटल दुनिया के माध्यम से आगे बढ़ाना होगा।

हिंदीभाषी समाज यदि अपनी पहचान बचाना चाहता है तो उसे भी अपनी भाषा के लिए संगठित, जिम्मेदार और लोकतांत्रिक आवाज उठानी होगी। लेकिन दोनों के बीच टकराव पैदा करके किसी भाषा का भविष्य सुरक्षित नहीं किया जा सकता। असमिया को मजबूत करने के लिए हिंदी को कमजोर करना जरूरी नहीं है। और हिंदीभाषियों को अपनी पहचान बचाने के लिए असमिया का विरोध करने की कोई जरूरत नहीं है।

अब दोनों समाजों को एक-दूसरे से सवाल नहीं, संवाद करना होगा

असमिया समाज का सवाल-

'अगर असम आपका घर है तो असमिया से आपका रिश्ता क्या है?'

हिंदीभाषी समाज का सवाल-

'अगर हम असम के हैं तो अपनी मातृभाषा की पहचान क्यों छोड़ें?'

दोनों सवालों का जवाब टकराव में नहीं, संवाद में है।

असम को ऐसा मॉडल चाहिए जहां कोई हिंदीभाषी असमिया सीखने पर गर्व करे और कोई असमिया हिंदी बोलने में असुरक्षित महसूस न करे।

जहां मातृभाषा की पहचान को लेकर किसी पर दबाव न हो और राज्य की प्रमुख भाषाओं के सम्मान में कोई कमी न आए।

हिंदीभाषी संगठन खामोश

लेकिन हिंदीभाषी संगठनों की जिम्मेदारी केवल समारोह आयोजित करना, नेताओं का स्वागत करना या सांस्कृतिक कार्यक्रम करना नहीं है। समाज की भाषा और पहचान से जुड़े सवाल पर उसके पक्ष में खड़ा होना भी संगठन का दायित्व है।

यदि किसी हिंदीभाषी व्यक्ति की वास्तविक मातृभाषा हिंदी है, तो क्या उसे जनगणना में अपनी मातृभाषा हिंदी दर्ज करने के अधिकार को लेकर अपने संगठनों से स्पष्ट आवाज नहीं मिलनी चाहिए? क्या संगठन सुविधा की राजनीति कर रहे हैं? सबसे बड़ा सवाल यही है कि हिंदीभाषी संगठनों की चुप्पी के पीछे कारण क्या है?

क्या उन्हें सरकार से टकराव का डर है?

क्या राजनीतिक संरक्षण खोने का भय है?

या फिर हिंदीभाषी समाज की समस्याओं को उठाने वाली संस्थाएं केवल नाम और कार्यक्रमों तक सीमित हो गई हैं?

यह सवाल इसलिए भी महत्वपूर्ण है क्योंकि किसी भी समाज की ताकत उसकी संख्या में नहीं, बल्कि अपनी वैध मांगों को लोकतांत्रिक तरीके से उठाने की क्षमता में होती है।

असमिया का सम्मान और हिंदी की पहचान—दोनों साथ चल सकते हैं

हिंदीभाषी समाज को असमिया भाषा के खिलाफ खड़ा करना गलत होगा। असमिया इस राज्य की प्रमुख भाषा और सांस्कृतिक पहचान का महत्वपूर्ण हिस्सा है। असमिया सीखना और उसका सम्मान करना असम में रहने वाले हर व्यक्ति के लिए सामाजिक जुड़ाव का माध्यम हो सकता है।

लेकिन असमिया का सम्मान करने के लिए हिंदी को अपनी मातृभाषा मानने वाले व्यक्ति को अपनी पहचान छोड़ने की जरूरत क्यों हो?

संगठनों को अब बोलना होगा

हिंदीभाषी संगठनों के सामने अब एक सीधा सवाल है-वे किसके लिए हैं?

यदि वे हिंदीभाषी समाज की सामाजिक, सांस्कृतिक और भाषाई पहचान के प्रतिनिधि होने का दावा करते हैं, तो जनगणना जैसे महत्वपूर्ण अवसर पर उन्हें अपनी स्थिति स्पष्ट करनी चाहिए। उन्हें मुख्यमंत्री का विरोध करने की जरूरत नहीं है। उन्हें केवल इतना कहना है कि असमिया भाषा का सम्मान रहेगा, लेकिन हिंदीभाषी नागरिक अपनी वास्तविक मातृभाषा दर्ज करने के अधिकार से समझौता नहीं करेंगे।

यह मांग असम के खिलाफ नहीं, बल्कि भाषाई विविधता और नागरिक अधिकारों के पक्ष में होगी।

खामोशी भी एक संदेश देती है

इतिहास बताता है कि जब कोई समाज अपने अधिकारों और पहचान के सवाल पर लगातार चुप रहता है, तो धीरे-धीरे उसकी आवाज कमजोर होती जाती है। इसलिए आज सवाल केवल जनगणना के एक कॉलम का नहीं है। सवाल यह है कि असम में रहने वाला हिंदीभाषी समाज अपनी पहचान को लेकर कितना जागरूक और मुखर है।

मुख्यमंत्री ने अपनी बात कह दी। अब बारी हिंदीभाषी संगठनों की है।

वे चुप रहेंगे या अपने समाज के सामने खड़े होकर स्पष्ट कहेंगे- असम हमारा घर है, असमिया हमारी सम्मानित साझी भाषा हो सकती है, लेकिन हमारी मातृभाषा की पहचान हमारी अपनी है।

संपादकीय

शिक्षक का सम्मान

5 सितंबर को देश शिक्षक दिवस मनाता है। विद्यालयों में समारोह होते हैं, शिक्षक सम्मानित किए जाते हैं और सोशल मीडिया पर गुरु की महिमा के संदेशों की बाढ़ आ जाती है। लेकिन इस औपचारिकता के बीच एक गंभीर प्रश्न अनुत्तरित रह जाता है-क्या वास्तव में हमारे समाज और व्यवस्था में शिक्षक को वह सम्मान प्राप्त है, जिसका वह अधिकारी है?

शिक्षक केवल पाठ्यपुस्तक का ज्ञान देने वाला व्यक्ति नहीं है। वह उस पीढ़ी का निर्माण करता है, जो आने वाले समय में समाज, प्रशासन, विज्ञान, राजनीति और अर्थव्यवस्था की दिशा तय करती है। किसी राष्ट्र का भविष्य उसके विद्यालयों में तैयार होता है और उन विद्यालयों के केंद्र में शिक्षक होता है। इसलिए शिक्षक की उपेक्षा वास्तव में राष्ट्र के भविष्य की उपेक्षा है।

आज शिक्षक से शिक्षा के साथ-साथ अनेक प्रशासनिक और गैर-शैक्षणिक दायित्व निभाने की अपेक्षा की जाती है। संसाधनों की कमी, बढ़ता कार्यभार, परीक्षा परिणामों का दबाव और बदलते सामाजिक परिवेश के बीच उससे गुणवत्तापूर्ण शिक्षा की उम्मीद की जाती है। यह विरोधाभास शिक्षा व्यवस्था की गंभीर चुनौती है।

शिक्षक दिवस केवल शिक्षकों को बधाई देने का अवसर नहीं, बल्कि आत्ममंथन का दिन होना चाहिए। हमें तय करना होगा कि शिक्षक को भाषणों में 'राष्ट्र निर्माता' कहने के बजाय व्यवस्था में भी उसका सम्मान सुनिश्चित करेंगे।

किसी देश की शिक्षा व्यवस्था की वास्तविक मजबूती उसके भवनों या तकनीक से नहीं, बल्कि उसके शिक्षक की गरिमा, स्वतंत्रता और संतुष्टि से मापी जानी चाहिए। शिक्षक का सम्मान एक परंपरा नहीं, राष्ट्र के प्रति हमारी जिम्मेदारी है।

बचपन पर मंडराता डिजिटल खतरा

डिजिटल क्रांति ने दुनिया को हमारी हथेली में ला दिया है, लेकिन इसी तकनीकी सुविधा की आड़ में बच्चों के बचपन पर एक ऐसा खतरा मंडरा रहा है, जिसे अब नजरअंदाज करना आत्मघाती होगा। यूनिसेफ की हालिया रिपोर्ट में इंटरनेट का इस्तेमाल करने वाले 12 से 17 वर्ष के बच्चों में बड़े पैमाने पर ऑनलाइन यौन शोषण और उत्पीड़न का खुलासा बेहद चिंताजनक है। यह केवल एक वैश्विक आंकड़ा नहीं, बल्कि उस व्यवस्था पर गंभीर सवाल है, जो बच्चों को डिजिटल दुनिया में तो धकेल रही है, लेकिन उनकी सुरक्षा सुनिश्चित करने में पीछे रह गई है। सबसे भयावह पहलू यह है कि अपराधी हमेशा कोई अनजान व्यक्ति नहीं होता। कई मामलों में बच्चे अपने शोषणकर्ता को पहले से जानते हैं। सामाजिक माध्यमों पर निजी तस्वीरों का दुरुपयोग, अश्लील सामग्री के लिए दबाव, ब्लैकमेल और कृत्रिम बुद्धिमत्ता से तैयार की गई फर्जी अश्लील सामग्री ने खतरे को और जटिल बना दिया है। भारत में राष्ट्रीय मानव अधिकार आयोग द्वारा बाल यौन शोषण सामग्री से जुड़े कथित भुगतान वाले विज्ञापनों का संज्ञान लेना बताता है कि समस्या केवल अपराधियों तक सीमित नहीं है। बड़े तकनीकी मंचों की जवाबदेही भी तय करनी होगी। मुनाफे की दौड़ में बच्चों की सुरक्षा से समझौता किसी भी स्थिति में स्वीकार्य नहीं हो सकता। सरकारों को कठोर कानूनों के साथ त्वरित शिकायत और कार्रवाई की व्यवस्था मजबूत करनी होगी। तकनीकी कंपनियों को प्रभावी निगरानी और बाल-सुरक्षा तंत्र विकसित करना होगा।

मोहन भागवत का संदेश

जन जन विचार
...✍ डॉ. प्रवीण दाताराम

न्यूयॉर्क के मैडिसन स्क्वायर गार्डन में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरसंघचालक मोहन भागवत का भाषण सुनकर अमेरिका की एक प्रचलित कहावत स्मरण हो आई 'ई प्लूरिबस यूनम' (E Pluribus Unum) अर्थात् 'अनेक से एक'। भागवत जी ने अनेक ऐसे बिंदु चिह्नित किए जहां, 'वसुधैव कुटुम्बकम' और अमेरिकी 'ई प्लूरिबस यूनम' परस्पर पूरक और पर्याय सिद्ध होते हैं।

सबसे बड़ी बात, उनका संदेश केवल अमेरिका में बसे भारतीयों के लिए नहीं था; उसमें भारत, भारतीयता, विविधता, सह-अस्तित्व और विश्व-मानवता के प्रति एक व्यापक दृष्टि का विकास क्रम था।

भागवत जी ने अपने प्रबोधन में विविधता को भारत की शक्ति बताया। उन्होंने कहा कि भारत की एकता विविधताओं से सजती है और विविधता में केवल परस्पर एडजस्ट करना पर्याप्त नहीं है, विविधता को स्वीकार कर उसे सम्मान और संरक्षण भी देना होगा। यही भारतीय दर्शन है। धार्मिक, नस्लीय और सांस्कृतिक ध्रुवीकरण के चक्र फंसे वर्तमान विश्व हेतु यही आवश्यक है।

सामाजिक मुद्दे और हिमायत

मोहनराव जी के न्यूयॉर्क उद्बोधन से निकला सबसे महत्वपूर्ण संदेश हिंदू-मुस्लिम संबंधों पर स्पष्ट वक्तव्य था। उन्होंने दो टूक उस सोच को नकारा कि भारत में मुसलमानों के लिए कोई स्थान नहीं है। उन्होंने हिंदू और मुस्लिम समाज को साझा पूर्वजों से जोड़ते हुए 'सेम डीएनए' की बात भी दोहराई।

भारतीय-अमेरिकी समुदाय आज अमेरिका के सर्वाधिक सफल और प्रभावी प्रवासी समुदाय में से एक है। उसमें हिंदू, मुस्लिम, सिख, ईसाई, जैन, बौद्ध और अनेक भाषाई-सांस्कृतिक समूह शामिल हैं। यदि भारतीय मूल के लोग अपनी भारतीय पहचान को किसी एक धार्मिक पहचान तक सीमित न करके एक साझा सभ्यतागत पहचान के रूप में देखते हैं, तो अमेरिकी समाज में भारतीय समुदाय की एकता और प्रभाव दोनों बढ़ सकते हैं।

भागवत का संदेश अमेरिका में भारतीय मूल की नई पीढ़ी के लिए विशेष रूप से उपयोगी हो सकता है। पहली पीढ़ी के प्रवासी प्रायः भारत से भावनात्मक रूप से जुड़े रहते हैं, जबकि दूसरी और तीसरी पीढ़ी अमेरिकी सामाजिक परिवेश में पली-बढ़ी है। उनके सामने प्रश्न रहता है कि वे अपनी भारतीय सांस्कृतिक पहचान को अमेरिकी नागरिकता के साथ किस प्रकार संतुलित करें।

भागवत का दृष्टिकोण इस प्रश्न का सकारात्मक उत्तर देता है, अमेरिका के प्रति पूर्ण निष्ठा और भारत की सभ्यतागत विरासत के प्रति सम्मान एक-दूसरे के विरोधी नहीं हैं। 'अपनी कर्मभूमि के प्रति निष्ठावान रहो' विदेशी भूमि पर जाकर अपनों से यह कहने का सामर्थ्य, साहस और सहजता एक स्वयंसेवक या 'संघ विचार' के पास ही हो सकती है।

लोग और समाज

यह विचार भारतीय-अमेरिकी समुदाय को 'Hyphenated Identity' की समस्या से मुक्ति देकर एक आत्मविश्वासी नागरिक की पहचान देता है। मोहन भागवत जी के कहे पर चलें तो अमेरिकी भारतीय युवा श्रेष्ठ अमेरिकी होते हुए भी अपनी भारतीय जड़ों पर गर्व कर सकते हैं।

भागवतजी ने भारतीयता को केवल धार्मिक आग्रह के रूप में नहीं बल्कि साझा सांस्कृतिक और मानवीय विरासत के रूप में प्रस्तुत करने का प्रयास किया। विश्व में अमेरिका अब एक सर्वाधिक विविधता भरा समाज बन गया है। अमेरिका को सौजन्यशाली विविधता देने में भारत का सबसे बड़ा योगदान है। अमेरिका में बसे अनेक प्रकार के भारतीय समुदाय आज अमेरिकी समाज को एक इंद्रधनुष का रूप देते हैं। यह हमारे लिए गौरान्वित करने वाला विषय है।

भारतीय-अमेरिकी समुदाय अमेरिका की अर्थव्यवस्था, तकनीक, चिकित्सा, शिक्षा, उद्यमिता और सार्वजनिक जीवन में महत्वपूर्ण योगदान देता है। यदि इस समुदाय में सांस्कृतिक आत्मविश्वास और सामाजिक समरसता बढ़ती है तो उसका लाभ अमेरिकी समाज को भी मिलेगा। संघ प्रमुख ने भारतीय संस्कृति के प्रत्येक के रूप में तीन शब्द कहे "Acceptance, Respect and Protection"। उनके भाषण से यह पुनः सिद्ध हुआ कि 'सहिष्णुता' 'Tolerance' भारतीय शब्द है ही नहीं। भारतीयता का मूल स्वर है स्वीकार्यता। 'सहिष्णुता' 'Tolerance' से तो अहम् व्यक्त होता है। 'सहिष्णुता' शब्द से स्वर आता है कि 'तुम मुझे पसंद नहीं किंतु फिर भी तुम यहां रह लो'। Acceptance और Respect का अर्थ है, सभी समुदाय को स्वीकारता हूं और उनका सम्मान करता हूं।

भौगोलिक संदर्भ

सरसंघचालक के न्यूयार्क प्रवास के विषय में जोहरान ममदानी तो मध्ययुगीन मुस्लिम सिद्ध हो गए हैं। जोहरान ममदानी ने अप्रासंगिक बातें करके न्यूयार्क के मेयर पद की गरिमा को ही ध्वस्त कर दिया। ममदानी को पता ही नहीं कि भारत का दृष्टिकोण "Pluralistic" और "Secular republic" से बहुत आगे बढ़कर 'वयं राष्ट्रे जागृयाम' का है। जिस प्रकार के शब्द ममदानी ने कहे हैं, उससे तो लगता है वे अपनी दिमागी हालत की चिंता करें, भारत की नहीं।

यदि ममदानी के मूल्य लोकतांत्रिक नहीं हैं। वे इस कार्यक्रम के निजी स्थान, सार्वजनिक स्थान, कार्यक्रम रोकने जैसे शब्दों को प्रयोग करके 'फासिस्ट' और 'मध्ययुगीन मुस्लिम' सिद्ध हो गए हैं।

जोहरान ममदानी ने अमेरिका के नागरिक और न्यूयार्क के मेयर की गरिमा के विरुद्ध जाकर यह व्यक्त किया कि यदि उनके पास अधिकार होते तो वे संघ प्रमुख को न्यूयार्क में भाषण ही नहीं देने देते। इससे अधिक शर्मनाक और वैचारिक निर्धनता भला और क्या हो सकती है।

न्यूयॉर्क के मेयर से नहीं किंतु ममदानी के घर जाकर आज उनसे प्रश्न किया जाना चाहिए कि वे अमेरिकी लोकतांत्रिक विचारों से इतने भिन्न क्यों हैं? और यदि वे न्यूयार्क नगर की सभ्यता, संस्कृति और सहजता को आत्मसात नहीं कर पा रहें हैं तो वे मेयर पद पर टिके ही क्यों हैं? जोहरान ममदानी ने तो न्यूयार्क में "Free Speech" के अधिकार पर ही प्रश्नचिह्न लगा दिया है।

भागवत जी के न्यूयॉर्क भाषण ने हिंदुत्व, हिंदू संस्कृति, भारतीय सभ्यता, भारतीय सर्वसमावेशिकता, सर्व स्पर्शिता को बड़ी सहजता से स्थापित किया है। यद्यपि यह पहले भी स्थापित ही थी किंतु अब इसे एक नया आयाम मिल गया है। भारत के संदर्भ में अमेरिका में एक नए विमर्श का आरंभ है, भागवत जी का यह वैचारिक प्रबोधन।

'एकं सद्विप्रा बहुधा वदन्ति', 'वसुधैव कुटुम्बकम' और विविधता में एकता की परंपरा को मैडिसन स्क्वेयर से पुनर्परिभाषित करने हेतु मोहन राव जी का अभिनंदन कर रहा है 'अमेरिकी भारतीय' समुदाय। अपनी सांस्कृतिक पहचान पर गर्व करने का अर्थ दूसरे की पहचान से घृणा करना नहीं है, यह सिद्ध करने हेतु भी वे अभिनंदनीय हैं।

अमेरिका कहावत "E Pluribus Unum", अर्थात् 'अनेक से एक', को स्थापित करता और भारतीयता के मूल से जोड़ता यह संघ संवाद एक अद्भुत सार्थकता, स्वीकार्यता, सहजता व सामुदायिकता के भाव को जन्म देता है।

कहना ही होगा कि यदि शिकागो से अमेरिका और समूचे विश्व को स्वामी विवेकानंद जी ने एक वैचारिक माला दी थी तो मोहन राव जी भागवत ने इस 'विवेकानंद माला' का पुनर्जाप ही किया है।

विवाहिता लापता, ससुराल पक्ष पर हत्या का आरोप

मुजफ्फरपुर के साहेबगंज थाना क्षेत्र में 28 वर्षीय विवाहिता इंदु देवी रहस्यमय परिस्थितियों में लापता हो गई। मायके वालों ने ससुराल पक्ष पर जहर देकर हत्या करने और शव छिपाने का गंभीर आरोप लगाया है। परिजनों के अनुसार, महिला की शादी 2018 में अवधेश राय से हुई थी और उसकी तीन बेटियां हैं। आरोप है कि पति के दूसरी महिला से कथित संबंध को लेकर इंदु को लंबे समय से प्रताड़ित किया जा रहा था। महिला के लापता होने की सूचना पर मायके वाले ससुराल पहुंचे, लेकिन वहां घर पर बाहर से ताला लगा मिला और ससुराल पक्ष के लोग फरार बताए गए। इससे परिजनों का संदेह और गहरा गया। पुलिस ने मौके पर पहुंचकर जांच शुरू कर दी है और आसपास के लोगों से पूछताछ के साथ महिला की तलाश की जा रही है। हालांकि, हत्या या शव छिपाने की अभी आधिकारिक पुष्टि नहीं हुई है। पुलिस जांच और महिला के बरामद होने के बाद ही पूरे मामले की वास्तविक स्थिति स्पष्ट हो सकेगी।

तेज रफ्तार कार ने दो वृद्ध महिलाओं को रौंदा

औरंगाबाद के मदनपुर थाना क्षेत्र के पड़रिया गांव में तेज रफ्तार कार ने घर के बाहर बैठी दो वृद्ध महिलाओं को कुचल दिया। हादसे में बरती देवी (62) और प्यारी कुंवर (83) की मौके पर ही मौत हो गई। घटना के बाद ग्रामीणों ने भाग रहे कार चालक को खदेड़कर पकड़ लिया और पुलिस के हवाले कर दिया। परिजनों के साथ ग्रामीण दोनों महिलाओं को मदनपुर सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र ले गए, जहां चिकित्सकों ने जांच के बाद उन्हें मृत घोषित कर दिया। सूचना पर पहुंची पुलिस ने दोनों शवों को पोस्टमार्टम के लिए औरंगाबाद सदर अस्पताल भेजा है। पुलिस ने चालक को गिरफ्तार कर दुर्घटना में शामिल कार जब्त कर ली है। परिजनों के आवेदन पर प्राथमिकी दर्ज कर मामले की जांच की जा रही है। हादसे के बाद गांव में मातम पसरा है और परिजनों का रो-रोकर बुरा हाल है।

बिल्डर पर ताबड़तोड़ फायरिंग, पांच गोलियां लगीं

सीतामढ़ी के परसौनी थाना क्षेत्र के कठौर गांव में 42 वर्षीय बिल्डर रंजीत राय पर बाइक सवार चार बदमाशों ने ताबड़तोड़ फायरिंग कर दी। हमले में उन्हें पांच गोलियां लगीं और उनकी हालत गंभीर बताई जा रही है। स्थानीय लोगों ने घायल रंजीत को अस्पताल पहुंचाया, जहां उनका इलाज जारी है। परिजनों के अनुसार, रंजीत 28 अगस्त को पुणे से गांव लौटे थे। गांव में उनकी 22 कट्ठा जमीन को लेकर पिछले चार वर्षों से विवाद चल रहा था और उन्हें पहले भी धमकियां मिल चुकी थीं। उनकी पत्नी ने दूर के एक दामाद और उसके साथियों पर हमले की साजिश रचने का आरोप लगाया है। वारदात के बाद पुलिस ने मौके पर पहुंचकर जांच शुरू कर दी।

राम मंदिर को मिला पहला सीईओ

पूर्व एयर मार्शल जितेंद्र मिश्र बोले, 'यह ईश्वरीय आदेश'

जन जन विचार
...✍ अयोध्या

श्रीराम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट ने अयोध्या के भव्य राम मंदिर की व्यवस्थाओं को और अधिक सुव्यवस्थित करने की दिशा में बड़ा कदम उठाते हुए रिटायर्ड एयर मार्शल जितेंद्र मिश्र को मंदिर का पहला मुख्य कार्यकारी अधिकारी (सीईओ) नियुक्त किया है। वायुसेना में लंबे समय तक देशसेवा करने के बाद अब मिश्र रामलला की सेवा और मंदिर से जुड़ी व्यवस्थाओं की जिम्मेदारी संभालेंगे। अपनी नियुक्ति को उन्होंने 'ईश्वरीय आदेश' बताया है।

नवनियुक्त सीईओ जितेंद्र मिश्र ने कहा कि वह ट्रस्ट के पदाधिकारियों से बातचीत के बाद दो-तीन दिन में अयोध्या पहुंचकर रामकाज में जुट जाएंगे। उन्होंने स्पष्ट किया कि उनका पूरा प्रयास रहेगा कि उनके किसी भी कार्य से श्रद्धालुओं की आस्था और विश्वास को ठेस न पहुंचे।

श्रद्धालुओं की सुविधा पर रहेगा विशेष जोर

मिश्र ने कहा कि ट्रस्ट के पदाधिकारियों और प्रशासनिक अधिकारियों के साथ बेहतर समन्वय बनाकर रामभक्तों की सेवा-सत्कार तथा उन्हें आवश्यक सुविधाएं उपलब्ध कराने का हरसंभव प्रयास किया जाएगा। उन्होंने कहा कि राम मंदिर जैसे वैश्विक महत्व के धार्मिक स्थल का सीईओ बनना उनके लिए सौभाग्य की बात है। ईश्वर से उनकी यही प्रार्थना है कि उन्हें ऐसा सामर्थ्य मिले, जिससे वह इस जिम्मेदारी का पूरी निष्ठा और ईमानदारी से निर्वहन कर सकें।

उन्होंने अपने चयन के लिए चयन समिति के सदस्यों और श्रीराम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट के पदाधिकारियों का आभार जताया। मिश्र ने कहा कि फिलहाल उन्होंने भविष्य की कोई विस्तृत योजना तैयार नहीं की है। अयोध्या पहुंचकर वास्तविक स्थिति का आकलन करने के बाद प्राथमिकताएं तय की जाएंगी और उसी के अनुरूप व्यवस्थाओं को आगे बढ़ाया जाएगा।

भगवान शिव के भक्त अब रामलला की सेवा में

धार्मिक प्रवृत्ति के जितेंद्र मिश्र भगवान भोलेनाथ के अनन्य भक्त हैं। वायुसेना में सेवा के दौरान भी वह नियमित रूप से पूजा-पाठ करते रहे। इसी वर्ष करीब चार माह पहले देशसेवा से सेवानिवृत्त होने के बाद वह दिल्ली में अपने परिवार के साथ रह रहे थे। अब नई जिम्मेदारी मिलने के बाद उनकी प्राथमिकता अयोध्या और राम मंदिर की व्यवस्थाएं होंगी।

पुराने मामलों पर टिप्पणी से किया इनकार

मंदिर में चढ़ावे की चोरी और इससे संबंधित एसआईटी जांच के सवाल पर जितेंद्र मिश्र ने टिप्पणी करने से इनकार कर दिया। उन्होंने कहा कि वह बीती बातों में समय व्यतीत करने के बजाय नई चुनौतियों और भविष्य की योजनाओं पर ध्यान केंद्रित करना चाहते हैं। उनका प्रयास रहेगा कि सभी के विश्वास को बनाए रखते हुए वह अपने कार्यों से एक सकारात्मक और प्रभावी पहचान स्थापित करें।

राम मंदिर की बढ़ती वैश्विक प्रतिष्ठा और प्रतिदिन बड़ी संख्या में पहुंच रहे श्रद्धालुओं के बीच जितेंद्र मिश्र की नियुक्ति को मंदिर प्रशासन को अधिक पेशेवर और सुव्यवस्थित बनाने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम माना जा रहा है।

किल्विस राज : पीके की मीटिंग में बत्ती गुल, जेबकतरों ने काटी चांदी

जन जन विचार
...✍ औरंगाबाद

नवनिर्वाचित विधायक और जनसुराज के सूत्रधार प्रशांत किशोर के औरंगाबाद में आयोजित नागरिक अभिनंदन समारोह में बड़ा खेल हो गया। प्रशांत किशोर ने जैसे ही राजनीतिक भाषण देना शुरू किया, वैसे ही करीब 8-10 मिनट बाद कार्यक्रम स्थल सम्राट अशोक हॉल की बिजली गुल हो गई। माइक बंद हो गया तो वे चुप हो गए। हद तो यह हो गई कि भाषण बंद कर इधर प्रशांत किशोर बिजली आने या जेनरेटर स्टार्ट किए जाने का इंतजार कर रहे थे, उधर पॉकेटमारों ने अपना काम शुरू कर दिया।

बिजली गुल होने से अंधेरे का लाभ उठाते हुए पॉकेटमारों ने कई लोगों की जेब साफ कर दी। इतना ही नहीं, विधानसभा चुनाव में रफीगंज सीट से जनसुराज के प्रत्याशी रहे विकास कुमार सिंह उर्फ बबलू सिंह का मोबाइल भी चोरी हो गया।

काफी देर तक जब बिजली नहीं आई और न ही जेनरेटर स्टार्ट हुआ तो प्रशांत किशोर सम्राट अशोक हॉल से बाहर निकल गए। हॉल से बाहर निकलकर खुले में उन्होंने सोशल मीडिया को बाइट दी। इसके बाद वहीं से अपने वाहन से पटना के लिए रवाना हो गए। हालांकि, पीके के पूरा भाषण नहीं देने से कार्यकर्ताओं और समर्थकों को निराशा हुई, जबकि वे प्रशांत किशोर का पूरा भाषण सुनने की उम्मीद लेकर आए थे।

कहने को तो प्रशांत किशोर के नागरिक अभिनंदन का कार्यक्रम जनसुराज पार्टी की औरंगाबाद जिला कमेटी द्वारा आयोजित था। लेकिन स्थानीय होने के कारण पार्टी के राष्ट्रीय प्रवक्ता कुमार सौरभ सिंह अघोषित तौर पर पूरे कार्यक्रम के मुख्य आयोजक की भूमिका में थे। कार्यक्रम स्थल पर पार्टी के जिलास्तरीय नेताओं से ज्यादा राष्ट्रीय प्रवक्ता की ओर से बैनर-पोस्टर लगे थे। यही वजह है कि कार्यक्रम के फेल होने को लेकर उनकी कार्यशैली पर सवाल उठाया जा रहा है।

इतना तक कि प्रशांत किशोर के निकलने के बाद राष्ट्रीय प्रवक्ता भी कार्यक्रम स्थल पर नजर नहीं आए, जबकि पीके के कार्यक्रम में आने से पहले उन्होंने मंच पर पूरा मोर्चा संभाल रखा था। कार्यक्रम के दौरान बिजली गुल होने और पॉकेटमारी की घटनाओं ने व्यवस्था पर कई सवाल खड़े कर दिए हैं।

यूपी चुनाव से पहले 'पाला बदलो' वाला खेल शुरू

जन जन विचार
...✍ नई दिल्ली

आगामी उत्तर प्रदेश विधानसभा चुनाव की आहट के साथ ही राजनीतिक पाला बदली का दौर शुरू हो गया है। इस क्रम में ऑल इंडिया मजलिस-ए-इत्तेहादुल मुस्लिमीन (एआइएमआइएम) के वरिष्ठ नेता और मुख्य प्रवक्ता सैयद असीम वकार कांग्रेस में शामिल हो गए।

उत्तर प्रदेश में समाजवादी पार्टी के साथ गठबंधन कर इस बार चुनाव में करिश्मे की उम्मीद कर रही सीटों के बंटवारे में अपनी हिस्सेदारी बढ़ाने के लिए पुख्ता तैयारी कर रही है और इस कसरत में दूसरे दलों के नेताओं को पार्टी में शामिल करने से गुरेज नहीं किया जा रहा है।

कांग्रेस मुख्यालय में उत्तर प्रदेश के पार्टी प्रभारी राजेंद्र पाल गौतम, प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष अजय राय और कांग्रेस अल्पसंख्यक विभाग के प्रमुख इमरान प्रतापगढ़ी की मौजूदगी में वसीम वकार ने कांग्रेस का हाथ थामते हुए कहा कि राहुल गांधी ही निडर होकर देश भर में भाजपा से लड़ाई लड़ रहे हैं और शिक्षा, रोजगार, छात्रों, महिलाओं और समाज के वंचित वर्गों से जुड़े मुद्दों पर चलाए जा रहे उनके आंदोलनों से प्रेरित होकर वे पार्टी में शामिल हुए हैं।

वकार ने एआईएमआईएम प्रमुख सांसद असदुद्दीन ओवैसी पर निशाना साधते हुए कहा कि वे सिर्फ जुबानी तौर पर भाजपा को हटाने की बात करते हैं पर जमीन पर वे भाजपा का विरोध करने वाली पार्टियों के खिलाफ लड़ते हैं।

उन्होंने कहा कि देश में पंथनिरपेक्ष जन-हितैषी सरकार बनाने के लिए प्रतिबद्ध सभी लोगों को राहुल गांधी का समर्थन करते हुए पार्टी में शामिल होना चाहिए क्योंकि कांग्रेस ही एकमात्र ऐसी पार्टी है जो जमीनी स्तर पर सीधे भाजपा का मुकाबला कर रही है।

उत्तर प्रदेश के प्रभारी गौतम ने कहा कि कांग्रेस के लिए सूबे में यह सकारात्मक है कि अलग-अलग पार्टियों के नेता कांग्रेस में शामिल हो रहे हैं और वकार एक बेहतरीन वक्ता हैं।

अजय राय और इमरान प्रतापगढ़ी ने कहा कि राहुल गांधी की 'मोहब्बत की दुकान' अभियान से नए सदस्यों के जुड़ने से कांग्रेस प्रदेश में मजबूत हो रही है और आने वाले दिनों में कई और जाने-माने चेहरे पार्टी में शामिल होंगे।

ट्रक को ओवरटेक करना पड़ा भारी, गई जान

मोतिहारी। मुफ्फसिल थाना क्षेत्र के बनकट स्थित नेशनल हाईवे पर गुरुवार शाम करीब सात बजे भीषण सड़क हादसे में दो लोगों की मौके पर ही मौत हो गई, जबकि दो अन्य गंभीर रूप से घायल हो गए। स्थानीय लोगों ने घायलों को अस्पताल पहुंचाया, जहां उनका इलाज जारी है।

प्रत्यक्षदर्शियों के अनुसार, गैस सिलेंडर लदे ट्रक को ओवरटेक करने के दौरान अपाचे बाइक अनियंत्रित होकर ट्रक से टकरा गई। इसके बाद बाइक बगल से गुजर रही कार से भी जा भिड़ी। हादसे में बाइक सवार दो लोगों की मौके पर मौत हो गई, जबकि कार सवार समेत दो लोग गंभीर रूप से घायल बताए जा रहे हैं। घटना के बाद ट्रक चालक गैस सिलेंडर लदे वाहन समेत मौके से फरार हो गया। हादसे से आक्रोशित स्थानीय लोगों ने हाईवे जाम कर दिया, जिससे वाहनों की लंबी कतार लग गई।

पृष्ठ 1 का शेषांश...

'धरतीपकड़' का निधन

और नामांकन के दौरान अपने साथ एक गधा जरूर रखते थे। गधा ही उनके चुनाव प्रचार का सबसे बड़ा आकर्षण बन जाता था। धीरे-धीरे उनका यह अंदाज इतना मशहूर हुआ कि लोग उन्हें उनके नाम से ज्यादा 'धरतीपकड़' के नाम से पहचानने लगे। चुनावी मैदान में लगातार हार के बावजूद गधे के साथ प्रचार करने की उनकी अनोखी शैली ने उन्हें आम नेताओं से अलग और लोगों के बीच बेहद चर्चित बना दिया।

तकरीबन 2014 के बाद अस्वस्थ रहने के कारण उन्होंने सक्रिय रूप से चुनाव लड़ना बंद कर दिया। बाजोरिया के करीबियों की मानें तो इसके बाद उनका पूरा समय गरीबों की सेवा में बीतने लगा। गरीब बेटियों की शादी कराना, जरूरतमंद बच्चों की पढ़ाई का खर्च उठाना और असहाय परिवारों की मदद करना ही उनके जीवन का लक्ष्य बन गया। बताया जाता है कि उन्होंने अपने जीवन में हजारों गरीब कन्याओं के विवाह में सहयोग किया। नागरमल बाजोरिया जहां भी जाते थे, उनके कंधे पर एक बड़ा झोला जरूर रहता था। उस झोले में जरूरतमंद युवक-युवतियों के बायोडाटा रखे रहते थे। यदि रास्ते में कोई उनसे बेटी या बेटे की शादी की बात कह देता तो वे तुरंत झोले से बायोडाटा निकालकर रिश्ता जोड़ने की कोशिश शुरू कर देते थे। लोगों की मदद करने का उनका यही अंदाज उन्हें सबसे अलग बनाता था।

उनके निधन की खबर मिलते ही भागलपुर में शोक का माहौल है। स्थानीय लोगों का कहना है कि उन्होंने अपने जीवन में ऐसा समाजसेवी नहीं देखा, जिसने अपना पूरा जीवन दूसरों के लिए समर्पित कर दिया हो। लोगों के अनुसार, नागरमल बाजोरिया केवल एक व्यक्ति नहीं, बल्कि सेवा और मानवता की मिसाल थे।

उनके निधन से भागलपुर ने अपनी एक ऐसी पहचान खो दी है, जिसकी कमी लंबे समय तक महसूस की जाएगी।

बिहार : दो साल की बच्ची से दुष्कर्म मामले में आरोपी को उम्रकैद

सहरसा। सहरसा कोर्ट में पॉक्सो के विशेष न्यायाधीश राकेश कुमार राकेश की अदालत ने 2 साल की बच्ची से दुष्कर्म के मामले में एक आरोपी को उम्रकैद की सजा सुनाई है। जिला एवं अपर सत्र न्यायाधीश-षष्ठम सह विशेष न्यायाधीश (पॉक्सो) राकेश कुमार राकेश की अदालत ने सौरबाजार थाना क्षेत्र के निवासी राज कुमार शर्मा को दोषी मानते हुए आजीवन सश्रम कारावास और कुल 70 हजार रुपए जुर्माने की सजा सुनाई है। सहरसा पुलिस अधीक्षक कार्यालय से गुरुवार शाम 7 बजे प्रेस रिलीज जारी कर यह जानकारी दी गई।

मामले में अभियोजन पक्ष की तरफ से पैरवी कर रहे पॉक्सो के विशेष लोक अभियोजक शिवेंद्र प्रसाद ने बताया कि अदालत ने अभियुक्त राज कुमार शर्मा को पॉक्सो एक्ट की धारा-6 के तहत आजीवन सश्रम कारावास और 50 हजार रुपए जुर्माने की सजा सुनाई है। जुर्माने की रकम नहीं चुकाने पर दोषी को दो साल का अतिरिक्त सश्रम कारावास भुगतना होगा। वहीं, भारतीय न्याय संहिता की धारा-137(2) के तहत 5 साल का सश्रम कारावास और 20 हजार रुपए का जुर्माना लगाया गया है। जुर्माना न देने पर एक साल की अतिरिक्त सजा होगी। अदालत ने साफ किया कि सभी सजाएं एक साथ चलेंगी।

यह मामला त्वरित सुनवाई (स्पीड ट्रायल) के तहत चुना गया था। सहरसा पुलिस द्वारा वैज्ञानिक जांच और मजबूत सबूतों के कारण आरोपी को बहुत कम समय में सजा दिलाई जा सकी। मामले की सुनवाई महज साढ़े छह महीने में पूरी हुई।

17 फरवरी 2026 को सौरबाजार थाना कांड संख्या-52/2026 के रूप में मामला दर्ज हुआ। 14 मई 2026 को पुलिस ने जांच पूरी कर न्यायालय में चार्जशीट दाखिल की। 23 मई 2026 को अदालत ने मामले का संज्ञान लिया। 4 जून 2026 को अदालत ने आरोप तय किए। 3 सितंबर 2026 को आरोप तय होने के सिर्फ तीन महीने के भीतर सभी गवाहों और सबूतों के आधार पर अदालत ने अंतिम फैसला सुना दिया।

दरअसल, गांव के रहने वाले एक मजदूर की 2 साल की बच्ची को जबरन उठाकर दुष्कर्म किया गया था। मामले में अदालत के फैसले के बाद पीड़ित परिवार ने खुशी जताई है। उम्रकैद की सजा के बाद परिवार को न्याय मिलने की उम्मीद मजबूत हुई है।

गोपालगंज : बाइकों की आमने सामने टक्कर में दो युवकों की मौत

गोपालगंज। गोपालगंज जिले के कटेया-भोरे मुख्य मार्ग पर पानन गांव के समीप गुरुवार को दो बाइक की आमने-सामने हुई जोरदार टक्कर में दो युवकों की मौत हो गई। हादसे में तीन लोग घायल भी हुए हैं। स्थानीय लोगों की मदद से सभी घायलों को इलाज के लिए कटेया रेफरल अस्पताल पहुंचाया गया, जहां चिकित्सकों ने दो युवकों को मृत घोषित कर दिया।

मृतकों की पहचान उत्तर प्रदेश के देवरिया जिले के बघौच घाट थाना क्षेत्र के मालवाबर मुसहर टोली गांव निवासी भद्दर मंडल के 30 वर्षीय पुत्र वकील मंडल तथा सिवान जिले के गुठनी थाना क्षेत्र के ग्यासपुर गांव निवासी दीनानाथ राजभर के 25 वर्षीय पुत्र धनु राजभर के रूप में हुई है।

बताया जाता है कि वकील मंडल वर्तमान में कटेया थाना क्षेत्र के समोगर गांव स्थित अपने ससुराल में रहकर मजदूरी का काम करते थे। गुरुवार को वह समोगर से पानन महुअवा गांव धान की सोहनी करने के लिए जा रहा था। उनकी बाइक पर चार लोग सवार थे, जिसमें दो महिलाएं भी शामिल थीं।

इसी दौरान पानन गांव के समीप सामने से धनु राजभर बाइक से कटेया की ओर से आ रहे थे। इसी दौरान दोनों बाइकों की आमने-सामने टक्कर हो गई। हादसे के बाद मौके पर चीख-पुकार मच गई। स्थानीय लोगों ने घायलों को अस्पताल पहुंचाया, जहां चिकित्सकों ने वकील मंडल एवं धनु राजभर को मृत घोषित कर दिया।

चोट से जूझ रहे खिलाड़ियों के लिए बीसीसीआई बनाएगा रोडमैप

जन जन विचार
...✍ मुंबई

भारतीय क्रिकेट खिलाड़ियों के लगातार चोटों से जूझने और विदेशी दौरों में सीमित ओवरों में खराब प्रदर्शन के बीच भारतीय क्रिकेट बोर्ड (बीसीसीआई) ने खिलाड़ियों के विश्राम, विदेशी परिस्थितियों में ढलने और अभ्यास मैचों को लेकर नई रणनीति बनाने का फैसला किया है।

मुंबई में गुरुवार को बीसीसीआई की रिव्यू बैठक के बाद सचिव देवजीत सैकिया ने कहा कि बोर्ड ये सुनिश्चित करने की दिशा में काम करेगा कि सेना देश (दक्षिण अफ्रीका, ऑस्ट्रेलिया, इंग्लैंड और न्यूजीलैंड) में किसी बड़ी सीरीज से पहले भारतीय खिलाड़ियों को पूरा आराम, परिस्थितियों के अनुकूल ढलने का समय और अभ्यास मैच मिल सकें।

सैकिया ने कहा कि भारतीय क्रिकेट में चोटों के प्रबंधन को लेकर किसी तरह की संवादहीनता नहीं है। हालांकि उन्होंने माना कि एक साल में मैचों की संख्या बहुत ज्यादा रही है इसलिए अगले भविष्य दौरा कार्यक्रम (एफटीपी) में खिलाड़ियों की तैयारी के लिए बेहतर समय सुनिश्चित करने के उपाय किए जाएंगे।

सैकिया ने कहा कि हर कोई एक ही दिशा में है। बीसीसीआई एक अच्छी तरह से चलने वाली मशीन की तरह काम कर रहा है। महिला टीम की समितियों और तकनीकी स्टाफ से लेकर सेंटर ऑफ एक्सीलेंस (सीओई), भारतीय पुरुष टीम के कोचिंग स्टाफ और मुख्य कोच गौतम गंभीर के बीच समन्वय है और काम सही दिशा में आगे बढ़ रहा है।

सैकिया ने कहा कि सबसे बड़ी चुनौती एक साल में होने वाले मैचों की अधिक संख्या है। इसी कारण अंतर्राष्ट्रीय मंचों पर एफटीपी को लेकर होने वाली बैठकों में बीसीसीआई अपने प्रतिनिधियों से ऐसा कार्यक्रम तैयार करने को कहेगा, जिसमें सेना देशों की बड़ी सीरीज से पहले खिलाड़ियों को आराम के साथ-साथ अनुकूलन और कुछ अभ्यास या मैत्री मैचों का मौका मिले।

बैठक में भारत के टेस्ट और वनडे कप्तान शुभमन गिल, टी20 कप्तान श्रेयस अय्यर, मुख्य कोच गौतम गंभीर, सीओई के क्रिकेट निदेशक वीवीएस लक्ष्मण और बीसीसीआई के अधिकारी शामिल

हुए। मुख्य चयनकर्ता अजीत अगरकर बैठक में शामिल नहीं हुए। वह निजी कारणों से इस बैठक में भाग नहीं ले पाए।

सैकिया ने कहा कि बैठक में इंग्लैंड और आयरलैंड में टीम के प्रदर्शन के साथ-साथ अगले एक साल की योजनाओं पर चर्चा हुई। उन्होंने कहा कि 2027 वनडे विश्व कप में बेहतर प्रदर्शन के लिए रोडमैप तैयार किया गया है और इसके लिए कुछ विशेष अभ्यास किए जाएंगे। भारत को आयरलैंड के विरुद्ध दो मैचों की टी-20 सीरीज में 0-2 से हार झेलनी पड़ी थी। इसके बाद इंग्लैंड में टीम टी20 सीरीज 1-4 से हार गई, जबकि तीन मैचों की वनडे सीरीज में भारत को 1-2 से शिकस्त मिली।

सैकिया ने माना कि सीमित ओवरों के इन दौरों पर प्रदर्शन अच्छा नहीं रहा और टीम को इसके कारणों पर आत्ममंथन करना होगा। उन्होंने कहा कि भविष्य में सेना देशों के दौरों से पहले क्या किया जाना चाहिए, इसकी रणनीति तैयार कर ली गई है।

सैकिया ने बताया कि बैठक में खिलाड़ियों के रिटर्न टू प्ले (आरटीपी) से जुड़े नियमों और प्रोटोकाल की भी समीक्षा की गई। उन्होंने स्पष्ट किया कि चर्चा किसी एक खिलाड़ी को लेकर नहीं, बल्कि प्रत्येक खिलाड़ी के फिटनेस स्तर और टीम के हित को ध्यान में रखकर हुई।

उन्होंने कहा कि कप्तानों और मुख्य कोच से फीडबैक लिया गया है, क्योंकि वे टीम की जरूरतों और मैदान पर आने वाली समस्याओं की जानकारी देने के लिए सबसे उपयुक्त लोग हैं। इसी फीडबैक के आधार पर ऐसी रणनीति तैयार की जाएगी जिससे मैचों के दौरान इस तरह की अवांछित परिस्थितियों से बचा जा सके।

सैकिया ने चोटों को भारतीय क्रिकेट के लिए चिंता का विषय बताते हुए कहा कि भारतीय टीम और सीओई के बीच संवाद या समन्वय की कोई समस्या नहीं है। उनकी चिंता खिलाड़ियों को बार-बार होने वाली चोटों को लेकर है और इसे रोकने के लिए कुछ नए उपाय करने होंगे। सीओई में खेल विज्ञान एवं चिकित्सा विभाग के प्रमुख का पद खाली होने पर सैकिया ने कहा कि इससे केंद्र की गतिविधियों पर कोई असर नहीं पड़ रहा है।

उन्होंने बताया कि फिटनेस और रिहैब सुविधाओं को संभालने के लिए करीब 16 लोग मौजूद हैं। हालांकि, उन्होंने माना कि इस पूरे विभाग की निगरानी के लिए एक बेहद योग्य व्यक्ति की जरूरत है। बोर्ड ऐसे व्यक्ति की तलाश जल्द पूरी करने की कोशिश कर रहा है, लेकिन फिलहाल उस पद के खाली होने के बावजूद सीओई का काम सही तरीके से चल रहा है।

मंधाना के शतक से भारत की धमाकेदार जीत

जन जन विचार
...✍ नई दिल्ली

स्मृति मंधाना के रिकॉर्डतोड़ शतक और भारतीय गेंदबाजों की घातक गेंदबाजी के दम पर भारतीय महिला क्रिकेट टीम ने महिला एशिया कप 2026 में हांगकांग, चीन को 137 रन से करारी शिकस्त दी। इस जीत के साथ भारत ने टूर्नामेंट के सेमीफाइनल में अपनी जगह पक्की कर ली है। यह टीम इंडिया की लगातार दूसरी जीत है। इससे पहले भारत ने थाईलैंड को हराया था।

दुबई में खेले गए मुकाबले में भारत ने पहले बल्लेबाजी करते हुए पांच विकेट पर 193 रन बनाए। स्मृति मंधाना ने महज 57 गेंदों में शतक पूरा करते हुए 124 रन की तूफानी पारी खेली। यह उनका टी20 अंतर्राष्ट्रीय करियर का दूसरा शतक है। मंधाना ने अपनी इस पारी के दौरान कई रिकॉर्ड अपने नाम किए और महिला अंतर्राष्ट्रीय क्रिकेट में सर्वाधिक रन बनाने के मामले में मिताली राज को पीछे छोड़ दिया। उनके नाम महिला क्रिकेट में अब 18 शतक हो गए हैं।

मंधाना और शेफाली वर्मा ने पहले विकेट के लिए 74 रन जोड़े। शेफाली 28 रन बनाकर आउट हुईं। इसके बाद भारतीय बल्लेबाजी लड़खड़ा गई और कोई अन्य बल्लेबाज 20 रन का आंकड़ा पार नहीं कर सका। प्रतिका रावल ने 10, ऋचा घोष ने 11 और हरमनप्रीत कौर ने 10 रन बनाए।

लक्ष्य का पीछा करने उतरी हांगकांग की टीम भारतीय गेंदबाजों के सामने पूरी तरह बेबस नजर

आई और 16.2 ओवर में महज 56 रन पर ढेर हो गई। दीप्ति शर्मा ने तीन विकेट लेकर इतिहास रचा। वह महिला टी20 अंतर्राष्ट्रीय क्रिकेट में सर्वाधिक विकेट लेने वाली गेंदबाज बन गई हैं। नंदिनी शर्मा, श्री चरणी और प्रेमा रावत ने भी दो-दो विकेट चटकाए।

भारत ने 137 रन की बड़ी जीत के साथ सेमीफाइनल का टिकट हासिल कर लिया।

दलीप ट्रॉफी फाइनल : साउथ जोन को वैभव व शमी का खौफ

जन जन विचार
...✍ चेन्नई

दलीप ट्रॉफी 2026 के फाइनल से पहले साउथ जोन ने अपनी टीम को और मजबूत कर लिया है। 6 सितंबर से चेन्नई के एमए चिदंबरम स्टेडियम में होने वाले खिताबी मुकाबले के लिए केएल राहुल, मोहम्मद सिराज और देवदत्त पडिक्कल को साउथ जोन के दल में शामिल किया गया है। बताया जा रहा है कि बीसीसीआई और राष्ट्रीय चयनकर्ताओं ने अंतर्राष्ट्रीय ड्यूटी से फिलहाल मुक्त इन खिलाड़ियों को फाइनल खेलने के निर्देश दिए हैं।

ईस्ट जोन की टीम में अनुभवी तेज गेंदबाज मोहम्मद शमी के अलावा युवा बल्लेबाजी सनसनी वैभव सूर्यवंशी और आक्रामक बल्लेबाज ईशान किशन जैसे खिलाड़ी मौजूद हैं। ऐसे में साउथ जोन ने मुकाबले को देखते हुए अपनी टीम में अंतर्राष्ट्रीय अनुभव और मजबूती बढ़ाने का फैसला किया है। हालांकि, फाइनल में कुछ खिलाड़ियों की उपलब्धता अभी स्पष्ट नहीं है। साउथ जोन के कप्तान तिलक वर्मा ने सेमीफाइनल में शानदार प्रदर्शन किया था, लेकिन अफगानिस्तान के खिलाफ 13 सितंबर से शुरू होने वाली टी20 अंतर्राष्ट्रीय सीरीज के लिए उनके चयन के कारण उनके खेलने पर संशय है। ईशान किशन और वैभव सूर्यवंशी की उपलब्धता भी इसी वजह से अनिश्चित बनी हुई है। सूत्रों के मुताबिक, यदि भारतीय टीम प्रबंधन इन खिलाड़ियों को 10 सितंबर की शाम तक दिल्ली पहुंचने की अनुमति देता है, तभी वे फाइनल में खेल सकेंगे। हालांकि, इस संबंध में अभी आधिकारिक घोषणा नहीं हुई है।

हिंदी साहित्य का स्वर्णिम संयोग : सियाराम शरण गुप्त और आचार्य नंद दुलारे वाजपेयी

जन जन विचार

...✍ डॉ मुकेश कुमार

4 सितंबर : साहित्यकारद्वय की जयंती पर विशेष

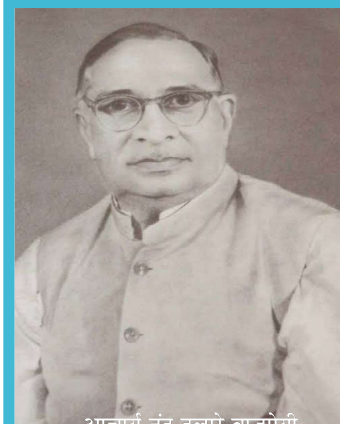

आचार्य नंद दुलारे वाजपेयी

सियाराम शरण गुप्त

भारतीय साहित्य और संस्कृति के इतिहास में 4 सितंबर की तिथि अत्यंत गौरवमयी और पुण्यमयी है। यह वह पावन दिन है जब हिंदी साहित्य जगत् को दो ऐसी महान विभूतियां प्राप्त हुईं, जिन्होंने अपनी लेखनी, चिंतन और विचारशीलता से संपूर्ण समाज को दिशा दी। एक ओर जहां मैथिलीशरण गुप्त के अनुज राष्ट्रप्रेमी कवि सियाराम शरण गुप्त ने अपनी सहज, करुणापूर्ण और गांधीवादी संवेदना से काव्य धारा को सींचा, वहीं दूसरी ओर आचार्य नंद दुलारे वाजपेयी ने अपनी सूक्ष्म, तलस्पर्शी और निष्पक्ष आलोचना दृष्टि से हिंदी साहित्य को परिपक्वता और सैद्धांतिक संबल प्रदान किया। यद्यपि दोनों साहित्यकारों की विधाएं और कार्यक्षेत्र भिन्न रहे हैं परंतु एक सृजन के आत्मीय धरातल पर प्रतिष्ठित थे। जबकि दूसरे मूल्यांकन और विश्लेषणात्मक चिंतन के शिखर पर हैं किंतु दोनों की आत्मा में भारतीयता, सत्य, सौंदर्य और सांस्कृतिक चेतना का एक ही पावन दीपक प्रज्ज्वलित था। 4 सितंबर को इन दोनों युगांतरकारी मनीषियों की जयंती पर उनका स्मरण करना वस्तुत: हिंदी भाषा की उस समृद्ध परंपरा को नमन करना है, जिसने भारतीय स्वाधीनता संग्राम और स्वाधीन्योत्तर भारत के नैतिक निर्माण राष्ट्रीय चेतना में अनुपम योगदान दिया।

सियाराम शरण गुप्त का जन्म 4 सितंबर सन् 1895 को झांसी के चिरगांव में हुआ था। साहित्यिक और राष्ट्रप्रेमी संस्कारों की छांव में पले-बढ़े सियाराम शरण जी पर अपने ज्येष्ठ भ्राता राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त का गहरा प्रभाव था, परंतु उन्होंने काव्य-सृजन के क्षेत्र में अपनी एक सर्वथा स्वतंत्र और मौलिक पहचान बनाई। उनके काव्य का मूल स्वर अहिंसा, करुणा, आत्म-त्याग और विश्व-बंधुत्व का है। महात्मा गांधी के दर्शन ने उनके अंतर्मन को गहराई से स्पर्श किया था, यही कारण है कि उनकी रचनाओं में गांधीवादी मूल्यों की अत्यंत स्वाभाविक और मर्मस्पर्शी अभिव्यक्ति मिलती है। *अनाथ, आर्द्रा, दूर्वादल, विषाद, पाथेय, मृणमयी, आत्मोत्सर्ग* और *बापू* जैसी उनकी अमर कृतियां हिंदी साहित्य की अनुपम निधि हैं। 'अनाथ' खंडकाव्य में जहां उन्होंने ग्रामीण जीवन की विषमताओं, दीनता और उस पर छाई करुणा को रेखांकित किया, वहीं 'पाथेय' और 'दूर्वादल' में उनकी राष्ट्रीय चेतना अत्यंत प्रखर होकर सामने आई। 'मौर्य विजय' में उन्होंने ऐतिहासिक पृष्ठभूमि के माध्यम से शौर्य और सांस्कृतिक चेतना का जो बिंब खींचा है, वह आज भी पाठक को उद्वेलित करता है।

सियाराम शरण गुप्त केवल एक कवि ही नहीं थे, बल्कि उन्होंने 'गोद', 'अंतिम आकांक्षा' और 'नारी' जैसे संवेदनात्मक उपन्यासों के माध्यम से हिंदी गद्य को भी नई ऊंचाइयों पर लेकर खड़ा किया। उनका गद्य उनके काव्य की भांति ही शांत, संयत और अंतर्मुखी है। वे किसी आक्रामक वैचारिक क्रांति के कवि नहीं थे, बल्कि वे मन परिवर्तन और आत्म-शुद्धि के माध्यम से समाज सुधार के पक्षधर थे। उनकी रचनाओं में जो करुणा और आर्द्रता पाई जाती है, वह पाठक के हृदय को बिना किसी आडंबर के सीधे छू लेती है। उनका मानना था कि सच्चा साहित्य वही है जो मनुष्य के भीतर छिपी हुई पशुता का शमन करे और उसमें देवत्व तथा मानवीय संवेदनाओं का बीजारोपण करे। स्वाधीनता आंदोलन के दौर में जब देश मानसिक और राजनीतिक उथल-पुथल से गुजर रहा था, तब सियाराम शरण गुप्त की कविताएं देशवासियों के लिए शांत शीतल जल के समान थी, जो उन्हें संबल देती थी और नैतिक मूल्यों से जोड़े रखती थी।

उसी 4 सितंबर के पावन दिन, वर्ष 1906 में उत्तर प्रदेश के उन्नाव जिले के मगरायर गांव में आचार्य नंद दुलारे वाजपेयी का जन्म हुआ, जिन्होंने आगे चलकर हिंदी समीक्षा शास्त्र को एक नया आयाम और नई दिशा दी। जिस समय हिंदी आलोचना मुख्य रूप से शास्त्रीयता, इतिवृत्तात्मकता और बाह्य नियमों में बंधी हुई थी, उस समय आचार्य नंद दुलारे वाजपेयी ने साहित्य के आंतरिक सौंदर्य और उसकी सहज संवेदना को पहचानने का युगप्रवर्तक कार्य किया। वे हिंदी साहित्य के 'छायावादी युग' के सबसे प्रामाणिक, समर्थ और सहृदय व्याख्याता माने जाते हैं। जब छायावाद की नई और सूक्ष्म रहस्यवादी कविता को पुराने ढर्रे के आलोचक समझ नहीं पा रहे थे और उसे 'अस्पष्ट' या 'असंयत' कहकर खारिज कर रहे थे, तब वाजपेयी जी ने जयशंकर प्रसाद, सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' और सुमित्रानंदन पंत की रचनाधर्मिता को गहराई से समझा और छायावाद को हिंदी साहित्य के इतिहास में उसका सर्वोच्च स्थान दिलाया। आचार्य नंद दुलारे वाजपेयी की समीक्षा दृष्टि अत्यधिक निष्पक्ष, संतुलित और सौंदर्यवादी थी। उन्होंने साहित्य को किसी बने-बनाये राजनीतिक या सामाजिक पूर्वाग्रह के चश्मे से नहीं देखा, बल्कि साहित्य को उसकी संपूर्णता में मूल्यांकित किया। 'हिंदी साहित्य : बीसवीं शताब्दी', 'आधुनिक साहित्य', 'नया साहित्य : नए प्रश्न', 'जयशंकर प्रसाद' और 'कवि निराला' जैसी उनकी आलोचनात्मक पुस्तकें आज भी हिंदी समीक्षा के मानक ग्रंथ मानी जाती हैं। वाजपेयी जी का स्पष्ट मानना था कि आलोचना का मुख्य कार्य केवल दोष निकालना या प्रशंसा के पुल बांधना नहीं है, बल्कि कवि की मूल संवेदना तक पहुंचना और पाठक को उस रसानुभूति में सहभागी बनाना है। उन्होंने रस सिद्धांत को आधुनिक संदर्भों में पुनर्व्याख्यायित किया और भारतीय काव्यशास्त्र तथा आधुनिक समीक्षा पद्धतियों के बीच एक अभूतपूर्व समन्वय स्थापित किया। एक कुशल संपादक के रूप में 'भारत' पत्र और काशी नागरी प्रचारिणी सभा के माध्यम से उन्होंने अनेक नए लेखकों और आलोचकों की पीढ़ी को तैयार किया।

यदि इन दोनों विभूतियों के चिंतन और साहित्यिक योगदान की तुलनात्मक समीक्षा की जाए, तो हम पाते हैं कि सियाराम शरण गुप्त जहां साहित्य के 'सृजन' का प्रतीक हैं, वहीं आचार्य नंद दुलारे वाजपेयी उस सृजन के 'मूल्यांकन' और 'संरक्षण' का प्रतीक हैं। सियाराम जी ने जिस छायावादी और उत्तर-छायावादी कालखंड में अपने आत्मीय और भावुक गीतों तथा प्रबंध काव्यों की रचना की, वाजपेयी जी ने उसी दौर की साहित्यिक चेतना को अपनी गंभीर समीक्षाओं से दर्शन और शास्त्र का आधार प्रदान किया। एक ने अपनी रचनाशीलता से देश के स्वाभिमान और करुणा को जगाया, तो दूसरे ने अपनी बौद्धिक प्रखरता से हिंदी भाषा और साहित्य के सौंदर्यबोध को समृद्ध किया। दोनों की कार्यशैली में एक अद्भुत समानता यह थी कि दोनों ने ही अपनी-अपनी विधाओं में किसी भी प्रकार के आडंबर, उग्रता या संकीर्णता को स्थान नहीं दिया। गुप्त जी की कविता जितनी सरल और गहरी थी, वाजपेयी जी की समीक्षा भी उतनी ही पारदर्शी और तर्कसंगत थी।

आज के इस दौर में जब साहित्य और समाज दोनों ही तेजी से बदलते मूल्यों और बाजारीकरण दबावों का सामना कर रहे हैं, सियाराम शरण गुप्त और आचार्य नंद दुलारे वाजपेयी का साहित्य एवं दर्शन हमारे लिए और अधिक प्रासंगिक हो जाता है। सियाराम जी का साहित्य हमें सिखाता है कि कठिन से कठिन समय में भी मनुष्यता, अहिंसा और करुणा का मार्ग नहीं छोड़ना चाहिए। उनकी कविताएं हमें अपनी जड़ों, अपनी माटी और अपने निर्बल भाइयों के प्रति संवेदनशील होना सिखाती हैं। दूसरी ओर, आचार्य नंद दुलारे वाजपेयी की समीक्षा दृष्टि हमें यह पाठ पढ़ाती है कि साहित्य और कला का मूल्यांकन स्वतंत्र, तटस्थ और गहन अध्ययन के आधार पर ही किया जाना चाहिए, किसी क्षणिक बहकावे या राजनीतिक दबाव में आकर नहीं।

4 सितंबर की तिथि केवल दो महान साहित्यकारों के जन्म का दिन नहीं है, बल्कि यह हिंदी साहित्य के उस स्वर्ण काल का उत्सव मनाने का दिन है, जब एक ओर रचना अपने सर्वोच्च नैतिक और संवेदनात्मक शिखर पर थी, तो दूसरी ओर आलोचना अपने संपूर्ण सौंदर्यशास्त्र और विवेक के साथ विद्यमान थी। सियाराम शरण गुप्त जी की अमर रचनाशीलता और आचार्य नंद दुलारे वाजपेयी जी की अद्वितीय आलोचनात्मक प्रज्ञा हमेशा हिंदी जगत् का मार्गदर्शन करती रहेगी। इन दोनों महान लेखकों की जयंती पर उन्हें कोटि-कोटि नमन करते हुए हमें उनके विचारों, आदर्शों और साहित्य के प्रति उनकी अनन्य निष्ठा को अपने जीवन और रचनाधर्मिता में उतारने का संकल्प लेना चाहिए।

সাপ্তাহিক
ৰাইজৰ কথা ৰাইজৰ মাজলৈ
জন জন বিচাৰ
Guwahati, 4 September, 2026 Friday :: শুক্ৰবাৰ, ভাদ, কৃষ্ণ পক্ষ, অষ্টমী, শকাব্দ ১৯৪৮

নগাঁও উপ-নিৰ্বাচনঃ কংগ্ৰেছ-ৰাইজৰ দলৰ সম্পৰ্কচ্ছেদ

জন জন বিচাৰ
...✍নগাঁও

নগাঁও বিধানসভা সমষ্টিৰ আগন্তুক উপ-নিৰ্বাচনৰ চূড়ান্ত প্ৰতিদ্বন্দ্বিতাৰ ছবি এতিয়াও স্পষ্ট হোৱা নাই। কিন্তু নিৰ্বাচনৰ পূৰ্বেই ৰাজনৈতিক সমীকৰণ সলনি হ'বলৈ আৰম্ভ কৰিছে। বৃহস্পতিবাৰে কংগ্ৰেছে ৰাইজৰ দলৰ সৈতে সকলো ৰাজনৈতিক সম্পৰ্ক আনুষ্ঠানিকভাৱে ছেদ কৰাৰ সিদ্ধান্ত লোৱাত বিৰোধী শিবিৰৰ ভোটৰ অংকক লৈ নতুনকৈ অনিশ্চয়তা সৃষ্টি হৈছে।

অসম প্ৰদেশ কংগ্ৰেছ কমিটীয়ে ৰাইজৰ দলৰ নেতৃত্বৰ বিৰুদ্ধে মিত্ৰতাৰ নীতি-নিয়ম বাৰে বাৰে উলংঘা কৰাৰ অভিযোগ উত্থাপন কৰি এই সিদ্ধান্ত গ্ৰহণ কৰিছে। বিধানসভাৰ বিৰোধী দলপতি ৱাজিদ আলী চৌধুৰীয়ে কয় যে ৰাইজৰ দলৰ সভাপতি অখিল গগৈয়ে কংগ্ৰেছ আৰু দলটোৰ নেতাসকলক ধাৰাবাহিকভাৱে সমালোচনা কৰি অহাৰ বাবেই দুয়োটা দলৰ সম্পৰ্কত দীৰ্ঘদিন ধৰি টানাপোড়েন চলি আছিল।

এই বিচ্ছেদৰ প্ৰভাৱ নগাঁও উপ-নিৰ্বাচনত কিমান পৰিব, সেয়াই এতিয়া ডাঙৰ প্ৰশ্ন। ৰাইজৰ দলে নগাঁৱত নিজা প্ৰাৰ্থী প্ৰক্ষেপ কৰিব নে নাই, সেই সিদ্ধান্ত এতিয়াও লোৱা নাই। অৱশ্যে কংগ্ৰেছৰ সৈতে আনুষ্ঠানিক সম্পৰ্কচ্ছেদে দলটোক নিজৰ ৰাজনৈতিক কৌশল নিৰ্ধাৰণৰ ক্ষেত্ৰত অধিক স্বাধীনতা দিছে।

ইফালে কংগ্ৰেছেও এতিয়াও প্ৰাৰ্থীৰ নাম ঘোষণা কৰা নাই। প্ৰদেশ কংগ্ৰেছৰ সভাপতি গৌৰৱ গগৈয়ে উপ-নিৰ্বাচনত দলটো জয়ী হোৱাৰ ক্ষেত্ৰত আত্মবিশ্বাস প্ৰকাশ কৰিছে। আনহাতে, এআইইউডিএফেও নিজৰ প্ৰাৰ্থী সন্দৰ্ভত পুনৰ চিন্তা-চৰ্চা চলাইছে। পূৰ্বে ৰেজাউল কৰিম সৰকাৰক প্ৰাৰ্থী ঘোষণা কৰা দলটোৱে এতিয়া দলৰ সভাপতি বদৰুদ্দিন আজমলকো সম্ভাব্য প্ৰাৰ্থী হিচাপে বিবেচনা কৰা বুলি চৰ্চা চলিছে।

১,২০০ বছৰীয়া নেঘেৰিটিং শিৱ দৌলত মুখ্যমন্ত্ৰী হিমন্ত বিশ্ব শৰ্মা

জন জন বিচাৰ
...✍গোলাঘাট

অসমৰ মুখ্যমন্ত্ৰী ডঃ হিমন্ত বিশ্ব শৰ্মাই বৃহস্পতিবাৰে গোলাঘাট জিলাৰ ঐতিহাসিক নেঘেৰিটিং শিৱ দৌল পৰিদৰ্শন কৰি পূজা-অৰ্চনা কৰে। প্ৰায় ১,২০০ বছৰ ধৰি আস্থা আৰু আধ্যাত্মিকতাৰ কেন্দ্ৰ হিচাপে পৰিচিত এই প্ৰাচীন মন্দিৰৰ ভক্ত আৰু পৰ্যটকৰ বাবে থকা বিভিন্ন সুবিধাৰো তেওঁ পৰ্যালোচনা কৰে।

মুখ্যমন্ত্ৰীগৰাকীয়ে ভগৱান শিৱৰ ওচৰত প্ৰাৰ্থনা জনাই সকলোৰে মংগল কামনা কৰে। তেওঁ কয় যে নেঘেৰিটিং শিৱ দৌল অসমৰ গৌৰৱময় ঐতিহ্যৰ এক গুৰুত্বপূৰ্ণ অধ্যায়।

দেৰগাঁৱৰ ওচৰৰ এটা পাহাৰৰ ওপৰত অৱস্থিত নেঘেৰিটিং শিৱ দৌল অসমৰ অন্যতম প্ৰাচীন ঐতিহাসিক মন্দিৰ। মূল মন্দিৰটো ভগৱান শিৱৰ নামত উৎসৰ্গিত আৰু ই পঞ্চায়তন শৈলীত নিৰ্মিত। মূল মন্দিৰৰ চাৰিওফালে বিষ্ণু, গণেশ, সূৰ্য আৰু দুৰ্গাৰ নামত চাৰিটা সৰু মন্দিৰ আছে।

গোলাঘাট জিলা প্ৰশাসনৰ তথ্য অনুসৰি, অষ্টম-নৱম শতিকাত কছাৰীসকলে মূল মন্দিৰটো নিৰ্মাণ কৰিছিল বুলি বিশ্বাস কৰা হয়। প্ৰাকৃতিক দুৰ্যোগত মন্দিৰটো ধ্বংস হোৱাৰ পিছত আহোম ৰজা স্বৰ্গদেউ ৰাজেশ্বৰ সিংহৰ ৰাজত্বকালত ১৭৬৫ চনত পুনৰ নিৰ্মাণ কৰা হয়। আহোম যুগৰ প্ৰখ্যাত স্থপতি ঘনশ্যাম খনিকৰৰ সৈতে বৰ্তমানৰ মন্দিৰটোৰ পুনৰ্নিৰ্মাণৰ ইতিহাস জড়িত।

মন্দিৰৰ গৰ্ভগৃহত প্ৰায় তিনি ফুট ব্যাসৰ এটা বৃহৎ বাণলিংগ আছে বুলি জনা যায়। ঐতিহাসিক আৰু আধ্যাত্মিক গুৰুত্বৰ বাবে নেঘেৰিটিং শিৱ দৌললৈ বছৰজুৰি বহু ভক্ত আৰু পৰ্যটকৰ আগমন ঘটে।

মুখ্যমন্ত্ৰীৰ এই পৰিদৰ্শনে প্ৰাচীন মন্দিৰটোৰ ঐতিহ্য সংৰক্ষণৰ লগতে ভক্ত আৰু পৰ্যটকৰ সুবিধা উন্নত কৰাৰ ক্ষেত্ৰত চৰকাৰৰ গুৰুত্বক পুনৰ স্পষ্ট কৰিলে।

নাগালেণ্ড বিধানসভাত 'বন্দে মাতৰম'ক লৈ তীব্ৰ বিতৰ্ক

জন জন বিচাৰ
...✍ক'হিমা

'বন্দে মাতৰম' বাধ্যতামূলকভাৱে গোৱাৰ বিৰুদ্ধে নাগা ছাত্ৰ ফেডাৰেচনে আৰম্ভ কৰা আন্দোলনে বৃহস্পতিবাৰে দ্বিতীয় দিনত ভৰি দিলে। ইফালে বিষয়টো নাগালেণ্ড বিধানসভাতো উত্থাপিত হোৱাত ৰাজ্যখনত নতুনকৈ বিতৰ্কৰ সৃষ্টি হৈছে। সংবিধানৰ অনুচ্ছেদ ৩৭১(A)-ৰ অধীনত নাগালেণ্ডৰ বিশেষ অধিকাৰ আৰু পৰম্পৰাগত ব্যৱস্থাৰ প্ৰেক্ষাপটত বিষয়টোৰ আইনগত দিশ পুনৰীক্ষণ কৰাৰ কথা চৰকাৰে প্ৰকাশ কৰিছে।

বিধানসভাৰ বাহিৰত প্ৰতিবাদ সাব্যস্ত কৰি নাগা ছাত্ৰ ফেডাৰেচনৰ সদস্যসকলে বিভিন্ন খ্ৰীষ্টীয় ধৰ্মীয় গীত গাই কেন্দ্ৰীয় চৰকাৰৰ বাধ্যতামূলক গায়নৰ সিদ্ধান্তৰ বিৰোধিতা কৰে। সংগঠনটোৱে স্পষ্ট কৰি দিছে যে নাগালেণ্ড বিধানসভাই 'বন্দে মাতৰম' বাধ্যতামূলকভাৱে গোৱাৰ বিৰুদ্ধে প্ৰস্তাৱ গ্ৰহণ নকৰালৈকে আন্দোলন অব্যাহত থাকিব।

বিধানসভাৰ শূন্যকালত বিষয়টো উত্থাপন কৰি এনপিএফৰ বিধায়ক তথা নাগা ছাত্ৰ ফেডাৰেচনৰ প্ৰাক্তন সভাপতি আচুম্বেমো কিকনে কয় যে এই আন্দোলন কোনো এটা সমষ্টিৰ বিষয় নহয়; ই সমগ্ৰ ৰাজ্যখনৰ সৈতে জড়িত। মুখ্যমন্ত্ৰী নেইফিউ ৰিঅ'ৰ নেতৃত্বাধীন চৰকাৰে বিধায়ক, গীৰ্জা, নাগৰিক সমাজ, জনজাতীয় সংগঠন আৰু ছাত্ৰ সংগঠনসমূহৰ মতামতক গুৰুত্বসহকাৰে লৈছে বুলিও তেওঁ উল্লেখ কৰে।

কিকনে কয় যে কেন্দ্ৰীয় গৃহ মন্ত্ৰালয়ে ২৮ জানুৱাৰীত জাৰি কৰা নিৰ্দেশ অনুসৰি ৰাষ্ট্ৰীয় অনুষ্ঠানত গুৰুত্বপূৰ্ণ বিশিষ্ট ব্যক্তিৰ আগমনৰ সময়ত 'বন্দে মাতৰম' গোৱাৰ ব্যৱস্থা কৰা হৈছিল। ইয়াৰ ভিতৰত বিধানসভালৈ ৰাজ্যপালৰ আগমনো অন্তৰ্ভুক্ত আছিল।

এই বিষয়টো অনুচ্ছেদ ৩৭১(A)ৰ প্ৰেক্ষাপটত নাগালেণ্ডত সংসদে প্ৰণয়ন কৰা আইনসমূহ প্ৰযোজ্য হয় নে নহয়, সেয়া পৰীক্ষা কৰিবলৈ গঠন কৰা সমিতিৰ ওচৰলৈ প্ৰেৰণ কৰা হৈছিল। সংসদীয় পৰিক্ৰমা মন্ত্ৰী কে জি কেনেৰ নেতৃত্বত গঠিত সমিতিখনে মে' আৰু জুন মাহত দুবাৰকৈ বৈঠক অনুষ্ঠিত কৰিছিল।

কিন্তু ২০২৬ চনৰ ৰাষ্ট্ৰীয় সন্মান অৱমাননা প্ৰতিৰোধ সংশোধনী আইনত ৰাষ্ট্ৰপতিৰ অনুমোদন লাভ কৰাৰ পিছত বিষয়টোৰ আইনগত পৰিস্থিতি সলনি হোৱা বুলি কেনেই বিধানসভাত কয়। তেওঁৰ মতে, পূৰ্বে এই ব্যৱস্থা কেৱল চৰকাৰী নিৰ্দেশৰ ওপৰত নিৰ্ভৰশীল আছিল যদিও সংসদে আইন প্ৰণয়ন কৰাৰ পিছত ইয়াৰ আইনী মৰ্যাদা সলনি হৈছে। ভাৰতৰ চৰকাৰী ৰাজপত্ৰত আইনখন প্ৰকাশ পোৱাৰ পিছত সমিতিখনে ইয়াৰ বিধানসমূহ পুনৰীক্ষণ কৰি বিধানসভাত প্ৰতিবেদন দাখিল কৰিব।

চৰকাৰে নাগা ছাত্ৰ ফেডাৰেচনক আন্দোলন প্ৰত্যাহাৰ কৰিবলৈ আহ্বান জনাইছে। কিন্তু ছাত্ৰ সংগঠনটোৱে নিজৰ দাবীত অটল থাকি বিধানসভাই বিৰোধী প্ৰস্তাৱ গ্ৰহণ নকৰালৈকে আন্দোলন অব্যাহত ৰখাৰ কথা ঘোষণা কৰিছে।

ইফালে নাগালেণ্ডৰ একমাত্ৰ লোকসভা সাংসদ এছ ছুপংমেৰেন জামিৰে প্ৰতিবাদস্থলী পৰিদৰ্শন কৰি আন্দোলনকাৰী ছাত্ৰসকলৰ প্ৰতি সমৰ্থন প্ৰকাশ কৰে। তেওঁ বিষয়টো কেন্দ্ৰীয় চৰকাৰৰ ওচৰত উত্থাপন কৰাৰ আশ্বাস দিয়ে।

'বন্দে মাতৰম'ক লৈ সৃষ্টি হোৱা এই বিতৰ্ক এতিয়া কেৱল গান গোৱাৰ বিষয় হৈ থকা নাই; নাগালেণ্ডৰ বিশেষ সাংবিধানিক অধিকাৰ, ধৰ্মীয় অনুভূতি আৰু কেন্দ্ৰ—ৰাজ্য সম্পৰ্কৰ এক গুৰুত্বপূৰ্ণ বিষয়লৈ পৰিণত হৈছে।

হাটীগাঁৱৰ হোটেলত আৰক্ষীৰ অভিযান, চাইবাৰ অপৰাধৰ সন্দেহত তিনিজন আটক

জন জন বিচাৰ
...✍গুৱাহাটী

মহানগৰীৰ হাটীগাঁওস্থিত সিজুবাৰীৰ হোটেল ষ্টাৰ ইনত গুৱাহাটী আৰক্ষীয়ে অভিযান চলাই চাইবাৰ অপৰাধৰ সৈতে জড়িত থকাৰ সন্দেহত তিনিজন লোকক আটক কৰি সোধা-পোছা কৰে।

স্থানীয় বাসিন্দাসকলে হোটেলখনত থকা কেইজনমান লোকৰ সন্দেহজনক গতিবিধি লক্ষ্য কৰি আৰক্ষীক খবৰ দিয়াৰ পিছতে এই অভিযান চলোৱা হয়। অভিযানৰ সময়ত হোটেলত থকা তিনিজন লোকক আৰক্ষীয়ে জিম্মাত লৈ তেওঁলোকৰ পৰিচয়, গতিবিধি আৰু অনলাইন কাৰ্যকলাপৰ বিষয়ে সোধা-পোছা কৰে।

ইয়াৰ উপৰি তদন্তৰ অংশ হিচাপে হোটেলখনৰ পৰিচালক আৰু কেইবাজনো কৰ্মচাৰীকো আৰক্ষীয়ে সোধা-পোছাৰ বাবে আটক কৰে।

আৰক্ষীৰ সূত্ৰ অনুসৰি, আটকাধীন লোককেইজনৰ কোনো চাইবাৰ অপৰাধী চক্ৰৰ সৈতে সম্পৰ্ক আছে নেকি, সেই বিষয়ে তদন্ত চলি আছে। তেওঁলোকৰ পৰিচয় আৰু হোটেলত থকাৰ উদ্দেশ্যও পৰীক্ষা কৰা হৈছে।

ঘটনাটোৰ সন্দৰ্ভত আৰক্ষীৰ তদন্ত অব্যাহত আছে আৰু অধিক তথ্য পৰৱৰ্তী সময়ত প্ৰকাশ পোৱাৰ সম্ভাৱনা আছে।

কংগ্ৰেছ বিধায়কৰ বাসগৃহৰ গেটত বোমা বিস্ফোৰণ

জন জন বিচাৰ
...✍ইম্ফল

মণিপুৰৰ থৌবাল জিলাৰ ইয়াইৰিপকৰ বিষ্ণুনাহাত কংগ্ৰেছ বিধায়ক কেইশাম মেঘচন্দ্ৰ সিঙৰ বাসগৃহৰ গেটৰ ওচৰত বৃহস্পতিবাৰে নিশা সন্দেহযুক্ত হেণ্ড গ্ৰেনেড বিস্ফোৰণৰ ঘটনাই তীব্ৰ চাঞ্চল্যৰ সৃষ্টি কৰিছে। আৰক্ষীৰ মতে, নিশা প্ৰায় ৮.১৫ বজাত কোনো অচিনাক্ত ব্যক্তিয়ে বিধায়কগৰাকীৰ বাসগৃহ লক্ষ্য কৰি বিস্ফোৰক নিক্ষেপ কৰাৰ সন্দেহ কৰা হৈছে। বিস্ফোৰণটো বাসগৃহৰ প্ৰৱেশদ্বাৰৰ ওচৰত সংঘটিত হয়। অৱশ্যে ঘটনাটোত কোনো লোক হতাহত হোৱা নাই। বিস্ফোৰণৰ পিছতে আৰক্ষীৰ দল ঘটনাস্থলীত উপস্থিত হৈ সমগ্ৰ অঞ্চলটো ঘেৰাও কৰি তালাচী অভিযান আৰম্ভ কৰে।

আক্ৰমণৰ আঁৰত কোন আছে আৰু কি উদ্দেশ্যেৰে বিধায়কগৰাকীৰ বাসগৃহ লক্ষ্য কৰা হৈছিল, সেয়া এতিয়াও স্পষ্ট হোৱা নাই। আৰক্ষীয়ে ঘটনাস্থলীৰ লগতে ইয়াৰ আশে-পাশে থকা অঞ্চলতো ব্যাপক অনুসন্ধান চলাইছে।

ঘটনাটোক লৈ অঞ্চলটোত নিৰাপত্তা ব্যৱস্থা কটকটীয়া কৰা হৈছে। আক্ৰমণকাৰীৰ পৰিচয় আৰু বিস্ফোৰণৰ উদ্দেশ্য উদঘাটনৰ বাবে আৰক্ষীয়ে তদন্ত অব্যাহত ৰাখিছে। ঘটনাটোৰ সৈতে জড়িত অধিক তথ্য তদন্তৰ পিছত পোহৰলৈ অহাৰ সম্ভাৱনা আছে।

এই সপ্তাহৰ ৰাশিফল

৪ ছেপ্তেম্বৰ, ২০২৬ৰ পৰা ১০ ছেপ্তেম্বৰ, ২০২৬লৈ

মেষ : অদৰকাৰী সাহস পৰাক্ৰম প্ৰদৰ্শনৰ পৰা বিৰত থাকক। কৰ্মক্ষেত্ৰৰ পৰা সুফল লাভ। মানসিক অস্থিৰতা বৃদ্ধি হব পাৰে।

বৃষ: চেষ্টা সাহস পৰাক্ৰম বৃদ্ধি। বৈদেশিক কৰ্ম্মৰ লগত জৰিত ক্ষেত্ৰৰ পৰা ধন লাভ। ভাগ্যৰ সহায় লাভ।

মিথুন: অৰ্থিক ক্ষেত্ৰত শুভ ফল লাভ। মানসিক অস্থিৰতা বৃদ্ধি। অদৰকাৰী কথাত প্ৰতিযোগিতাৰ পৰা বিৰত থাকক।

কৰ্কট: অদৰকাৰী আত্মবিশ্বাসৰ ফলত মানসিক অশান্তি আহিব পাৰে। ধৰ্মীয় ক্ষেত্ৰত মনোনিবেশ থাকিব।

সিংহ: কৰ্মক্ষেত্ৰত অস্থিৰতা বৃদ্ধি হব পাৰে। সাফল্য লাভৰ ক্ষেত্ৰত ভ্ৰমিত হব পাৰে। অৰ্থব্যয় বৃদ্ধি হব পাৰে।

কন্যা : ভাগ্যৰ সহায় লাভ। কৰ্মক্ষেত্ৰত অদৰ্কাৰী বাদ বিবাদৰ পৰা বিৰত থাকক। মানসিক অস্থিৰতা বৃদ্ধি।

তুলা: কৰ্মব্যস্ততা বৃদ্ধিৰ সম্ভাৱনা আছে। কৰ্মদক্ষতাৰ সুনাম অৰ্জন। ব্যৱসায় বাণিজ্যৰ ক্ষেত্ৰত শুভ।

বৃশ্চিক: মানসিক অস্থিৰতা থাকিব। পিতৃৰ শৰীৰ স্বাস্থ্যঞ্জযৰ প্ৰতি সচেতন হওক। দৈনন্দিন কাৰ্য্যঞ্জয় কলাপ ত আত্মবিশ্বাস বৃদ্ধি।

ধনু : বিপৰীত পৰিস্থিতিৰ পৰা লাভ। অদৰকাৰী বাদ বিবাদৰ পৰা বিৰত থাকক। পতি - পত্নীৰ মাজত মনোমালিন্য হব পাৰে।

মকৰ: ব্যৱসায় বাণিজ্যৰ ক্ষেত্ৰত শুভ। নিত্য নৈমত্তিক বাৰ্তা বিনিময়ৰ ক্ষেত্ৰত সাৱধানতা অৱলম্বন কৰিব। চেষ্টাৰ সফলতা লাভ।

কুম্ভ : কৰ্মদক্ষতাৰ সুনাম বৃদ্ধি। প্ৰতিযোগিতা মূলক কাৰ্য্যঞ্জয়ত সফলতা অৰ্জন। মানসিক উদ্বিগ্নতা বৃদ্ধি হব পাৰে।

মীন: চেষ্টাৰ সফলতা থাকিব। বিদ্যাৰ্থীৰ বাবে সপ্তাহটো শুভ। আকস্মিক অৰ্থ ব্যয়ৰ সম্ভাৱনা আছে।

-হিতেন শৰ্মা শাস্ত্ৰী
অধ্যাপক, বিশ্ব জ্যোতিষ বিদ্যাপীঠ, অসম শাখা
যোগাযোগ : ৯৮৫৪০২৬৭৭৯

৪জন গ্ৰেপ্তাৰক লৈ আৰক্ষীক উচ্চ ন্যায়ালয়ৰ ভৰৎসনা

শ শ লোকৰ বিৰুদ্ধে ভাঙচুৰ-আক্ৰমণৰ অভিযোগ জড়িত সকলোকে চিনাক্ত কৰি ব্যৱস্থা লোৱাৰ নিৰ্দেশ

জন জন বিচাৰ
...শিলং

শিলংত বাইক সমদলক কেন্দ্ৰ কৰি সংঘটিত হিংসাত্মক ঘটনাত মাত্ৰ চাৰিজন লোকক গ্ৰেপ্তাৰ কৰা বিষয়টোক লৈ মেঘালয় উচ্চ ন্যায়ালয়ে আৰক্ষীক তীব্ৰ প্ৰশ্ন কৰিছে। ঘটনাত শ শ লোক জড়িত থকাৰ অভিযোগ উত্থাপিত হোৱাৰ পাছতো তদন্তৰ পৰিসৰ আৰু অগ্ৰগতি সন্তোষজনক নহয় বুলি আদালতে অসন্তুষ্টি প্ৰকাশ কৰে।

মুখ্য ন্যায়াধীশ তেৱতী মহিতে ডেৰে আৰু ন্যায়াধীশ ডব্লিউ ডিয়েংদোহৰ দ্বৈত বিচাৰপীঠে স্বতঃপ্ৰণোদিত ৰাজহুৱা স্বাৰ্থজড়িত আবেদন শুনানি গ্ৰহণ কৰি হিংসাত জড়িত সকলো লোকক শীঘ্ৰে চিনাক্ত কৰাৰ নিৰ্দেশ দিয়ে।

আদালতক জনোৱা অনুসৰি, ঘটনাসমূহৰ সৈতে জড়িত হৈ মুঠ চচখন এজাহাৰ পঞ্জীয়ন কৰা হৈছে। ইয়াৰে শিলং সদৰ থানাত ৪খন, ৰিনজাহত ৯খন, মাওলাইত ৭খন আৰু লাইটুমখ্ৰা আৰু লুমডিয়েংজৰি থানাত এখনকৈ এজাহাৰ ৰুজু হৈছে।

আৰক্ষীয়ে আদালতক জনায় যে এই পৰ্যন্ত খাচি ছাত্ৰ সংঘৰ চাৰিজন নেতাক গ্ৰেপ্তাৰ কৰা হৈছে আৰু হিংসাত ব্যৱহাৰ কৰাৰ অভিযোগ থকা দুখন বাহন জব্দ কৰা হৈছে। লগতে আঠটা ম'বাইল ফোনৰ

কথোপকথন আৰু ২৭টা স্থানৰ পৰা সংগ্ৰহ কৰা নিৰাপত্তা কেমেৰাৰ দৃশ্য পৰীক্ষা কৰা হৈছে।

কিন্তু তদন্তৰ গতি আৰু পৰিসৰক লৈ আদালতে প্ৰশ্ন উত্থাপন কৰে। জিলা প্ৰশাসনে নিৰ্ধাৰণ কৰা চৰ্ত উলংঘা কৰাৰ অভিযোগ উত্থাপিত হোৱাৰ পিছতেই সমদলটো কিয় বন্ধ কৰা নহ'ল, সেই বিষয়েও বিচাৰপীঠে আৰক্ষীৰ পৰা জানিব বিচাৰে। সমদলটো আৰম্ভণিৰ স্থানৰ পৰা সম্পূৰ্ণৰূপে দৃশ্যগ্ৰহণ কৰা হৈছিল নে নাই আৰু জনসমাগমৰ হিংসাৰ ক্ষেত্ৰত উচ্চতম ন্যায়ালয়ে নিৰ্ধাৰণ কৰা নিৰ্দেশনা আৰক্ষীয়ে পালন কৰিছিল নে নাই, সেই বিষয়েও আদালতে প্ৰশ্ন কৰে। আৰক্ষীয়ে আক্ৰমণ, ভাঙচুৰ আৰু সম্পত্তিৰ ক্ষতি ৰোধ কৰিবলৈ সময়মতে হস্তক্ষেপ কৰিছিল নে নাই, সেই বিষয়েও আদালতে জবাবদিহি বিচাৰে।

বিচাৰপীঠে স্পষ্ট কৰি দিয়ে যে হিংসাত মানুহক আক্ৰমণ কৰা বা সম্পত্তি ধ্বংস কৰা কোনো লোকেই শাস্তিৰ পৰা সাৰি যাব নালাগে। ঘটনাত জড়িত সকলোকে অতি সোনকালে চিনাক্ত কৰি আইন অনুসৰি ব্যৱস্থা ল'বলৈ বিশেষ তদন্তকাৰী দলৰ মুৰব্বী আৰক্ষী মহাপৰিদৰ্শকক তাৎক্ষণিক পদক্ষেপ গ্ৰহণৰ নিৰ্দেশ দিয়া হয়। পৰৱৰ্তী শুনানি ৭ ছেপ্টেম্বৰত অনুষ্ঠিত হ'ব। সেইদিনা বিশেষ তদন্তকাৰী দলৰ মুৰব্বী আৰক্ষী মহাপৰিদৰ্শক, পূব খাচি পাহাৰ জিলাৰ আৰক্ষী অধীক্ষক আৰু শিলং সদৰ তথা লুমডিয়েংজৰি থানাৰ ভাৰপ্ৰাপ্ত বিষয়াসকলক আদালতত উপস্থিত থাকি তদন্তৰ অগ্ৰগতিৰ বিস্তৃত প্ৰতিবেদন দাখিল কৰিবলৈ নিৰ্দেশ দিয়া হৈছে।

নাগালেণ্ডত উদ্ধাৰ অসমৰ চুৰি হোৱা ২৭খন বাইক-স্কুটাৰ

জন জন বিচাৰ
...চৰাইদেউ

অসম আৰু নাগালেণ্ড আৰক্ষীৰ যুটীয়া অভিযানত নাগালেণ্ডৰ ম'ন জিলাৰ পৰা অসমৰ বিভিন্ন জিলাৰ পৰা চুৰি হোৱা ২৭খন মটৰচাইকেল আৰু স্কুটাৰ উদ্ধাৰ কৰা হৈছে। চৰাইদেউ আৰক্ষীয়ে নাগালেণ্ড আৰক্ষীৰ সহযোগত চলোৱা অভিযানত এইবাহনসমূহ জব্দ কৰে।

আৰক্ষীৰ সূত্ৰ অনুসৰি, উজনি অসমৰ বিভিন্ন জিলাৰ পৰা পৃথক পৃথক সময়ত চুৰি কৰা বাহনসমূহ নাগালেণ্ডলৈ নি ম'ন জিলাত বিক্ৰী কৰা হৈছিল। ম'ন জিলাৰ আৰক্ষী অধীক্ষক আৰু স্থানীয় আৰক্ষীৰ সহযোগত চলোৱা সমন্বিত অভিযানত বাহনসমূহ উদ্ধাৰ কৰা হয়।

প্ৰাথমিক তদন্তত প্ৰকাশ পাইছে যে বিভিন্ন কোম্পানী আৰু মডেলৰ এই দুচকীয়া বাহনসমূহ প্ৰথমে উজনি অসমৰ বিভিন্ন জিলাৰ পৰা চুৰি কৰা হৈছিল। তাৰ পিছত সেইবোৰ নাগালেণ্ডলৈ সৰবৰাহ কৰি ম'ন জিলাত বিক্ৰী কৰা হৈছিল।

উদ্ধাৰ হোৱা বাহনসমূহৰ মালিকীস্বত্ব আৰু নথিপত্ৰ পৰীক্ষা কৰাৰ পিছত সংশ্লিষ্ট জিলাৰ আৰক্ষীৰ জৰিয়তে প্ৰকৃত মালিকসকলক বাহনসমূহ ঘূৰাই দিয়াৰ ব্যৱস্থা কৰা হ'ব বুলি আৰক্ষীয়ে জানিবলৈ দিছে।

ইফালে তদন্তত আন এক চাঞ্চল্যকৰ তথ্য পোহৰলৈ আহিছে। আৰক্ষীৰ মতে, ম'ন জিলাত বৰ্তমানেও অসমৰ পৰা চুৰি হোৱা ১০০খনতকৈ অধিক মটৰচাইকেল চলি থকাৰ সম্ভাৱনা আছে।

চুৰি বাহনৰ সন্ধানত আৰক্ষীয়ে অভিযান অধিক তীব্ৰতৰ কৰাৰ লগতে ঘটনাটোৰ সৈতে জড়িত লোকসকলৰ সন্ধানো অব্যাহত ৰাখিছে। অধিক বাহন উদ্ধাৰ আৰু চুৰি চক্ৰটোৰ সম্পূৰ্ণ জাল উন্মোচনৰ বাবে তদন্ত অব্যাহত আছে।

অৰুণাচলৰ পেমা ৰাই কে লয়ীৰ ঐতিহাসিক কৃতিত্ব

জন জন বিচাৰ
...ইটানগৰ

অৰুণাচল প্ৰদেশৰ উদ্যোগী আৰু আইকনিক অটোম'বাইলছৰ পৰিচালন সঞ্চালক পেমা ৰাই কে লয়ীয়ে ৰাষ্ট্ৰীয় পৰ্যায়ত উত্তৰ-পূৰ্বাঞ্চলৰ গৌৰৱ বৃদ্ধি কৰিছে। তেওঁ ফেডাৰেচন অৱ অটোম'বাইল ডিলাৰ্ছ এছ'চিয়েশ্যনছ শচফাডা-ৰ মহিলা শাখা 'উইমেন ইন ফাডা'ৰ অধ্যক্ষ হিচাপে নিযুক্তি লাভ কৰিছে। এই পদত অধিষ্ঠিত হোৱা পূব আৰু উত্তৰ-পূৰ্বাঞ্চলৰ প্ৰথমগৰাকী মহিলা হিচাপে লয়ীয়ে নতুন ইতিহাস ৰচনা কৰিছে।

নতুন দিল্লীত অনুষ্ঠিত ফাডাৰ ৬৩সংখ্যক বাৰ্ষিক সাধাৰণ সভাত লয়ীৰ নিযুক্তি ঘোষণা কৰা হয়। ১৯৬৪ চনত প্ৰতিষ্ঠিত ফাডা দেশৰ অটোম'বাইল খণ্ডৰ খুচুৰা বিক্ৰী আৰু বিতৰণ ব্যৱসায়ৰ সৈতে

জড়িত প্ৰতিষ্ঠানসমূহৰ শীৰ্ষ সংগঠন। সংগঠনটোৰ অধীনত দেশজুৰি ১৫ হাজাৰৰো অধিক অটোম'বাইল বিক্ৰেতা প্ৰতিষ্ঠান আছে।

অৰুণাচল প্ৰদেশৰ উদ্যোগী লয়ীয়ে নিজৰ নেতৃত্বত আইকনিক অটোম'বাইলছক উত্তৰ-পূৰ্বাঞ্চলৰ অন্যতম আগশাৰীৰ অটোম'বাইল প্ৰতিষ্ঠান হিচাপে গঢ়ি তুলিছে। প্ৰতিষ্ঠানটোৱে অৰুণাচল প্ৰদেশত মহিন্দ্ৰা এণ্ড মহিন্দ্ৰাৰ যাত্ৰীবাহী আৰু বাণিজ্যিক বাহনৰ অনুমোদিত বিক্ৰেতা হিচাপে কাম কৰি আহিছে। ৰাজ্যখনৰ বিভিন্ন স্থানত প্ৰতিষ্ঠানটোৰ একাধিক বিক্ৰী কেন্দ্ৰ আৰু মেৰামতি সেৱা কেন্দ্ৰ আছে।

লয়ীৰ নেতৃত্বত ইটানগৰত স্থাপিত আইকনিক অটোম'বাইলছৰ এটা কেন্দ্ৰই ভাৰতৰ প্ৰথম সম্পূৰ্ণৰূপে মহিলাৰ দ্বাৰা পৰিচালিত মহিন্দ্ৰা বাহন বিক্ৰী কেন্দ্ৰ হিচাপে বিশেষ স্বীকৃতি লাভ কৰিছে। এই পদক্ষেপৰ জৰিয়তে পুৰুষপ্ৰধান বুলি পৰিচিত অটোম'বাইল খণ্ডত মহিলাৰ বাবে কৰ্মসংস্থাপন আৰু নেতৃত্বৰ সুযোগ সৃষ্টি কৰা হৈছে।

অটোম'বাইল ব্যৱসায়ত মহিলাৰ অধিক অংশগ্ৰহণৰ বাবে লয়ীয়ে দীৰ্ঘদিন ধৰি মাত মাতি আহিছে। ২০২৫ চনত অনুষ্ঠিত ফাডা অটোম'বাইল সন্মিলনতো তেওঁ 'উইমেন ইন ফাডা-সাহসেৰে নেতৃত্ব' শীৰ্ষক আলোচনাত অংশগ্ৰহণ কৰি অটোম'বাইল খণ্ডত মহিলাৰ নেতৃত্ব আৰু নিজৰ অভিজ্ঞতা সন্দৰ্ভত মত প্ৰকাশ কৰিছিল।

উদ্যোগ আৰু অটোম'বাইল খণ্ডলৈ আগবঢ়োৱা অৱদানৰ স্বীকৃতি হিচাপে ২০২৬ চনৰ আগষ্ট মাহত নতুন দিল্লীত অনুষ্ঠিত নৱম ইটি অটোম'বাইল খুচুৰা মঞ্চত তেওঁ 'উইমেন ট্ৰেন্সফৰ্মিং অটো ৰিটেইল শচইষ্ট' বঁটা লাভ কৰে। ইয়াৰ পূৰ্বে ২০২৫ চনত বেংক অৱ বৰোদাইও উত্তৰ-পূৰ্বাঞ্চলৰ আগশাৰীৰ মহিলা উদ্যোগী হিচাপে লয়ীক সন্মানিত কৰিছিল।

নতুন দায়িত্ব গ্ৰহণ কৰি লয়ীয়ে কয় যে অটোম'বাইল বিক্ৰেতা ব্যৱস্থাত মহিলাৰ অংশগ্ৰহণ অধিক শক্তিশালী কৰাৰ লগতে নেতৃত্ব আৰু উদ্যোগ গ্ৰহণৰ ক্ষেত্ৰত মহিলাসকলৰ বাবে অধিক সুযোগ সৃষ্টি কৰাই তেওঁৰ মূল লক্ষ্য হ'ব।

অৰুণাচল প্ৰদেশৰ পৰা আৰম্ভ হোৱা পেমা ৰাই কে লয়ীৰ উদ্যোগী যাত্ৰাই ৰাষ্ট্ৰীয় নেতৃত্বৰ পৰ্যায়ত উপনীত হোৱাটোৱে উত্তৰ-পূৰ্বাঞ্চলৰ উদ্যোগীসকলৰ ক্ৰমবৰ্ধমান প্ৰভাৱ আৰু অটোম'বাইল খণ্ডত মহিলাৰ বৰ্ধিত ভূমিকাৰ এক উল্লেখযোগ্য নিদৰ্শন দাঙি ধৰিছে।

সম্পাদকীয়

জলবায়ু বিপৰ্যয়ত নেপালৰ আৰ্তনাদ, দোষাৰোপতকৈ সহযোগিতা জৰুৰী

নেপালত শেহতীয়াকৈ সংঘটিত ভয়াবহ বান আৰু হিমবাহজনিত বিপৰ্যয়ে সমগ্ৰ হিমালয় অঞ্চলৰ জলবায়ুগত সংকটক পুনৰবাৰ স্পষ্ট কৰি তুলিছে। বৃহৎ সংখ্যক লোকৰ মৃত্যু আৰু হাজাৰ হাজাৰ লোক সন্ধানহীন হোৱাৰ খবৰে নেপালৰ মানৱীয় সংকটৰ গভীৰতা প্ৰকাশ কৰিছে। এনে পৰিস্থিতিত আন্তঃৰাষ্ট্ৰীয় সম্প্ৰদায়ৰ পৰা সাহায্য আৰু জলবায়ু ন্যায় বিচৰাটো নেপালৰ এক স্বাভাৱিক দাবী।

জলবায়ু পৰিৱৰ্তনৰ ফলত যিবোৰ দেশৰ সেউজগৃহ গেছ নিৰ্গমন তুলনামূলকভাৱে কম, সেই দেশবোৰেই যদি অধিক ক্ষতিৰ সন্মুখীন হয়, তেন্তে তেওঁলোকৰ বাবে আৰ্থিক আৰু প্ৰযুক্তিগত সহায়ৰ ব্যৱস্থা কৰাটো বিশ্বৰ উন্নত আৰু অধিক নিৰ্গমনকাৰী দেশসমূহৰ নৈতিক দায়িত্ব। হিমালয়ৰ হিমবাহ গলি যোৱা, আকস্মিক বান, ভূমিস্খলন আৰু বতৰৰ অস্বাভাৱিক পৰিৱৰ্তন এতিয়া কেৱল ভৱিষ্যতৰ আশংকা নহয়, বৰং বৰ্তমানৰ বাস্তৱতা।

কিন্তু কোনো নিৰ্দিষ্ট প্ৰাকৃতিক দুৰ্যোগৰ বাবে কেৱল ভাৰত, চীন বা আমেৰিকাক পোনপটীয়াকৈ দায়ী কৰা বিষয়টো অতি সাৱধানতাৰে বিবেচনা কৰিব লাগিব। জলবায়ু পৰিৱৰ্তন এক জটিল আৰু দীৰ্ঘম্যাদী বৈশ্বিক প্ৰক্ৰিয়া। সেয়েহে নেপালৰ ন্যায্য দাবীক ৰাজনৈতিক অভিযোগ-প্ৰতিঅভিযোগৰ মাজত আবদ্ধ কৰা উচিত নহয়।

ভাৰত আৰু নেপালৰ মাজৰ সম্পৰ্ক কেৱল চৰকাৰী সম্পৰ্কত সীমাবদ্ধ নহয়; দুয়োখন দেশৰ মাজত গভীৰ সামাজিক, সাংস্কৃতিক, পাৰিবাৰিক আৰু বাণিজ্যিক সম্পৰ্ক আছে। সেয়েহে ভাৰতে নেপালৰ দুৰ্যোগৰ সময়ত মানৱীয় সাহায্যৰ লগতে আগতীয়া সতৰ্কীকৰণ, দুৰ্যোগ ব্যৱস্থাপনা আৰু হিমালয় সংৰক্ষণত সহযোগিতা বৃদ্ধি কৰিব লাগে।

জলবায়ু ন্যায়ৰ অৰ্থ দোষী বিচৰা নহয়; ই ন্যায্য দায়িত্ব ভাগ-বতৰা কৰি দুৰ্বল দেশসমূহক সুৰক্ষিত কৰা।

অসম আৰু মেঘালয়: প্ৰমাণ কৰিবলগীয়াতকৈ সংৰক্ষণ কৰিবলগীয়া বস্তু আমাৰ বহুত বেছি

জন জন বিচাৰ
...✍ বিজয় এ. ছাংমা

"যেতিয়া দুখন ৰাজ্যৰ মাজৰ এটা বিবাদে সাধাৰণ মানুহক ইজনে সিজনৰ পৰা আঁতৰাই দিবলৈ আৰম্ভ কৰে, তেতিয়া প্ৰজন্মৰ পিছত প্ৰজন্ম ধৰি সীমান্তৰ দুয়োপাৰে গঢ় লৈ উঠা সম্পৰ্কবোৰৰ কি হয়?"

শেহতীয়াকৈ অসম আৰু মেঘালয়ৰ মাজত উত্তেজনাৰ সৃষ্টি হোৱাৰ মাত্ৰ এসপ্তাহমান পূৰ্বে অসমৰ ছয়জন বন্ধুৱে দুটা পৃথক দলত ভাগ হৈ শিলংত মোৰ ঘৰলৈ আহিছিল। বছৰ বছৰ ধৰি বন্ধুসকল যেনেকৈ মোৰ ঘৰলৈ আহি আহিছে, তেওঁলোকো তেনেকৈয়ে আহিছিল। আমি কথা পাতিছিলোঁ, একেলগে আহাৰ গ্ৰহণ কৰিছিলোঁ আৰু পুৰণি দিনবোৰ সুঁৱৰিছিলোঁ। তেওঁলোকৰ সেই আগমনত অস্বাভাৱিক একোৱেই নাছিল। সেই সাক্ষাৎবোৰে আমাক কোনো এটা পক্ষ বা আনটো পক্ষৰ মানুহ বুলি চিনাক্ত কৰাৰো কোনো ইংগিত দিয়া নাছিল।

কিন্তু কেইদিনমানৰ পিছতেই পৰিস্থিতি সলনি হ'ল। শিলংৰত অনুষ্ঠিত এক প্ৰতিবাদ হিংসাত্মক ৰূপ ল'লে। মানুহ আহত হ'ল, বাহন ক্ষতিগ্ৰস্ত হ'ল আৰু ৰাজহুৱা সম্পত্তি ভাঙচুৰ কৰা হ'ল। মেঘালয় চৰকাৰে পিছত জনোৱা মতে, সেই হিংসাত মুঠ ৩১খন বাহন আক্ৰমণৰ লক্ষ্য হৈছিল, ইয়াৰে ৮খন অসমৰ পঞ্জীয়ন নম্বৰৰ বাহন।

মোক আটাইতকৈ বেছি চিন্তিত কৰা কথাটো হ'ল-এটা প্ৰতিবাদক কেন্দ্ৰ কৰি সংঘটিত ঘটনা এটাই কিমান সোনকালে মানুহৰ মাজত ইজনে সিজনৰ প্ৰতি থকা দৃষ্টিভংগী সলনি কৰিব পাৰে। কেইদিনমানৰ ভিতৰতে অসম আৰু মেঘালয়ক জটিল সম্পৰ্ক থকা চুবুৰীয়া ৰাজ্য হিচাপে নহয়, বৰং দুটা বিপৰীত পক্ষ হিচাপে আলোচনা কৰিবলৈ আৰম্ভ কৰা হ'ল। দুয়োখন ৰাজ্যৰ মাজত যাতায়াতত আৰোপ কৰা বাধাই পৰিস্থিতিৰ উদ্বেগ আৰু বৃদ্ধি কৰিলে।

এই দৃশ্য মোৰ বাবে বিশেষ কষ্টদায়ক আছিল। কাৰণ মোৰ নিজৰ জীৱনটো এই সীমাৰেখাৰ কোনো এটা ফালত সহজে বিভক্ত কৰিব নোৱাৰি।

মই মেঘালয়ৰ এজন গাৰো। কিন্তু মোৰ শৈশৱৰ এটা বৃহৎ অংশ কটাইছিলোঁ অসমত, য'ত মোৰ পিতৃ কৰ্মৰত আছিল। তাতেই মই বিদ্যালয়ৰ শিক্ষা গ্ৰহণ কৰিছিলোঁ আৰু মোৰ চাৰিওফালে অসমীয়া ভাষা, সংস্কৃতি আৰু দৈনন্দিন জীৱনৰ সৈতে ডাঙৰ হৈছিলোঁ। আমাৰ পৰিয়াল অসমত থকাৰ সময়তে মই মহাবিদ্যালয়ত পঢ়িবলৈ শিলং আহিছিলোঁ। পিতৃ অৱসৰ লোৱাৰ পিছত আমাৰ পৰিয়াল মেঘালয়লৈ উভতি আহে।

অসমে মোৰ শৈশৱৰ আৰু জীৱনৰ আৰম্ভণিৰ দিনবোৰ গঢ় দিছিল। মেঘালয় মোৰ ঘৰ।

মোৰ কৰ্মজীৱনৰ আৰম্ভণিও অসমতে হৈছিল। যুৱ অৱস্থাত মই যোৰহাটৰ পৰা প্ৰকাশিত, শান্তনু তামুলীৰ সম্পাদনাত প্ৰকাশ পোৱা অসমীয়া শিশু আলোচনী 'মৌচাক'ৰ বিশেষ প্ৰতিনিধি হিচাপে কাম কৰিছিলোঁ। পিছত তেজপুৰৰ পৰা প্ৰকাশিত ডঃ পূৰ্ণ নাৰায়ণ সিনহাৰ সম্পাদনাত 'মহাজাতি' নামৰ অসমীয়া বাতৰি কাকতখনত বিশেষ সংবাদদাতা হিচাপে মোৰ কৰ্মজীৱনৰ আনুষ্ঠানিক আৰম্ভণি হয়। ১৯৮৮ চনৰ ২০ জানুৱাৰীত উদালগুৰি প্ৰেছ ক্লাব প্ৰতিষ্ঠাৰ সৈতেও মই জড়িত আছিলোঁ।

সেই সময়ছোৱাত অসমৰ সংবাদ জগতত ইতিমধ্যে নিজৰ স্থান গঢ়ি লোৱা বহু বিশিষ্ট ব্যক্তিৰ সংস্পৰ্শলৈ অহাৰ সুযোগ পাইছিলোঁ। ধীৰেন্দ্ৰনাথ বেজবৰুৱা, কনকসেন ডেকা, ৰাছবিৰ হুছেইন, প্ৰশান্ত ৰাজগুৰু আৰু মিহিৰ দেউৰীৰ দৰে সাংবাদিকৰ পৰা বহু কথা শিকিছিলোঁ। এজন যুৱ লেখক হিচাপে অসমীয়া সাংবাদিকতাৰ সেই জগতখনেই মোৰ চিন্তা আৰু লেখাৰ নিজস্ব কণ্ঠ গঢ়ি তোলাত সহায় কৰিছিল।

অসমৰ সৈতে মোৰ সম্পৰ্ক কেৱল শৈশৱ আৰু সাংবাদিকতাৰ মাজতে সীমাবদ্ধ নাছিল। যুৱ অৱস্থাতে মই অসমৰ ৰাজহুৱা জীৱনৰ সৈতেও জড়িত হৈ পৰিছিলোঁ। সদৌ অসম ছাত্ৰ সন্থাৰ আঞ্চলিক পৰ্যায়ৰ নেতৃত্বত আছিলোঁ, অসম আন্দোলনত অংশগ্ৰহণ কৰিছিলোঁ আৰু ছাত্ৰ আন্দোলনৰ পৰা অসম গণ পৰিষদ গঠনৰ দিশে হোৱা পৰিৱৰ্তনৰ সময়তো সক্ৰিয়ভাৱে জড়িত আছিলোঁ।

এই পটভূমিয়েই পৰিচয়ৰ প্ৰশ্নবোৰক চোৱাৰ মোৰ দৃষ্টিভংগী গঢ়ি তুলিছে। মানুহে নিজৰ পৰিচয়, সংস্কৃতি আৰু ৰাজনৈতিক অধিকাৰৰ প্ৰতি কিমান গভীৰ অনুভূতি কঢ়িয়াই লৈ ফুৰে, সেয়া মই নিজ চকুৰে দেখিছোঁ। সেয়েহে এই বিষয়বোৰ কিয় গুৰুত্বপূৰ্ণ, সেই কথাও মই বুজি পাওঁ। বহু লোকৰ বাবে পৰিচয়ৰ সৈতে ইতিহাস, ভূমি, সংস্কৃতি আৰু নিজৰ সন্তানৰ বাবে তেওঁলোকে বিচৰা ভৱিষ্যৎ গভীৰভাৱে জড়িত। এই উদ্বেগবোৰ দৃঢ়ভাৱে প্ৰকাশ কৰাত কোনো ভুল নাই।

সমস্যাৰ আৰম্ভণি তেতিয়াহে হয়, যেতিয়া এনে কোনো বিষয়ক লৈ হোৱা মতভেদে আন পক্ষৰ মানুহজনক আমি কেনেদৰে চাওঁ, সেই কথাই নিৰ্ধাৰণ কৰিবলৈ আৰম্ভ কৰে।

অসম আৰু মেঘালয়ৰ মাজত বাস্তৱিক পাৰ্থক্য আছে। ইয়াৰে কিছুমান বহু দশক পুৰণি। সীমান্তৰ প্ৰশ্ন এতিয়াও কিছু অঞ্চলত সম্পূৰ্ণৰূপে সমাধান হোৱা নাই। ভূমি, পৰিচয়, প্ৰব্ৰজন, কৰ্মসংস্থান, উন্নয়ন আৰু প্ৰাকৃতিক সম্পদক লৈও দুয়োপাৰে উদ্বেগ আছে। এইবোৰ গুৰুত্বপূৰ্ণ বিষয় আৰু ইয়াৰ ওপৰত গুৰুত্বসহকাৰে আলোচনা হোৱা উচিত।

কিন্তু কোনো এটা বিষয়ক লৈ হোৱা বিবাদ আৰু দুটা জনগোষ্ঠীৰ মাজত বিবাদ-এই দুয়োটাৰ মাজত মৌলিক পাৰ্থক্য আছে।

এটা বিষয়ক লৈ যুক্তি-তৰ্ক হ'ব পাৰে, আলোচনা হ'ব পাৰে, আলোচনাৰ জৰিয়তে সমাধানৰ পথো ওলাব পাৰে। কিন্তু যেতিয়া মানুহ নিজেই সন্দেহৰ বিষয় হৈ পৰে, তেতিয়া তাৰ পৰিণতি নিয়ন্ত্ৰণ কৰাটো অধিক কঠিন হৈ পৰে।

এজন অসমীয়া ব্যক্তি এজন যাত্ৰী, ছাত্ৰ, ব্যৱসায়ী, সহকৰ্মী অথবা বন্ধু হিচাপে পৰিচিত হোৱাৰ সলনি কাৰোবাৰ মনত কেৱল 'অসমীয়া' হৈ পৰিব পাৰে। একেদৰে মেঘালয়ৰ এজন ব্যক্তিৰ ক্ষেত্ৰতো অসমৰ মাটিত একে ধৰণৰ দৃষ্টিভংগী গঢ় লৈ উঠিব পাৰে। কেইজনমান লোকৰ সৈতে জড়িত এটা ঘটনাই তেতিয়া ঘটনাটোৰ সৈতে প্ৰকৃততে জড়িত লোকসকলৰ বহু দূৰলৈকে গৈ এক বৃহৎ অৰ্থ বহন কৰিবলৈ আৰম্ভ কৰে।

তেতিয়াই এটা মতভেদে সেই মতভেদৰ সৈতে কোনো সম্পৰ্ক নথকা সম্পৰ্কবোৰৰ ওপৰতো মূল্য আদায় কৰিবলৈ আৰম্ভ কৰে।

শিলংৰ শেহতীয়া হিংসাত্মক ঘটনাৰ ক্ষেত্ৰত আইন অনুসৰি ব্যৱস্থা গ্ৰহণ হ'ব লাগিব। বেআইনী কাৰ্যত জড়িতসকলে যথাযথ আইনী প্ৰক্ৰিয়াৰ সন্মুখীন হ'ব লাগিব। মেঘালয় চৰকাৰে বিশেষ তদন্তকাৰী দল গঠন কৰিছে আৰু হিংসাৰ সৈতে জড়িত ঘটনাসমূহৰ সন্দৰ্ভত এজাহাৰো পঞ্জীয়ন কৰা হৈছে।

কিন্তু ঘটনাটোৰ সৈতে কোনো সম্পৰ্ক নথকা মানুহে কেৱল তেওঁলোক কোনখন ৰাজ্যৰ পৰা আহিছে সেই কাৰণতে কিয় তাৰ জবাবদিহি কৰিব লাগিব? শেহতীয়া উত্তেজনাই দেখুৱাই দিলে, এটা স্থানীয় ঘটনা কিমান সোনকালে দুয়োখন ৰাজ্যৰ সাধাৰণ মানুহৰ জীৱনলৈ বিয়পি পৰিব পাৰে।

ইয়াৰ পিছত দুয়োখন ৰাজ্যৰ চৰকাৰে যাতায়াত পুনৰ স্বাভাৱিক কৰা আৰু পাৰস্পৰিক সমন্বয় বৃদ্ধি কৰাৰ বাবে কেইবাটাও পদক্ষেপ গ্ৰহণ কৰিছে। আবদ্ধ হৈ পৰা যাত্ৰী আৰু বাহনৰ বাবে ব্যৱস্থা কৰাৰ লগতে দুয়োখন ৰাজ্যৰ মাজত অব্যাহত সমন্বয়ৰ বাবেও ব্যৱস্থা কৰা হৈছে। দীৰ্ঘম্যাদী ব্যৱস্থাৰ সন্দৰ্ভত বৰ্ত্তা ছেপ্টেম্বৰৰ ওচৰে-পাজৰে পুনৰ আলোচনা হোৱাৰ সম্ভাৱনা আছে।

এই পদক্ষেপবোৰ প্ৰয়োজনীয়। কিন্তু কেৱল যাতায়াত পুনৰ মুকলি কৰিলেই কাম সম্পূৰ্ণ নহয়। সীমান্ত পাৰ হোৱাৰ ফলত মানুহৰ প্ৰতি আনৰ দৃষ্টিভংগী সলনি হোৱা নাই-এই বিশ্বাসো মানুহৰ মনত পুনৰ গঢ়ি তুলিব লাগিব।

প্ৰতিদিনে ৬,০০০ লিটাৰ মূত্ৰ, এভাৰেষ্টৰ খুম্বু হিমবাহত মানুহৰ পদচিহ্নৰ ভয়ংকৰ ছাপ

জন জন বিচাৰ
...✍নতুন দিল্লী

এভাৰেষ্ট-পৃথিৱীৰ সৰ্বোচ্চ শৃংগ। মানুহৰ সাহস, সংকল্প আৰু প্ৰকৃতি জয় কৰাৰ আকাংক্ষাৰ অন্যতম প্ৰতীক। প্ৰতি বছৰে বিশ্বৰ বিভিন্ন প্ৰান্তৰ পৰা হাজাৰ হাজাৰ পৰ্বতাৰোহী এই বৰফেৰে আবৃত শৃংগটো জয় কৰাৰ সপোন লৈ নেপালৰ খুম্বু অঞ্চললৈ আহে। কিন্তু এভাৰেষ্টৰ বুকুত মানুহৰ এই জয়যাত্ৰাই এতিয়া প্ৰকৃতিৰ বাবে এক নতুন সমস্যাৰ সৃষ্টি কৰিছে।

যিখন ঠাই এসময়ত নিস্তব্ধ বৰফৰ সাম্ৰাজ্য আছিল, সেই খুম্বু হিমবাহৰ বেছ কেম্প এতিয়া পৰ্বতাৰোহণৰ বতৰত এখন সৰু অস্থায়ী নগৰীৰ ৰূপ লয়। হাজাৰ হাজাৰ মানুহ, শ শ তম্বু, জেনেৰেটৰ, ৰন্ধন ব্যৱস্থা, আলোকসজ্জা, গৰম পানী আৰু বিভিন্ন আধুনিক সুবিধাই এই উচ্চভূমিত সৃষ্টি কৰিছে এক ব্যস্ত মানৱীয় পৰিৱেশ।

৫,৩০০ মিটাৰ উচ্চতাত অস্থায়ী নগৰী

২০২৩ চনত সমুদ্ৰপৃষ্ঠৰ পৰা প্ৰায় ৫,৩০০ মিটাৰ উচ্চতাত থকা খুম্বু হিমবাহৰ বেছ কেম্পত প্ৰায় ১,৬০০টা তম্বু স্থাপন কৰা হৈছিল। ইয়াত কেৱল পৰ্বতাৰোহীয়েই নাথাকে। তেওঁলোকৰ সৈতে থাকে পথপ্ৰদৰ্শক, ৰান্ধনী, বাহক, চিকিৎসা কৰ্মী আৰু বিভিন্ন সহায়ক কৰ্মী।

অৰ্থাৎ বছৰৰ কেইটামান মাহৰ বাবে এভাৰেষ্টৰ বুকুত গঢ় লৈ উঠে এখন ক্ষুদ্ৰ কিন্তু যথেষ্ট ব্যস্ত জনবসতি।

এই বিপুল জনসমাগমৰ বাবে প্ৰয়োজন হয় খাদ্য, পানী, বিদ্যুৎ, উত্তাপ আৰু অন্যান্য সুবিধা। ২০২৩ চনত বেছ কেম্পত ৰন্ধন, উত্তাপ আৰু বিদ্যুৎ উৎপাদনৰ বাবে ৮২৪টা তৰলীকৃত পেট্ৰলিয়াম গেছৰ চিলিণ্ডাৰ, প্ৰায় ১৮,৯৩৫ লিটাৰ কেৰাচিন আৰু ৫,১৩০ লিটাৰ গেছলিন ব্যৱহাৰ কৰা হৈছিল বুলি অধ্যয়নত উল্লেখ কৰা হৈছে।

এই ইন্ধন জ্বলোৱাৰ ফলত কেৱল বায়ু প্ৰদূষণেই নহয়, স্থানীয় পৰিৱেশত যথেষ্ট পৰিমাণৰ উত্তাপো সৃষ্টি হয়।

তেন্তে মানুহৰ মূত্ৰই সঁচাকৈয়ে বৰফ গলাইছে নেকি ?

এইখিনিতেই আহিছে আটাইতকৈ চাঞ্চল্যকৰ প্ৰশ্নটো।

নেপালৰ মুখ্য জৰীপ বিষয়া তথা ভূ-স্থানিক বিজ্ঞানী খিমলাল গৌতম আৰু তেওঁৰ সহযোগীসকলে খুম্বু হিমবাহৰ বেছ কেম্পক কেন্দ্ৰ কৰি কৰা অধ্যয়নত মানুহৰ কাৰ্যকলাপৰ ফলত সৃষ্টি হোৱা স্থানীয় উত্তাপৰ প্ৰভাৱ বিশ্লেষণ কৰিছে।

অধ্যয়নৰ অনুমান অনুসৰি, ২০২৩ চনৰ এটা পৰ্বতাৰোহণৰ বতৰত বেছ কেম্পত মানুহৰ কাৰ্যকলাপৰ সৈতে জড়িত উত্তাপে প্ৰায় ২,৪৯২ টন বৰফ গলনত ভূমিকা লৈছিল। ইয়াৰ ভিতৰত মানুহৰ শৰীৰৰ পৰা নিৰ্গত উত্তাপ আৰু মূত্ৰৰ প্ৰভাৱো গণনাত ধৰা হৈছিল।

আনুমানিক হিচাপত মানুহৰ মূত্ৰৰ ফলত প্ৰায় ১৫৪ টন বৰফ গলিব পাৰে।

কিন্তু ইয়াত এটা গুৰুত্বপূৰ্ণ কথা বুজি লোৱা প্ৰয়োজন। ইয়াৰ অৰ্থ এইটো নহয় যে এভাৰেষ্টৰ হিমবাহ গলাৰ মূল কাৰণ মানুহৰ মূত্ৰ। বিশেষজ্ঞসকলৰ মতে, ৰন্ধন, উত্তাপ আৰু বিদ্যুৎ উৎপাদনৰ বাবে ব্যৱহৃত ইন্ধনৰ প্ৰভাৱ ইয়াতকৈ বহু বেছি। সেয়ে 'মূত্ৰই এভাৰেষ্ট গলাই পেলাইছে' বুলি কোৱাটো চাঞ্চল্যকৰ শিৰোনাম হ'ব পাৰে, কিন্তু সম্পূৰ্ণ বৈজ্ঞানিক ব্যাখ্যা নহয়।

তথাপিও এই তথ্যই এটা অতি গুৰুত্বপূৰ্ণ বিষয় আমাৰ সন্মুখলৈ আনে-মানুহে পৃথিৱীৰ অতি উচ্চ আৰু সংবেদনশীল পৰিৱেশতো কিমান গভীৰ প্ৰভাৱ পেলাবলৈ আৰম্ভ কৰিছে।

এভাৰেষ্ট বেছ কেম্পত মানুহৰ উপস্থিতিৰ সৈতে জড়িত আন এটা ডাঙৰ সমস্যা হৈছে বৰ্জ্জ্য।

হাজাৰ হাজাৰ পৰ্বতাৰোহী আৰু সহায়ক কৰ্মীৰ পৰা প্ৰতিদিনে প্ৰায় ৬,০০০ লিটাৰতকৈ অধিক মানৱীয় বৰ্জ্জ্য সৃষ্টি হয় বুলি অধ্যয়নত উল্লেখ কৰা হৈছে।

বেছ কেম্পত গাঁতযুক্ত শৌচাগাৰৰ ব্যৱস্থা কৰা হৈছে আৰু সংগৃহীত বৰ্জ্জ্য তললৈ নমাই অনাৰ ব্যৱস্থাও আছে। কিন্তু মূত্ৰৰ ক্ষেত্ৰত পৰিস্থিতি অধিক জটিল। বহু পৰ্বতাৰোহীয়ে হিমবাহৰ ওপৰতে মূত্ৰত্যাগ কৰে।

সমস্যাটো হল-এই হিমবাহ কেৱল বৰফৰ পাহাৰ নহয়। ইয়াৰ গলিত পানী তলৰ অঞ্চলৰ বহু লোকৰ বাবে পানীৰ গুৰুত্বপূৰ্ণ উৎস।

অৰ্থাৎ পৰ্বতাৰোহীৰ সামান্য যেন লগা এটা দৈনন্দিন কাৰ্যও বৃহত্তৰ জলসম্পদৰ ওপৰত প্ৰভাৱ পেলাব পাৰে।

৩০ লাখ কিলোগ্ৰাম বৰফ গলাৰ আশংকা

গৱেষকসকলৰ অনুমান অনুসৰি, প্ৰতি বসন্তত বেছ কেম্পৰ মানৱীয় কাৰ্যকলাপ আৰু স্থানীয় উষ্ণতাৰ প্ৰভাৱৰ সৈতে সম্পৰ্কিতভাৱে প্ৰায় ৩০ লাখ কিলোগ্ৰাম হিমবাহৰ বৰফ গলিব পাৰে। অৱশ্যে ইয়াৰ সকলোখিনি কেৱল মানুহৰ উপস্থিতিৰ ফল বুলি কব নোৱাৰি। হিমালয়ত জলবায়ু পৰিৱৰ্তনৰ প্ৰভাৱ ইতিমধ্যে গভীৰ।

২০০৯ চনৰ পাছৰ পৰা এভাৰেষ্ট অঞ্চলৰ হিমবাহসমূহত বৰফ গলাৰ গতি বৃদ্ধি পোৱাৰ তথ্যও বিভিন্ন গৱেষণাত পোৱা গৈছে। বিশ্বব্যাপী উষ্ণতা বৃদ্ধি, বৰফৰ ওপৰত ধূলি-কণা জমা হোৱা আৰু বতৰৰ পৰিৱৰ্তনৰ দৰে বহু কাৰকে হিমবাহ গলনত ভূমিকা পালন কৰে।

সেয়ে বেছ কেম্পৰ স্থানীয় উত্তাপ আৰু মানুহৰ বৰ্জ্জ্যক বিশ্বব্যাপী জলবায়ু পৰিৱৰ্তনৰ বিকল্প হিচাপে চোৱা উচিত নহয়। বৰং দুয়োটাকে পৃথক কিন্তু পৰস্পৰৰ সৈতে জড়িত সমস্যা হিচাপে বিবেচনা কৰিব লাগিব।

উপগ্ৰহৰ চকুত ধৰা পৰিছে পৰিৱৰ্তন

এই অধ্যয়নৰ এক উল্লেখযোগ্য অংশ আছিল উপগ্ৰহৰ তথ্যৰ ব্যৱহাৰ। গৱেষকসকলে ১৯৯১ চনৰ পৰা ২০২৩ চনলৈকে মেঘমুক্ত অৱস্থাত সংগৃহীত তাপীয় উপগ্ৰহ-চিত্ৰ বিশ্লেষণ কৰিছিল।

তেওঁলোকে বেছ কেম্পৰ ভূমিৰ উষ্ণতাৰ পৰিৱৰ্তন হিমবাহৰ আন অংশ আৰু ওচৰৰ আন এটা অঞ্চলৰ সৈতে তুলনা কৰে।

তাত দেখা যায় যে বেছ কেম্পৰ ওচৰৰ ভূমিৰ উষ্ণতা হিমবাহৰ বৰফেৰে আবৃত অংশৰ তুলনাত অধিক দ্ৰুতগতিত বৃদ্ধি পাইছে।

গৱেষকসকলৰ মতে, ইয়াৰ পৰা স্থানীয় মানৱীয় কাৰ্যকলাপৰ প্ৰভাৱৰ ইংগিত পোৱা যায়। অৱশ্যে হেলিকপ্টাৰ, পৰ্বতাৰোহীৰ চলাচল, ইয়াকৰ উপস্থিতি আদি সকলো উত্তাপ-উৎপাদক কাৰক অধ্যয়নত অন্তৰ্ভুক্ত হোৱা নাছিল।

কেৱল এভাৰেষ্টৰ সৌন্দৰ্য নহয়, বিপদতো পৰিব পাৰে

হিমবাহ গলাৰ প্ৰভাৱ কেৱল পৰিৱেশ বা এভাৰেষ্টৰ সৌন্দৰ্যৰ মাজতে সীমাবদ্ধ নহয়। হিমবাহৰ পানীৰ ওপৰত নিৰ্ভৰ কৰে বহু পাহাৰীয়া জনবসতি।

খোৱাপানী, কৃষি, জলবিদ্যুৎ আৰু পৰিৱেশগত ভাৰসাম্যৰ ক্ষেত্ৰত হিমবাহৰ গুৰুত্ব অপৰিসীম।

আনহাতে, হিমবাহৰ গলনৰ ফলত হিমবাহ-উৎপন্ন হ্ৰদৰ আয়তন বৃদ্ধি পাব পাৰে। কোনো পৰিস্থিতিত এনে হ্ৰদৰ বান্ধ ভাঙিলে আকস্মিক ভয়ংকৰ বান নামি আহিব পাৰে। ইয়াক 'হিমবাহ-হ্ৰদ বিস্ফোৰণজনিত বান' বুলি কোৱা হয়।

ইয়াৰ ফলত পাহাৰীয়া অঞ্চলৰ জনবসতি, পথ, দলং, কৃষিভূমি আৰু জলবিদ্যুৎ প্ৰকল্প ভয়ংকৰ বিপদৰ সন্মুখীন হ'ব পাৰে।

এভাৰেষ্ট জয় নে এভাৰেষ্টৰ সংৰক্ষণ ?

এভাৰেষ্টত পৰ্বতাৰোহণ নোহোৱা কৰি দিয়াটো বাস্তৱসন্মত সমাধান নহয়। নেপালৰ অৰ্থনীতিৰ এটা গুৰুত্বপূৰ্ণ অংশ পৰ্বতাৰোহণ আৰু পৰ্যটনৰ সৈতে জড়িত। হাজাৰ হাজাৰ স্থানীয় লোক এই উদ্যোগৰ ওপৰত জীৱিকা নিৰ্ভৰ কৰে।

কিন্তু পৰ্যটন আৰু পৰিৱেশ সংৰক্ষণৰ মাজত ভাৰসাম্য সৃষ্টি কৰাটো এতিয়া সময়ৰ দাবী।

বেছ কেম্পত অধিক পৰিৱেশবান্ধৱ শক্তিৰ ব্যৱহাৰ, ইন্ধনৰ ব্যৱহাৰ হ্ৰাস, বৰ্জ্জ্য বাধ্যতামূলকভাৱে তললৈ নমাই অনা, মূত্ৰ আৰু অন্যান্য মানৱীয় বৰ্জ্জ্যৰ বৈজ্ঞানিক ব্যৱস্থাপনা, পৰ্বতাৰোহীৰ সংখ্যা নিয়ন্ত্ৰণ আৰু কঠোৰ পৰিৱেশীয় নিয়ম প্ৰৱৰ্তন কৰিব লাগিব।

ঐশ্বৰ্য আৰু বৈৰাগ্যৰ অপূৰ্ব সমন্বয় শ্ৰীকৃষ্ণ

জন জন বিচাৰ
...✍ হিতেন শৰ্মা শাস্ত্ৰী

শ্ৰীকৃষ্ণক কেৱল পৌৰাণিক চৰিত্ৰ হিচাপে চালে তেওঁৰ আধুনিক প্ৰাসংগিকতাৰ বৃহৎ অংশ আমাৰ দৃষ্টিৰ পৰা আঁতৰি যায়। তেওঁ কেৱল বাঁহী বজোৱা গোপাল নহয়, কেৱল মহাভাৰতৰ সাৰথিও নহয়-তেওঁ এনে এক জীৱনদৰ্শনৰ প্ৰতীক, য'ত প্ৰেম আৰু নীতি, ক্ষমতা আৰু সংযম, কূটনীতি আৰু ন্যায়, কৰ্ম আৰু আত্মসংযম একেলগে সহাৱস্থান কৰে। সেয়েহে আজিৰ বিভাজন, ক্ষমতাৰ সংঘাত, সামাজিক অস্থিৰতা, মানসিক চাপ আৰু পৰিৱেশ সংকটৰ সময়ত শ্ৰীকৃষ্ণক নতুনকৈ পঢ়াৰ প্ৰয়োজন আছে।

ক্ষমতা থাকিলেই নেতৃত্ব নহয়

আজি ৰাজনীতিৰ পৰা কৰ্প'ৰেট জগতলৈ-নেতৃত্বক বহু সময়ত পদ, ক্ষমতা আৰু প্ৰভাৱৰ সৈতে জুখা হয়। শ্ৰীকৃষ্ণৰ জীৱন কিন্তু ইয়াৰ বিপৰীত শিক্ষা দিয়ে।দ্বাৰকাৰ শাসক হৈও তেওঁ নিজকে জনসাধাৰণৰ পৰা বিচ্ছিন্ন কৰা নাছিল।

আধুনিক নেতৃত্বৰ সৰ্ববৃহৎ সংকটটোৱেই হৈছে ক্ষমতাক সেৱাৰ সলনি সুবিধা হিচাপে ব্যৱহাৰ কৰা। কৃষ্ণৰ দৰ্শনে সোঁৱৰাই দিয়ে-নেতৃত্ব মানে অধিকাৰ নহয়, অধিক দায়িত্ব। সিদ্ধান্ত লোৱাৰ ক্ষমতা যিমান বৃদ্ধি পায়, জনসাধাৰণৰ প্ৰতি জবাবদিহিতাও সিমানেই বৃদ্ধি পাব লাগে।

সংঘাতৰ যুগত কৃষ্ণৰ 'সংলাপ'ৰ শিক্ষা

আজিৰ সমাজত মতভেদ অতি সহজে বিদ্বেষলৈ ৰূপান্তৰিত হয়। ৰাজনৈতিক মতপাৰ্থক্য, ধৰ্মীয় বিভাজন, সামাজিক মাধ্যমৰ তৰ্ক-সকলোতে যেন শুনাতকৈ জিকাৰ প্ৰতিযোগিতা বেছি।

কৃষ্ণৰ কূটনীতি ইয়াত বিশেষভাৱে প্ৰাসংগিক। কুৰুক্ষেত্ৰৰ যুদ্ধৰ আগতে তেওঁ শান্তিৰ পথ বিচাৰিছিল। অৰ্থাৎ শক্তি থকাৰ অৰ্থ যুদ্ধ বিচৰা নহয়; বৰং ন্যায় ৰক্ষাৰ বাবে শেষ পৰ্যায়ত শক্তি প্ৰয়োগ কৰাৰ আগতে সংলাপৰ সকলো দুৱাৰ খুলি ৰখা।

আজি ৰাষ্ট্ৰীয় ৰাজনীতি হওক বা আন্তঃৰাষ্ট্ৰীয় সম্পৰ্ক-কৃষ্ণৰ এই শিক্ষা অতি মূল্যৱান: মতভেদ থাকিব পাৰে, কিন্তু সংলাপ বন্ধ হ'লে সংঘাতৰ সম্ভাৱনা বৃদ্ধি পায়।

তথ্যৰ বন্যাত স্থিৰ মনৰ প্ৰয়োজন

আজিৰ মানুহৰ হাতত তথ্য অভূতপূৰ্বভাৱে বেছি, কিন্তু স্থিৰতা যেন কমি গৈছে। সামাজিক মাধ্যমৰ উত্তেজনা, অপপ্ৰচাৰ, তাৎক্ষণিক প্ৰতিক্ৰিয়া আৰু মানসিক চাপৰ মাজত বিবেচনাপূৰ্ণ সিদ্ধান্ত লোৱাটো কঠিন হৈ পৰিছে। অৰ্জুনৰ মানসিক দ্বিধাৰ মুহূৰ্তত কৃষ্ণই যি শিক্ষা দিছিল, তাৰ আধুনিক অৰ্থ হ'ল-সংকটৰ সময়ত আবেগে সিদ্ধান্ত নিয়ন্ত্ৰণ কৰিব নালাগে; কৰ্তব্য, বিবেক আৰু বাস্তৱতাৰ ওপৰত সিদ্ধান্ত নিৰ্ভৰ কৰিব লাগে।

উন্নয়ন বনাম প্ৰকৃতি-গোবৰ্ধনৰ নতুন পাঠ

গোবৰ্ধন পৰ্বক কেৱল ধৰ্মীয় কাহিনী হিচাপে চালে ইয়াৰ সামাজিক আৰু পৰিৱেশগত তাৎপৰ্য অদৃশ্য হৈ যায়। কৃষ্ণৰ গোবৰ্ধনকেন্দ্ৰিক দৃষ্টিভংগীত প্ৰকৃতি, কৃষক, পশুপালক আৰু স্থানীয় জীৱনধাৰাৰ প্ৰতি গভীৰ সন্মান দেখা যায়। আজিৰ পৃথিৱীত জলবায়ু পৰিৱৰ্তন, বনধ্বংস, নদী দূষণ আৰু অতিৰিক্ত ভোগে প্ৰকৃতিক সংকটৰ মুখলৈ ঠেলি দিছে। এই সময়ত কৃষ্ণৰ শিক্ষা যেন স্পষ্ট-প্ৰকৃতিক জয় কৰাৰ চেষ্টা নহয়, প্ৰকৃতিৰ সৈতে সহাৱস্থানেই টেকসই উন্নয়নৰ পথ।

অৰ্থনীতিৰ যুগত বৈৰাগ্যৰ প্ৰয়োজন কিয়?

আধুনিক অৰ্থনীতি অধিক উৎপাদন আৰু অধিক ভোগৰ ওপৰত নিৰ্ভৰশীল। কিন্তু ভোগৰ সীমা নাথাকিলে সম্পদৰ বৈষম্য, মানসিক অশান্তি আৰু পৰিৱেশ ধ্বংস দুয়োটাই বৃদ্ধি পায়। শ্ৰীকৃষ্ণৰ জীৱনত ঐশ্বৰ্য আছিল, কিন্তু ঐশ্বৰ্যই তেওঁক নিয়ন্ত্ৰণ কৰা নাছিল। এইটোৱেই 'ঐশ্বৰ্য আৰু বৈৰাগ্য'ৰ মূল শিক্ষা। অৰ্থাৎ সম্পদ থাকিব পাৰে, কিন্তু সম্পদৰ দাস হ'ব নালাগে।

আজিৰ ৰাজনীতিৰ বাবে ডাঙৰ শিক্ষা

কৃষ্ণৰ ৰাজনীতি ক্ষমতা দখলৰ ৰাজনীতি নহয়; ই ন্যায় প্ৰতিষ্ঠাৰ ৰাজনীতি। তেওঁ পৰিস্থিতি বুজিছিল, সংলাপ কৰিছিল, মিত্ৰতা গঢ়িছিল, কৌশল প্ৰয়োগ কৰিছিল আৰু প্ৰয়োজনত কঠোৰ সিদ্ধান্ত লৈছিল।

জন্মাষ্টমীৰ প্ৰকৃত প্ৰাসংগিকতা

জন্মাষ্টমী কেৱল মন্দিৰত পূজা, উৎসৱ বা উপবাসৰ দিন হৈ থাকিলে কৃষ্ণৰ দৰ্শনৰ গভীৰতা উপলব্ধি কৰা নহ'ব। এই দিনটোৱে নিজৰ ভিতৰৰ 'কৃষ্ণ'ক জগোৱাৰ সুযোগ দিব লাগে-বিবেক, সাহস, প্ৰেম, সংযম, কৰ্তব্য আৰু সত্যৰ ৰূদ্ৰূপত। আজি সমাজত 'কংস'ক কেৱল কোনো পৌৰাণিক অত্যাচাৰী হিচাপে বিচৰাৰ প্ৰয়োজন নাই। অহংকাৰ, লোভ, ঘৃণা, হিংসা, অসহিষ্ণুতা, মিছা তথ্য আৰু স্বাৰ্থপৰতা-এইবোৰেই আধুনিক কংসৰ ৰূপ। সেয়েহে শ্ৰীকৃষ্ণৰ আধুনিক প্ৰাসংগিকতা তেওঁৰ জন্মৰ কাহিনীতকৈ অধিক তেওঁৰ সিদ্ধান্ত লোৱাৰ পদ্ধতিত, সংকটৰ সন্মুখীন হোৱাৰ সাহসত আৰু ক্ষমতাৰ মাজতো সংযম ৰখাৰ সামৰথ্যত।

'হনুমান অংশ'ৰ চমকত 'টক্সিক' ম্লান

জন জন বিচাৰ
...✍ মনোৰঞ্জন ডেস্ক

বক্স অফিচত এই মুহূৰ্তত যেন এখন ছবিয়েই সকলোকে চমকিত কৰি তুলিছে। ডাঙৰ বাজেট, তাৰকা অভিনেতা আৰু বিশাল প্ৰচাৰৰ মাজতো যশ অভিনীত 'টক্সিক' দৈনিক উপাৰ্জনৰ ক্ষেত্ৰত পিছ পেলাইছে তুলনামূলকভাৱে অতি কম বাজেটত নিৰ্মিত 'হনুমান অংশ'-এ। আটাইতকৈ আচৰিত কথাটো হ'ল-'হনুমান অংশ' ছবিখনৰ মুক্তিৰ চাৰি সপ্তাহ সম্পূৰ্ণ হৈছে, অথচ এতিয়াও দৰ্শকৰ আগ্ৰহ কমা নাই।

বাবা নীম কৰৌলী মহাৰাজৰ জীৱনক কেন্দ্ৰ কৰি নিৰ্মাণ কৰা এই ছবিখনে মাত্ৰ প্ৰায় ২ কোটি টকাৰ বাজেটত নিৰ্মাণ হৈ ইতিমধ্যে নিজৰ বাজেটৰ বহু গুণ উপাৰ্জন কৰিছে। ছবিখনৰ বক্স অফিচ যাত্ৰাই এতিয়া চলচ্চিত্ৰ মহলতো চৰ্চা লাভ কৰিছে।

চতুৰ্থ সপ্তাহতো অব্যাহত 'হনুমান অংশ'ৰ দৌৰ

বক্স অফিচৰ পৰিসংখ্যা অনুসৰি, চতুৰ্থ সপ্তাহৰ সোমবাৰে ছবিখনে প্ৰায় ৫.৫০ কোটি টকা উপাৰ্জন কৰে। মঙলবাৰে উপাৰ্জন বৃদ্ধি পাই ৮.৫০ কোটি টকা হয়। বুধবাৰে ছবিখনে প্ৰায় ৭.৭৫ কোটি টকা সংগ্ৰহ কৰে। বৃহস্পতিবাৰে খবৰ লিখাৰ সময়লৈকে ছবিখনৰ দৈনিক উপাৰ্জন প্ৰায় ১১ কোটি টকাত উপনীত হৈছিল।

এইদৰে ছবিখনৰ মুঠ উপাৰ্জন প্ৰায় ৭২ কোটি টকা হোৱা বুলি প্ৰতিবেদনত উল্লেখ কৰা হৈছে। ইয়াৰ ভিতৰত বিশেষভাৱে চকুত পৰা তথ্যটো হ'ল-মুঠ উপাৰ্জনৰ প্ৰায় ৬১ কোটি টকাই চতুৰ্থ সপ্তাহতেই আহিছে। অৰ্থাৎ সময় পাৰ হোৱাৰ লগে লগে ছবিখনৰ প্ৰতি দৰ্শকৰ আগ্ৰহ যেন অধিক বৃদ্ধি পাইছে।

'টক্সিক'ৰ গতি কিয় কমিছে?

আনহাতে, যশ অভিনীত বহু প্ৰত্যাশিত ছবি 'টক্সিক'-ৰ বক্স অফিচ যাত্ৰা আৰম্ভণিৰ তুলনাত কিছু মন্থৰ হোৱা দেখা গৈছে। বৃহৎ বাজেট আৰু তাৰকা-সমৃদ্ধ অভিনয়শিল্পীৰ উপস্থিতি থকা ছবিখনে মুক্তিৰ প্ৰথম কেইদিনত ভাল ব্যৱসায় কৰাৰ পাছত দৈনিক উপাৰ্জনত হ্ৰাস দেখা গৈছে। সোমবাৰে 'টক্সিক'ৰ উপাৰ্জন আছিল প্ৰায় ৭.৬৫ কোটি টকা, মঙলবাৰে ৭.৮৫ কোটি, বুধবাৰে ৫.৪৫ কোটি আৰু বৃহস্পতিবাৰে খবৰ লিখাৰ সময়লৈকে প্ৰায় ৪.২৫ কোটি টকা সংগ্ৰহ কৰিছিল। ছবিখনৰ মুঠ উপাৰ্জন প্ৰায় ২৩৯.৩০ কোটি টকা বুলি প্ৰতিবেদনত কোৱা হৈছে।

কম বাজেট, ডাঙৰ চমক

'হনুমান অংশ' আৰু 'টক্সিক'-ৰ বক্স অফিচ পৰিসংখ্যাই এটা কথা স্পষ্ট কৰি তুলিছে-চলচ্চিত্ৰৰ সফলতা কেৱল বাজেট বা তাৰকাৰ ওপৰত নিৰ্ভৰ নকৰে। দৰ্শকৰ সৈতে কাহিনী, চৰিত্ৰ আৰু বিষয়বস্তুৰ সংযোগ স্থাপন কৰিব পাৰিলেই এখন সৰু ছবিও ডাঙৰ বাজেটৰ ছবিক কঠিন প্ৰত্যাহ্বান জনাব পাৰে।

মাত্ৰ ২ কোটি টকাৰ বিনিয়োগেৰে নিৰ্মিত 'হনুমান অংশ'-ৰ ৭২ কোটি টকাৰ উপাৰ্জন সেই কথাৰেই এক শক্তিশালী উদাহৰণ। আনহাতে, শতাধিক কোটি টকাৰ বাজেটৰ 'টক্সিক'ৰ তুলনামূলকভাৱে মন্থৰ দৈনিক উপাৰ্জনে বক্স অফিচৰ অনিশ্চয়তাক আকৌ এবাৰ সোঁৱৰাই দিছে।

চতুৰ্থ সপ্তাহতো 'হনুমান অংশ'-ৰ এই গতি অব্যাহত থাকিলে ছবিখনে আৰু কিমান দূৰ যাব পাৰে, এতিয়া সেয়াই চলচ্চিত্ৰপ্ৰেমীৰ মাজত কৌতূহলৰ বিষয় হৈ পৰিছে।

VOICE OF ALL, FOR ALL

WEEKLY

JAN JAN VICHAR

Guwahati, Friday, 4 September 2026

Assam To Raise Two New Police Battalions

Jan Jan Vichar
...✍DERGAON

Assam is set to strengthen its policing and security infrastructure with the creation of two new specialised police battalions-one dedicated to disaster response and another to the security of oil and gas installations, Chief Minister Himanta Biswa Sarma announced after a two-day conference of senior police officers in Dergaon.

The decisions were taken at a high-level conference aimed at strengthening the Assam Police's ability to tackle crime, natural disasters and emerging security challenges. One of the new battalions will function as an expanded State Disaster Response Force (SDRF), while the second will provide dedicated security to vital installations of Oil and Natural Gas Corporation (ONGC) and Oil India Limited (OIL).

Anti-Narcotics Task Force Within a Month

The government has also decided to intensify its campaign against drug trafficking. Sarma said Assam will constitute an Anti-Narcotics Task Force within a month, in line with directions from the Centre. The proposed force will focus not only on arresting drug traffickers but also on dismantling their wider networks.

Its responsibilities will include attaching properties linked to traffickers, strengthening forensic investigations, disrupting financial networks and preventing procedural lapses that could weaken cases against accused persons.

Assam will also strengthen coordination with neighbouring Manipur, Mizoram and Arunachal Pradesh to identify and disrupt emerging drug-trafficking routes. The government is considering stronger preventive measures, including preventive detention in appropriate cases, against major traffickers.

Sarma also said drug rehabilitation centres would be examined following reports that narcotics were allegedly available at some such facilities.

Conviction Rate Target Raised to 35%

Improving the quality of investigation and prosecution emerged as another major priority at the conference. Assam's current conviction rate stands at around 29.30 per cent, and the government has set a target of raising it to 35 per cent. Sarma pointed out that the conviction rate was only around 7 per cent in 2020, saying the government wants to build on the improvement through better investigations, stronger evidence collection and more effective prosecution.

15,000–20,000 More Police Personnel Planned

The government is also preparing for a major expansion of the Assam Police. Around 5,000 personnel have been recruited during the past five years, while the government plans to recruit another 15,000 to 20,000 personnel over the next five years. Police infrastructure will also be upgraded, with a proposal to transform the Lachit Borphukan Police Academy at Dergaon into a national-level institution. The planned improvements include upgraded shooting, horse-riding and sports facilities, along with better residential accommodation for personnel.

Housing Remains a Major Challenge

Sarma highlighted a serious shortage of accommodation for police personnel. Assam Police has around 90,000 personnel, but housing is currently available for only about 10,000. The government aims to increase police housing capacity to approximately 30,000, recognising that adequate accommodation is essential for the welfare and operational efficiency of the force.

Six-Month Implementation Roadmap

Sarma said the Dergaon conference was the first such meeting of senior police officers under the new government. Decisions taken during the two-day deliberations are expected to be implemented over the next six months. The next senior police officers' conference is proposed to be held in Bongaigaon in February next year, when progress on the decisions taken at Dergaon is expected to be reviewed.

The proposed battalions, anti-narcotics task force, higher conviction target and planned recruitment together signal a broader attempt by Assam to build a police force capable of responding not only to conventional law-and-order challenges but also to disasters, organised crime, drug trafficking and threats to critical energy infrastructure.

ZUBEEN GARG CASE: SINGAPORE WITNESSES READY TO TESTIFY, SAYS PARIKSHIT SHARMA

Jan Jan Vichar
...✍ Guwahati

Several people who were present in Singapore at the time of the death of Assam's cultural icon Zubeen Garg are ready to testify before the court and are awaiting an opportunity to record their statements, Singapore-based witness Parikshit Sharma said on Thursday.

Sharma, who was present during the incident, travelled from

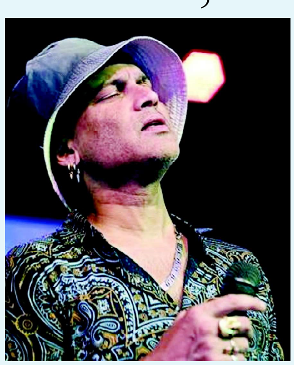

Singapore to India after receiving a court summons and completed his testimony before the fast-track court hearing the case over two days.

Speaking to the media after his testimony, Sharma said a number of people who were present at the time were keen to cooperate with the judicial process and present their respective accounts before the court. There were around 15 to 26 people there during the incident, and everyone has their own perspective," Sharma said, adding that those who were in Singapore were waiting for their opportunity to testify.

Sharma's statement was recorded before the court on Wednesday and Thursday, following which he was cross-examined by the counsel representing the accused. He said he had placed his version before the judiciary and hoped it would contribute to establishing the truth surrounding the

Continued on Page 16

Orunodoi Protest Turns Tense in Hailakandi

Hailakandi: A protest over alleged deletion of eligible beneficiaries from Assam's Orunodoi scheme turned tense outside the Hailakandi Deputy Commissioner's office on Thursday, after demonstrators attempted to enter the premises. The protest, led by Congress MLA Jubair Anam, saw a large number of people rally to the DC office on Kachari Road. Police stopped the protesters and resorted to a mild lathicharge to bring the situation under control. Several people who claimed their names had been removed from the Orunodoi beneficiary list also joined the demonstration. Anam alleged that repeated reviews of the list had resulted in the exclusion of eligible beneficiaries and warned of a larger agitation if their grievances were not addressed. The MLA also raised allegations concerning flood relief, road construction and other government schemes, including claims of irregularities and harassment of complainants. The protesters were waiting for the Deputy Commissioner to meet them and respond to their demands at the time of filing the report.

ASSAM POLICE OUTPOST TURNS INTO BLOODSHED

TWO PERSONNEL KILLED IN ALLEGED COLLEAGUE FIRING

Jan Jan Vichar
...✍Guwahati

A late-night shooting at a police outpost in Assam's Kamrup district left two police personnel dead and two others injured after a colleague allegedly opened fire on them, sending shockwaves through the local police establishment.

The incident took place late Wednesday night at the Gamerimura Police Outpost, under Boko Police Station. The deceased have been identified as Fazrul Ali and Indrajit Bora, the officer-in-charge of the outpost. Two other personnel sustained bullet injuries and were rushed for medical treatment. Their condition was not immediately known.

According to preliminary information, the alleged firing was carried out by police personnel Chiranjeev Choudhury, who reportedly used an AK-47 service rifle. Authorities have not yet disclosed the circumstances that led to the shooting or established a motive. It also remains unclear whether an argument, confrontation or any other incident preceded the firing. Investigators are expected to reconstruct the sequence of events and determine how the service weapon was accessed and used. The incident assumes added significance as Assam witnessed a similar shooting involving security personnel only a month ago. On August 4, a Central Reserve Police Force personnel allegedly opened fire on colleagues at the 34 Battalion camp in Katimari, Nagaon, killing two personnel and injuring another before taking his own life.

The latest incident has once again raised questions about the pressures faced by personnel operating within security establishments and the need for a thorough investigation into incidents involving service weapons. The authorities are expected to establish the facts before drawing conclusions about the motive or circumstances behind the Gamerimura firing.

MIZORAM : 2,977 Vehicles Found Plying With Expired Fitness Certificates

Jan Jan Vichar
...✍Aizawl

As many as 2,977 transport vehicles in Mizoram's Kolasib district were found plying despite having expired fitness certificates, resulting in an estimated Rs. 35.36 crore in unrealised fees and penalties, according to a report of the Comptroller and Auditor General of India (CAG) tabled in the Mizoram Assembly.

The audit of the District Transport Office (DTO), Kolasib, found through data extracted from the VAHAN system on November 29, 2022, that the fitness certificates of the 2,977 vehicles had expired. The Transport Department could not produce records showing that these vehicles had subsequently been taken off the roads. The CAG estimated that Rs. 35.17 crore in penalties and another Rs. 19.35 lakh in renewal and fitness-related fees remained unrealised.

Under the Motor Vehicles Act, 1988, transport vehicles are required to have valid fitness certificates. The continued operation of vehicles with expired certificates, the audit said, reflected inadequate enforcement of the mandatory fitness regime. The department informed the audit that demand notices had been issued to defaulters in January 2020 and January 2023. However, scrutiny of seven sample notices revealed that they primarily concerned renewal of vehicle registration and did not specifically demand payment of fitness fees and penalties.

The CAG subsequently raised the issue with the department and the State Government in October 2024. In its response in November 2024, the government said action was being taken against transport-related defaulters through District Transport Offices and the Directorate. It also cited enforcement drives and joint operations with the Mizoram Police. However, the CAG noted that the government did not clearly specify what action had been taken to recover the outstanding dues identified during the audit.

Six Convictions in One Day

Dibrugarh: A Dibrugarh court convicted six accused in six separate criminal cases on Wednesday, sentencing five to life imprisonment for murder and another to four years' rigorous imprisonment for attempted murder. Among those sentenced to life was police constable Biki Chetia, convicted of murdering his pregnant wife with his service pistol. Other murder convicts included Sukram Murah, Rajiv Chungkrang, Raju Chetia and Dipu Mech.

Continued from page 15

ZUBEEN GARG CASE:...

case. If my truth helps even one per cent in getting justice for Zubeen Garg, I will feel grateful," Sharma said. He declined to disclose details of the incident, citing the ongoing trial and his status as a witness.

Sharma said he received the court summons on August 25 and travelled to India on September 2 to appear before the court.

He had previously appeared before the court on October 13 last year and had also recorded his statement before the one-member judicial commission constituted to examine the circumstances surrounding the incident. Sharma said those who were present in Singapore had already shared their accounts before the judicial commission and would place whatever further information is required before the court when called upon.

Urging people to remain patient, Sharma said the court's eventual verdict would establish the sequence of events. He stressed that the details surrounding the incident should emerge through the judicial process rather than through public speculation. The verdict of the court will be a public document, and that will establish the actual sequence of events. People should keep faith in the justice system," he said.

Speaking about what Zubeen Garg meant to those who were with him in Singapore, Sharma said the artiste's significance was difficult to put into words. He expressed hope that his testimony would make even a small contribution towards securing justice for the late singer and cultural icon. The testimony of Sharma and the willingness of other Singapore-based witnesses to appear before the court could become significant as the judicial proceedings continue. However, the actual sequence of events and responsibility, if any, will ultimately be determined through the evidence presented before the court and its final verdict.

ISRO'S 'NAUGHTY BOY' RISES AGAIN

India Achieves Major Space Milestone With EOS-05

Jan Jan Vichar
...SRIHARIKOTA

India has achieved a major milestone in space technology with the successful launch of the GSLV-F17 carrying the EOS-05 Earth observation satellite, marking a significant comeback for the Indian Space Research Organisation (ISRO) after a difficult phase of launch failures.

The GSLV-F17 lifted off from the Satish Dhawan Space Centre in Sriharikota at 2:55 am on Friday and, within around 19 minutes, placed the 2,376-kg EOS-05 satellite into its designated geosynchronous orbit. The mission is particularly significant because the GSLV Mk II, nicknamed "Naughty Boy" because of its history of launch failures, has now demonstrated its reliability at a crucial moment for India's space programme.

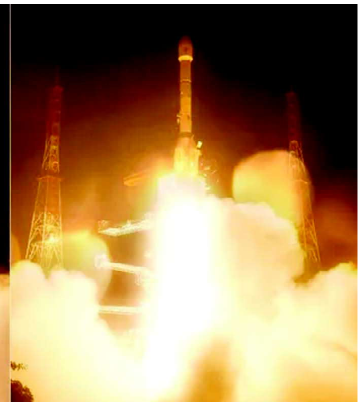

From Setbacks to a Strong Comeback

The success comes after setbacks involving India's launch programme, increasing the pressure on the GSLV to deliver. The successful GSLV-F17 mission has therefore restored confidence in India's ability to place heavy and advanced satellites into higher orbits using indigenous technology.

The achievement also highlights decades of painstaking work by Indian scientists to master cryogenic propulsion technology.

India faced international restrictions in the 1990s when Western countries, including the United States, refused to share advanced cryogenic technology. Rather than abandoning its ambitions, ISRO developed the technology indigenously through years of research, testing, redesign and repeated trials. That technological journey has now become one of the strongest symbols of India's growing self-reliance in space.

EOS-05: A New Eye Over India

The EOS-05 satellite is designed to significantly strengthen India's Earth-observation capabilities. Positioned around 36,000 km above Earth, the satellite will provide advanced observations useful for monitoring cyclones, floods, forest fires, weather patterns and climate-related changes. Unlike conventional low-Earth-orbit satellites that pass over a region at intervals, a satellite operating from geosynchronous orbit can maintain continuous observation of a broad area. Its advanced imaging capability, including visible, infrared, multispectral and hyperspectral bands, is expected to provide valuable data for disaster management, weather forecasting, environmental monitoring and strategic applications.

A Technological and Strategic Achievement

The mission is more than another successful satellite launch. It demonstrates India's growing ability to independently develop launch vehicles, propulsion systems and sophisticated Earth-observation platforms. The success also comes at an important stage as India prepares for increasingly ambitious space missions, including the human spaceflight programme.

For ISRO, the message from the mission is clear: setbacks may slow a journey, but they do not have to determine its destination. The once-temperamental "Naughty Boy" has delivered when India needed it most-and in doing so, has added another powerful chapter to the country's journey towards greater technological self-reliance and global space leadership.

Abhinandan quits IAForce, joins private airline

Jan Jan Vichar
...New Delhi

Group Captain Abhinandan Varthaman, the Indian Air Force fighter pilot who was awarded the Vir Chakra for shooting down a Pakistani F-16 during an aerial combat over the Line of Control in February 2019, has left the Indian Air Force and joined private regional airline Fly91, officials familiar with the development said.

Abhinandan left the IAF on March 31 and subsequently joined Fly91, according to the officials.

His decision marks a major transition for one of India's most recognisable military aviators, whose name became synonymous

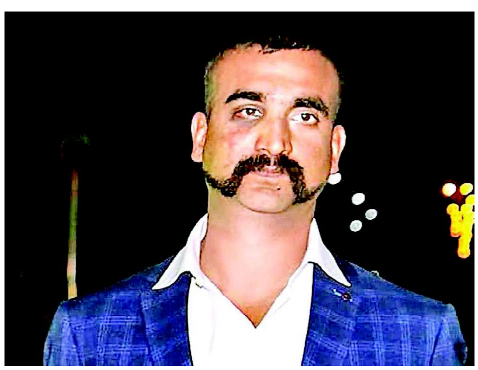

with courage and composure during the tense India-Pakistan confrontation of 2019.

The 2019 Aerial Battle

The dramatic dogfight took place on February 27, 2019, a day after Indian Air Force Mirage-2000 fighter jets carried out strikes on targets in Pakistan's Balakot. The strikes followed the Pulwama terror attack of February 14, in which 40 CRPF personnel were killed. Abhinandan, who was then a Wing Commander, was serving with a MiG-21 Bison squadron at Srinagar and was on operational readiness duty when a large Pakistani fighter aircraft formation was detected approaching the Line of Control. He was scrambled within minutes to intercept the formation. During the ensuing aerial engagement, Abhinandan pursued a retreating Pakistani fighter and shot it down. His own MiG-21 Bison was subsequently hit by a missile, forcing him to eject over territory controlled by Pakistan.

Captured, Then Returned to India

After ejecting, Abhinandan was captured by Pakistani forces. He remained in custody for nearly 60 hours before Pakistan returned him to India on March 1, 2019. His calm demeanour after being captured, including footage of his interrogation that emerged at the time, made him a symbol of military professionalism and national resolve.

Vir Chakra for Exceptional Courage

Abhinandan was later awarded the Vir Chakra, India's third-highest wartime gallantry award, for his actions during the aerial engagement. According to his official citation published in the Gazette of India, he engaged Pakistani aircraft despite their numerical and technological advantage. His aggressive manoeuvres disrupted the opposing formation and contributed to tactical confusion among the enemy aircraft.

EDITORIAL

Meghalaya's Political Crossroads

The political signals emerging from Shillong and Delhi suggest that Meghalaya may be heading towards a significant realignment, even as all major players remain cautious about publicly acknowledging it. Speculation over a possible shift of UDP legislators towards the BJP has raised important questions about the future of regional politics in the state. At present, the NPP-led government under Chief Minister Conrad K. Sangma appears numerically secure. With 33 MLAs in a 60-member Assembly, its survival does not depend on the UDP. Yet, the real issue is not whether the government will fall today, but whether Meghalaya's political landscape is gradually being reshaped ahead of the 2028 Assembly elections. The BJP has every democratic right to expand its political base. However, expansion should come through the mandate of voters, not through the systematic weakening or absorption of regional parties and elected representatives. Meghalaya's regional political forces have historically played an important role in representing the distinct aspirations of the Khasi, Jaintia and Garo Hills.

The growing talk of "political poaching" deserves serious public scrutiny. Frequent switching of elected representatives can undermine voters' trust and reduce democratic mandates to mere arithmetic. Political alliances may change, but democratic principles must remain constant. If Meghalaya is witnessing the beginning of a larger political contest, the people-not backroom negotiations-must ultimately decide its direction. The coming months will reveal whether the present whispers are merely political manoeuvring or the beginning of a major transformation. Either way, Meghalaya deserves transparency, accountability and respect for the people's mandate.

Is India's economy really growing

Jan Jan Vichar

...✍ Pramode Mallik

Days after the Union government claimed to have achieved a GDP growth rate of 7.8% in the first quarter of the current financial year, former Finance Secretary Subhash Chandra Garg contradicted this, claiming that India clocked just 2.6% growth during the period. He questioned the sharp revisions of the earlier estimates and pointed out that the current-price GDP figure had fallen from Rs 86 lakh crore to Rs 80 lakh crore. With this, many questions have surfaced. Has consumption increased or is it recovering? Which sectors have performed well, pushing the growth rate as claimed? How long can this growth rate continue amid supply-chain disruption and increased fuel bills?

According to the data released by the government agencies, most of the growth has come from financial services, IT/professional services, and high-end manufacturing segments like electrical equipment, transport equipment, and electronics. The Press Information Bureau (PIB) report says, "Within the sector, financial, real estate, IT and professional services recorded 12.1% growth." A PIB chart shows that electrical equipment registered a growth of 27%, other transport equipment 19.5%, computer, electronic and optical products 12.5% and machinery and equipment 9.1%. These sectors do not absorb a large number of workers as they are highly automated and machine-based.

Similarly, investment increased by 11.9% in real terms. While credit to industry soared by 20.0%, up

from 6.5% in July 2025, credit to the services sector increased by 22.9%, compared with 10.2% in July 2025. Besides, there has been strong capex by the government and improving private investment sentiment. In nut shell in can be said safely that services, manufacturing and capex are the main pillars of this growth.

On the other hand, growth in the agriculture sector slowed down and fell from 4.4% in FY 2025 to 3.6% in FY 2026. According to the PIB data based on the Periodic Labour Force Survey, about 46.1% of the country's working population are dependent on farming, livestock, forestry, and fishing for employment. Around 70% of rural households in India depend primarily on agriculture for their daily livelihood. A slowing down of the agriculture sector, with this background tell a lot about the growth and expansion of employment opportunities. (GDP Growth FY 2026) What about the job opportunities, the real and grassroots measurement of growth? According to the data released by the Ministry of Statistics and Programme Implementation, the unemployment rate for people aged 15 years and above increased to a four-quarter high of 5.4% in April-June 2026. The unemployment rose in both rural and urban areas. The data suggest that 56.6 crore people aged 15 years and above were employed in the country during April-June. The male-female divide continued as before, with about 40.2 crore males and 16.4 crore females being employed.

The government data also suggest that the unemployment rate rose from 5.0% a quarter ago, the highest since April-June 2025, when it was 5.4%. While the rural unemployment rate rose to 4.8% in April-June from 4.3% a quarter ago, the urban unemployment rate went up to 6.7% from 6.6% in January-March. Inflation rates too do not paint a rosy picture. The Consumer Price Index (CPI) hovered at 3.93% across the first quarter (April–June) of FY 2026-27. It worked as follows:

April 2026: 3.48%
May 2026: 3.93%
June 2026: 4.38%

However, inflation remained within the Reserve Bank of India (RBI)'s band. (India GDP Growth Rate: AI-generated Infographic)

Former Finance Secretary Subhash Chandra Garg appears to be right when he says that the current-price GDP for 2023-24 has been revised upward by around Rs 6-6.5 lakh crore in the latest revision. He also points out that much of the increase in employment is concentrated in unpaid work in family enterprises and agriculture, which does not represent quality and well-paid jobs. Analysts believe that it will be difficult to maintain this growth rate in the time to come due to supply chain disruptions and increased fuel prices. As India buys more than 85% of its fuel needs and about 40% of that flows through the Strait of Hormuz, the energy bills are most likely to go further north. This can increase the input cost and further squeeze the profit margins in transport, logistics, and some manufacturing sectors, which may delay private capex and hiring. However, the large forex reserves coupled with better current-account management can help absorb some pressure. The service sector is likely to remain strong; the government is most likely to increase capex; there may be credit growth in industries and services. These may absorb the oil shock to some extent, but they are unlikely to boost economic activity in the near future.

Jan Jan Vichar
The Student's Corner
Board Exam Focus

CBSE :: Class X :: Hindi Course-B

पदबंध

पदबंध क्या है ?

जब एक से अधिक शब्द मिलकर वाक्य में किसी एक पद का काम करें, तो उसे पदबंध कहते हैं।

उदाहरण :-

लाल कमीज पहनने वाला लड़का मेरा मित्र है।

यहाँ **'लाल कमीज पहनने वाला लड़का'** कई शब्दों का समूह है, लेकिन पूरे वाक्य में यह एक संज्ञा की तरह काम कर रहा है। इसलिए यह **संज्ञा पदबंध** है।

पदबंध के पाँच प्रकार

सीबीएसई कक्षा 10 में मुख्यत: ये 5 प्रकार पढ़ने हैं-

1. **संज्ञा पदबंध**
2. **सर्वनाम पदबंध**
3. **विशेषण पदबंध**
4. **क्रिया पदबंध**
5. **क्रियाविशेषण पदबंध**

आइए एक-एक करके समझें।

संज्ञा पदबंध : जब शब्दों का समूह संज्ञा का काम करे, तो उसे संज्ञा पदबंध कहते हैं।

उदाहरण- लाल कमीज पहनने वाला लड़का मेरा मित्र है।

प्रश्न करें-मेरा मित्र कौन है ?

उत्तर-लाल कमीज पहनने वाला लड़का

यह पूरे वाक्य में एक व्यक्ति/संज्ञा का काम कर रहा है। इसलिए यह संज्ञा पदबंध है।

और उदाहरण-

बहुत मेहनत करने वाला विद्यार्थी प्रथम आया।
पेड़ के नीचे बैठा हुआ आदमी मेरा पिता है।
दिल्ली में रहने वाली मेरी बहन डॉक्टर है।

पहचान- यदि पदबंध कौन ? क्या ? किसने ? आदि का उत्तर दे रहा है, तो अक्सर वह संज्ञा पदबंध होगा।

सर्वनाम पदबंध : जब शब्दों का समूह सर्वनाम का काम करे, तो उसे सर्वनाम पदबंध कहते हैं।

उदाहरण-

हम दोनों आज बाजार जाएँगे।

यहाँ **'हम दोनों'** सर्वनाम का काम कर रहा है।

यह सर्वनाम पदबंध है।

अन्य उदाहरण-

तुम में से कोई वहाँ जाएगा।
हममें से कुछ लोग खेल रहे हैं।
आपके मित्रों में से कोई मेरी सहायता करेगा।

पहचान- यदि पदबंध किसी नाम के स्थान पर आ रहा है, तो वह सर्वनाम पदबंध हो सकता है।

विशेषण पदबंध : जब शब्दों का समूह किसी संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता बताए, तो वह विशेषण पदबंध कहलाता है।

उदाहरण- राम बहुत मेहनती और ईमानदार लड़का है।

प्रश्न करें-राम कैसा लड़का है ?

उत्तर-बहुत मेहनती और ईमानदार

यह लड़के की विशेषता बता रहा है। इसलिए यह **विशेषण पदबंध** है।

अन्य उदाहरण -

वह बहुत सुंदर लड़की है।
मेहनत करने वाला विद्यार्थी सफल हुआ।
यह सबसे अधिक बुद्धिमान छात्र है।

पहचान- कैसा ? कैसी ? कैसे ? कितना ? कितनी ? कितने ?

इन प्रश्नों का उत्तर देने वाला पदबंध अक्सर **विशेषण पदबंध** होता है।

क्रिया पदबंध : जब एक से अधिक शब्द मिलकर क्रिया का काम करें, तो उसे क्रिया पदबंध कहते हैं।

उदाहरण-

राम खाना खा रहा है।

यहाँ **'खा रहा है'** मिलकर क्रिया का काम कर रहा है।

यह क्रिया पदबंध है।

अन्य उदाहरण-

सीता स्कूल जा रही है।
बच्चे मैदान में खेल रहे थे।
मैं कल दिल्ली जा चुका हूँ।
वह कहानी पढ़ रहा था।

पहचान- वाक्य में देखें-क्या कर रहा है ? क्या हुआ ? क्या करेगा ?

जो शब्द-समूह इसका उत्तर दे, वह क्रिया पदबंध है।

क्रियाविशेषण पदबंध : जब शब्दों का समूह क्रिया की विशेषता बताए, तो वह क्रियाविशेषण पदबंध कहलाता है।

उदाहरण-

वह बहुत तेजी से दौड़ा।

प्रश्न करें-वह कैसे दौड़ा ?

उत्तर-बहुत तेज़ी से

यह क्रिया **'दौड़ा'** की विशेषता बता रहा है। इसलिए यह क्रियाविशेषण पदबंध है।

अन्य उदाहरण-

वह धीरे-धीरे चला।
बच्चे सुबह जल्दी उठे।
वह बहुत ध्यान से पढ़ता है।
मैं कल शाम को आऊँगा।

पहचान- कैसे ? कब ? कहाँ ? कितना ? किस प्रकार ?

इन प्रश्नों का उत्तर देने वाला पदबंध प्राय: **क्रियाविशेषण पदबंध** होता है।

सीबीएसई के 2026-27 आधिकारिक पाठ्यक्रम को ध्यान में रखकर कुछ प्रश्न अभ्यास हेतु दिए जा रहे हैं। पाठ्यक्रम में पदबंध से 4 अंक निर्धारित हैं-5 प्रश्नों में से 4 करने होते हैं।

क- रेखांकित पदबंध का प्रकार बताइए-

1. <u>बहुत मेहनत करने वाला विद्यार्थी</u> परीक्षा में प्रथम आया।
2. <u>हममें से कुछ</u> प्रतियोगिता में भाग लेंगे।
3. वह <u>बहुत ध्यानपूर्वक</u> अपने शिक्षक की बात सुन रहा था।
4. सीमा <u>अपना कार्य</u> पूरा कर चुकी है।
5. रवि <u>बहुत बुद्धिमान और परिश्रमी</u> छात्र है।

ख- निम्नलिखित वाक्य में संज्ञा पदबंध पहचानकर लिखिए—

'गाँव के पास रहने वाला किसान प्रतिदिन खेत में काम करता है।'

ग- निम्न वाक्य में सर्वनाम पदबंध पहचानिए—

'आप में से कोई भी इस समस्या का समाधान कर सकता है।'

घ- निम्न वाक्य में विशेषण पदबंध पहचानिए—

'यह अत्यंत सुंदर और आकर्षक प्राकृतिक दृश्य है।'

ङ- निम्नलिखित वाक्यों में क्रियाविशेषण पदबंध पहचानकर लिखिए—

'सैनिकों ने अत्यंत साहस के साथ शत्रुओं का सामना किया।'

च- निम्नलिखित वाक्य में क्रिया पदबंध पहचानकर लिखिए—

'बच्चे मैदान में खेलते चले जा रहे थे।'

छ- निम्नलिखित वाक्यों में प्रयुक्त पदबंध का प्रकार बताइए—

1. 'देश के लिए अपना जीवन बलिदान करने वाले सैनिक सदैव सम्मान के योग्य होते हैं।'
2. 'बहुत देर तक प्रतीक्षा करने वाला व्यक्ति अंतत: वहाँ से चला गया।'
3. 'उन दोनों में से एक मेरा पुराना मित्र है।'
4. 'सीमा अपना काम पूरा कर चुकी है।'

उत्तर : क) 1.संज्ञा पदबंध 2. सर्वनाम पदबंध
3. क्रियाविशेषण पदबंध 4. क्रिया पदबंध
5. विशेषण पदबंध ख- गाँव के पास रहने वाला किसान ग- आप में से कोई भी
घ- अत्यंत सुंदर और आकर्षक ङ- अत्यंत साहस के साथ च- खेलते चले जा रहे थे
छ - 1. संज्ञा पदबंध 2. संज्ञा पदबंध
3. सर्वनाम पदबंध 4. क्रिया पदबंध

The Hands That Shape Tomorrow

Every year, on September 5, classrooms across India come alive with greetings, flowers, cultural programmes and words of gratitude for teachers. Yet, beyond these celebrations lies a deeper truth: a teacher's influence often begins in a classroom but continues throughout a student's life.

A good teacher does far more than complete a syllabus. They teach children to ask questions, face failure, respect others and, above all, believe in themselves. Years after leaving school, students may forget many textbook lessons, but they rarely forget the teacher who encouraged them when they needed it most.

For many, the memory of a favourite teacher is not linked to a particular chapter. It may be a few encouraging words, a patient explanation after repeated mistakes, or a simple gesture that made a struggling student feel capable. Sometimes, a single sentence from a teacher can remain in a person's heart for decades.

Dr. S. Radhakrishnan: The Teacher Who Became a President

Every year on September 5, India celebrates Teacher's Day in honour of Dr. Sarvepalli Radhakrishnan, one of the country's greatest philosophers, teachers and statesmen. His birthday is a reminder of the lasting influence a teacher can have on an individual and on society.

Born on September 5, 1888, in Tiruttani, Radhakrishnan rose from a modest background to become a distinguished academic, philosopher, India's first Vice President and the country's second President. Yet, despite occupying the highest constitutional offices, he remained deeply attached to his identity as a teacher.

The tradition of celebrating September 5 as Teacher's Day has a meaningful origin. When his students and admirers wished to celebrate his birthday, Radhakrishnan suggested that the day should instead be dedicated to teachers. His suggestion turned a personal occasion into a national celebration of the teaching profession.

Radhakrishnan believed that education should develop not only knowledge but also character, wisdom and moral responsibility. His ideas remain relevant in an age when technology provides information instantly but cannot replace human guidance, compassion and wisdom.

His remarkable journey (from professor to President) demonstrates the dignity and power of education. His life reminds us that teaching is not simply a profession; it is a responsibility to shape minds and build character.

On this Teacher's Day, we remember Dr. Radhakrishnan and millions of teachers who continue his legacy. A great teacher may influence a student for a few years, but the lessons they impart can shape an entire lifetime.

More Than a Profession

Teaching is not merely a profession; at its best, it is a responsibility to shape minds and character. Teachers influence how young people understand society, relationships, responsibility and their own potential.

In an age of smartphones, artificial intelligence and unlimited information, the role of teachers has become even more important. Information is available everywhere. Wisdom is not.

A student can find an answer online within seconds, but a teacher helps determine whether that answer is correct, meaningful and useful. Technology can provide information; a teacher provides context, encouragement and human connection.

The Teacher Who Notices

Sometimes a teacher's greatest contribution never appears on a report card. It is noticing the child who has stopped raising a hand. It is recognising that poor marks may reflect a lack of confidence rather than a lack of ability. It is encouraging the student who believes success belongs only to others.

Behind countless successful doctors, engineers, artists, scientists, entrepreneurs, soldiers and public servants, there is often a teacher who saw potential before anyone else did.

Teaching in Changing Times

Today's teachers face challenges unimaginable to earlier generations. Social media, misinformation, rapidly changing technology and shorter attention spans have transformed the classroom. Yet the essential purpose remains unchanged: to help young people become thoughtful, capable and responsible human beings.

The classroom of tomorrow may be powered by artificial intelligence and digital tools, but no technology can completely replace the patience of a teacher saying, "Try once more. You can do it."

The Lessons That Stay

Teacher's Day should be more than a celebration. It should remind society to value education, support teachers and give them the dignity and resources they deserve.

Printed & Published by Purvanchal Prints, GMCH Road, Harbala Market, Bhangagarh, Guwahati-781005 Contact: 69001 26012
Email : Official.janjanvichar@gmail.com,Website : www.janjanvichar.in ● Executive Editor : Subhash Kumar Choudhary ● Editor : Dhaneshwar Choudhary